"हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर बहुकारकीय प्रभाव का एक अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से
मनोविज्ञान विषय में
पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध निदेशक
डा० सतीश चन्द्र शर्मा
रीडर एवं अध्यक्ष—मनोविज्ञान विभाग
गाँधी महाविद्यालय, उरई
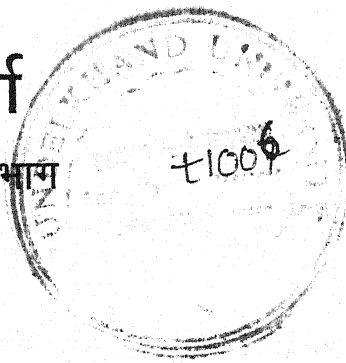
शोधकर्ता
दिनेश कुमार मिश्र
मनोवैज्ञानिक
राजकीय जुबिली इ० कालेज,
लखनऊ
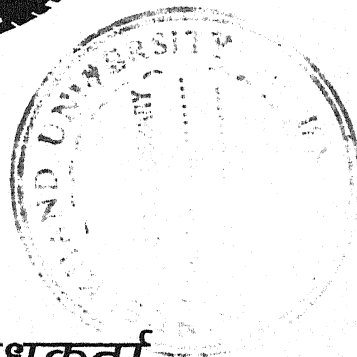
पिता जी *श्री रामगोपाल मिश्र*

एवं
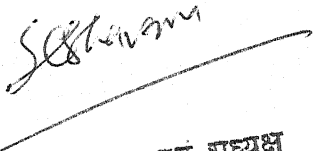
माता जी *श्रीमती विद्या मिश्रा*
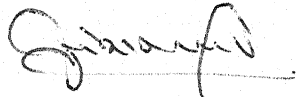
को

श्रद्धा पूर्वक समर्पित

घोषणा पत्र

मैं दिनेश कुमार मिश्र घोषणा करता हूँ कि पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत यह शोध प्रबन्ध जिसका शीर्षक–"हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर बहुकारकीय प्रभाव का एक अध्ययन" है। मेरे स्वयं के प्रयासों का परिणाम है। यह एक मौलिक प्रस्तुति है, जो सामग्री जिन स्त्रोतों से प्राप्त की गई है उसका उल्लेख उचित स्थान पर कर दिया गया है। मैंने निर्देशन प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने शोध परिवेक्षक के साथ कम से कम दो सौ दिन व्यतीत किये हैं। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध भाषा के दृष्टिकोंण से और साथ ही साथ विषय--वस्तु के प्रस्तुतीकरण के सन्दर्भ में भी सन्तोषप्रद है।

रीडर एवं अध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग
गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई

(दिनेश कुमार मिश्र)
"मनोवैज्ञानिक"
राजकीय जुबिली इ०का०
लखनऊ

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री दिनेश कुमार मिश्र, मनोवैज्ञानिक–राजकीय जुबिली इ०का०, लखनऊ के पीएच०डी० उपाधि हेतु शोध शीर्षक– ''हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर बहुकारकीय प्रभाव का एक अध्ययन'' के दौरान निरन्तर मेरे सम्पर्क में रहे, और मेरे द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन किया है। मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि इनका यह शोध कार्य मौलिक, उपयोगी तथा विश्वविद्यालय परिनियमावली द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप है।

शोध निर्देशक

SCSharma

डा० सतीश चन्द्र शर्मा
रीडर एवं अध्यक्ष–मनोविज्ञान विभाग
गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई

रीडर एवं अध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग
गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई

आभार

मैं अपने शोध निर्देशक गाँधी महाविद्यालय में मनोविज्ञान के रीडर एवं अध्यक्ष – डा0 सतीश चन्द्र शर्मा एम.ए.,पीएच.डी. के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने उत्साह वृद्धि तथा उपस्मारक आदि सन्दर्भ ग्रन्थ संकलित करवाने के अतिरिक्त इस शोधकार्य के दौरान समय और सहयोग देने में किसी प्रकार की कृपणता नहीं की है ।

इस शोध कार्य की प्रेरणा देने वाले युगऋषि पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य अपने बाबा जी पं. बृजभूषण शास्त्री को सश्रद स्मरण करता हूँ ।

डा0 तारेश भाटिया, रीडर मनोविज्ञान विभाग डी.वी. डिग्री कालेज, उरई का मैं विशेष कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस अनुसन्धान कार्य में मेरा विशेष सहयोग किया है । डा. प्रणव पाड्या, निदेशक– ब्रम्हवर्चस शोध संस्थान, शान्तिकुँञ्ज, हरिद्वार एवं प्रोफेसर अरूण कुमार श्रीवास्तव विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान तथा डा. आनन्द खरे विभागाध्यक्ष समाजविज्ञान डी.वी. डिग्री कालेज, उरई का भी विशेष आभारी हूं जिन्होंने समय–समय पर बहुमूल्य सुझाव दिये हैं ।

मैं डा. यशबीर सिंह रीडर एवं अध्यक्ष – मनोविज्ञान विभाग, सेन्ट जोन्स कालेज, आगरा का आभारी हूँ जिनसे मुझे विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है ।

इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ राठ के संचालक – देवकीनन्दन बुधौलिया, मेजर चन्द्रशेखर मिश्र जो मेरे ससुर भी हैं, लक्ष्मण लाल त्रिपाठी, डा. महेन्द्र पाठक तथा गाँधी राष्ट्रीय विद्यालय, राठ के प्रबन्धक डा. रवीन्द्र कुमार मिश्र एवं स्वतन्त्र प्रकाश मिश्र प्रवक्ता – अंग्रेजी का स्मरण करना स्वाभाविक है जिन्होंने इस शोध कार्य में मेरा निरन्तर उत्साहवर्धन किया है ।

मैं अपनी पत्नी श्रीमती सुनीता मिश्रा एम.ए.(मनोविज्ञान) एम.एड. एवं पुत्री शिखा मिश्रा के स्वाभाविक सुलभ सहयोग को याद करके क्रमशः प्रेम और वात्सल्य भाव - धारा से अभिभूत हूँ ।

सुन्दर आकर्षक छपाई के लिये मैं जितेन्द्र कुमार निगम, केसरवानी कम्प्यूटर्स अमीनाबाद का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था ।

(दिनेश कुमार मिश्र)

" मनोवैज्ञानिक "
राजकीय जुबली इण्टर कालेज,
लखनऊ

प्राक्कथन

धर्म का आधार मानवीय हृदय एवं भावना है धर्म में उपासक ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है, वह ईश्वर को विभिन्न गुणों से विभूषित करता है । तथा ईश्वर के प्रति अपनी निर्भरता, आत्म समर्पण आदि भावनाओं का प्रदर्शन करते हुये अपनी क्रियाओं द्वारा धार्मिक अनुभूतियों का प्रकाशन करता है ।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की धर्म के प्रति आस्था होती है अथवा अनास्था भी हो सकती है, जिसे हम धार्मिक अभिवृत्ति कहते हैं । भारतीय समाज में हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदाय धार्मिक अभिवृत्ति रखते हैं । मनुष्य की धार्मिक अभिवृत्ति पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान में किया गया है ।

धार्मिक अभिवृत्ति को अन्धविश्वास (Superstition) प्रभावित करता है अथवा नहीं ? यह जानना भी प्रस्तुत अनुसन्धान का एक अन्य उद्देश्य है । विश्वास जहाँ एक शक्ति है, मनुष्य को ऊँचा उठाती है, वहीं अन्धविश्वास उस शक्ति का एक ऐसा विकृत रूप है जो उसे पतन के गर्त में गिराता है । अन्धविश्वास की बीमारी एक ऐसी घृणित बीमारी है जो शरीर पर तो अपना प्रभाव डालती ही है, साथ ही मन तथा बुद्धि पर भी अपना प्रभाव डालकर नष्ट कर देती है । हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास का प्रभाव किस रूप में पड़ता है, इस तथ्य का विश्लेषण प्रस्तुत अनुसन्धान में किया गया है ।

व्यक्ति का शैक्षिक व सामाजिक-आर्थिक स्तर भी उसकी धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित कर सकता है । समाज में ऐसे व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति अलग प्रकार की हो सकती है, जिनका शैक्षिक तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च हो और इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर रखने वाले व्यक्तियों की अभिवृत्ति - भिन्न प्रकार की हो सकती है । प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत धार्मिक अभिवृत्ति पर शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना है ।

पुरूष अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं अथवा महिलायें अधिक धार्मिक प्रवृत्ति की होती हैं, धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्वपूर्ण उद्देश्य है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर परिवेश का भी प्रभाव पड़ सकता है शहरी और ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति पर परिवेशगत प्रभाव का अध्ययन करना भी प्रस्तुत अनुसन्धान का एक उद्देश्य है ।

प्रस्तुत अनुसन्धान के लिये जनपद – गोरखपुर का चयन किया है, जो शहरी और ग्रामीण परिवेश से युक्त एक अच्छा शोध – क्षेत्र महसूस हुआ है । हिन्दू और मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्तियों एवं अन्धविश्वासों पर मनोवैज्ञानिक अध्ययन बहुत कम हैं । अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्ष समाज मनोवैज्ञानिकों के लिये अधिक उपयोगी होंगे ।
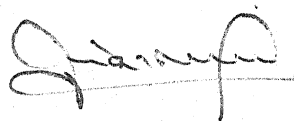
" हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर बहुकारकीय प्रभाव का एक अध्ययन " विषय पर किये गये अनुसन्धान के प्रथम अध्याय में शोध समस्या से सम्बन्धित विभिन्न परिवर्तियों का वर्णन, तथा शोध कार्य का प्रारूप प्रस्तुत किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में सम्बन्धित अनुसन्धानों का विवरण उल्लिखित हैं ।

तृतीय अध्याय अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प से सम्बन्धित है। इसमें प्रतिदर्श, मनोवैज्ञानिक परीक्षण और प्रशासन प्रक्रिया का वर्णन किया गया है ।

अध्याय चतुर्थ में विभिन्न सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण और उनकी व्याख्या की गई है । साथ ही प्राप्त निष्कर्ष और भावी शोध – कार्य हेतु सुझाव तथा अनुसन्धान की परिसीमाओं का वर्णन भी इसी अध्याय में किया गया है ।

अध्याय पंचम में सम्पूर्ण शोध – कार्य का वर्णन संक्षिप्त रूप में किया गया है ।

(दिनेश कुमार मिश्र)

विषय अनुक्रम

			पेज
प्रथम अध्याय	–	प्रस्तावना	1–42
		i. प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या का चयन	3
		ii. सम्बन्धित परिवर्तियों का विवरण	6
		धर्म	6
		अन्धविश्वास	23
		व्यक्तित्व	27
		सामाजिक–आर्थिक स्थिति	34
		iii. प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य	34
		iv. प्रस्तुत अनुसन्धान की उपकल्पना	38
		v. प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्व	41
द्वितीय अध्याय	–	सम्बन्धित अनुसन्धानों का इतिहास	43–51
		i. हिन्दू तथा मुस्लिम सम्प्रदाय की धार्मिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित अनुसन्धान	44
		ii. धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग के प्रभाव से सम्बन्धित अनुसन्धान	46
		iii. धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन	47
		iv. धार्मिक अभिवृत्ति तथा व्यक्तित्व	48
		v. धार्मिक अभिवृत्ति पर ग्रामीण व शहरी प्रभाव	49
		vi. धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास का प्रभाव	50
तृतीय अध्याय	–	अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प	52–67
		i. जनसंख्या	52
		ii. प्रतिदर्श	52
		iii. अनुसन्धान अभिकल्प	53
		iv. प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विवरण	53

पेज

धार्मिकता अभिवृत्ति मापनी 53

अन्धविश्वास मापनी 55

अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी परीक्षण 58

सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी 59

v. प्रशासन प्रक्रिया 61

vi. प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ 62

चतुर्थ अध्याय – प्रदत्त–विश्लेषण तथा विवेचन 68–151

i. भाग–अ– 68

हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक–अभिवृत्ति, व्यक्तित्व प्रकार, अन्धविश्वास, सामाजिक–आर्थिक स्तर, लिंग तथा आवासीय क्षेत्र (ग्रामीण–शहरी) के संदर्भ में सार्थक अन्तर का अध्ययन, विश्लेषण तथा विवेचन ।

ii. भाग–ब– 101

धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम), व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी), अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न), सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न), लिंग (पुरूष व महिला), आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के प्रभाव का अध्ययन तथा प्रदत्त–विश्लेषण व विवेचन ।

iii. निष्कर्ष 150

iv. आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव 151

v. प्रस्तुत अनुसन्धान की परिसीमायें 151

		पेज
पंचम अध्याय –	संक्षिप्तीकरण	152-177
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	i-ix
	परिशिष्ट–अ–मूल प्राप्तांक	i-xxiv
	i. हिन्दू शहरी पुरूषों की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक	i-iii
	ii. हिन्दू शहरी महिलाओं की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक	iv-vi
	iii. हिन्दू ग्रामीण पुरूषों की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक	vii-ix
	iv. हिन्दू ग्रामीण महिलाओं की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक, स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक	x-xii
	v. मुस्लिम शहरी पुरूषों की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक	xiii-xv
	vi. मुस्लिम शहरी महिलाओं की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक	xvi-xviii
	vii. मुस्लिम ग्रामीण पुरूषों की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक	xix-xxi
	viii. मुस्लिम ग्रामीण महिलाओं की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक	xxii-xxiv

	पेज
परिशिष्ट–ब– सम्बन्धित प्रयुक्त परीक्षण	i-xxiv
i. धार्मिकता अभिवृत्ति मापनी परीक्षण	i-iv
ii. अन्धविश्वास मापनी	v-xii
iii. अन्तर्मुखी बहिर्मुखी परीक्षण	xiii-xvi.
iv. सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी	xvii-xxiv.

*****

तालिका सूची

		पेज
1–	हिन्दू व मुस्लिम व्यक्तियों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक–अनुपात ।	69
2–	अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तियों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात ।	71
3–	हिन्दू अन्तर्मुखी तथा हिन्दू बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात।	73
4–	अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक–अनुपात ।	74
5–	हिन्दू अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात ।	75
6–	बहिर्मुखी हिन्दुओं एवं मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं "टी" मूल्य ।	77
7–	हिन्दू तथा मुस्लिम सम्प्रदाय के अन्ध–विश्वास प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात ।	78
8–	उच्च व निम्न अन्ध–विश्वास ग्रस्त हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात।	79
9–	उच्च व निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात ।	80
10–	उच्च अन्धविश्वासी हिन्दुओं एवं मुस्लिम की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात ।	81
11–	निम्न अन्धविश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात ।	82
12–	उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के समूहों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना ।	83
13–	उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात।	85

पेज

14– उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के मुस्लिमों की धार्मिक – अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात। 86

15– उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दुओं व मुस्लिमों की धार्मिक – अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात। 87

16– निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दुओं व मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व क्रान्तिक अनुपात। 88

17– पुरूष तथा स्त्रियों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक – विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात । 89

18– हिन्दू पुरूष तथा महिलाओं की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की गणना । 91

19– मुस्लिम पुरूष तथा महिलाओं की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात । 92

20– हिन्दू एवं मुस्लिम पुरूषों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात । 93

21– हिन्दू तथा मुस्लिम महिलाओं के मध्य धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात । 94

22– शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात । 95

23– शहरी तथा ग्रामीण हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात । 97

24– शहरी तथा ग्रामीण मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात । 98

25– शहरी हिन्दू तथा मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात । 99

26– ग्रामीण हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात । 100

27–	हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक–विचलन ।	103
28–	धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) के प्रभाव का प्रसरण – विश्लेषण (2×2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश ।	105
29–	हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा उच्च व निम्न अन्धविश्वास की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन ।	106
30–	धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय(हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश ।	108
31–	हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन।	110
32–	धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश ।	112
33–	हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा लिंग (पुरूष व महिला) की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन ।	113
34–	धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश ।	115
35–	हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन ।	117
36–	धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहर) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण, परिणाम सारांश ।	119
37–	अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन ।	120

पेज

38– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश। 122

39– अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन। 123

40– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश। 125

41– अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा पुरूषों व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन। 126

42– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश । 128

43– अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन। 129

44– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास–क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश। 131

45– उच्च अन्धविश्वास व निम्न अन्धविश्वास तथा उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन । 132

46– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश। 134

47– उच्च व निम्न अन्धविश्वास– पुरूषों व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन । 135

48– उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर तथा लिंग (पुरूष व महिला) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश । 137

पेज

49– उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर तथा ग्रामीण व शहरी आवास क्षेत्र की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन। 138

50– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण, परिणाम सारांश। 140

51– उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा लिंग (पुरूष व महिला) की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन । 141

52– धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश । 143

53– उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन। 144

54– धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश । 146

55– लिंग – (पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र ग्रामीण व शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन। 147

56– धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश । 149

*****

आलेखीय बार चित्र सूची

		पेज
1–	हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय की धार्मिक अभिवृत्ति ।	70
2–	अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार की धार्मिक अभिवृत्ति ।	72
3–	उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति ।	84
4–	पुरूषों व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति ।	90
5–	ग्रामीण व शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति ।	96
6–	धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) का प्रभाव ।	104
7–	धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव ।	107
8–	धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव ।	111
9–	धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा लिंग (पुरूष व महिला) का प्रभाव ।	114
10–	धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव ।	118
11–	धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव ।	121
12–	धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव ।	124
13–	धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का प्रभाव ।	127
14–	धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव ।	130
15–	धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव ।	133

पेज

16— धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का प्रभाव । 136

17— धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव । 139

18— धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का प्रभाव । 142

19— धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव । 145

20— धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव । 148

*****

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

भूमिका–

वर्तमान युग विज्ञान का युग है । विज्ञान ने न केवल मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, बल्कि उसने मनुष्य के संस्कार, आचार–विचार, धारणा और चिन्तन–पद्धति को भी प्रभावित–परिवर्तित किया है । मनोविज्ञान के आधुनिक अनुसन्धानों से स्पष्ट है कि धर्म का आधार मानव–प्रकृति है। धर्म के तत्व मानव–स्वभाव में निहित हैं और इसका कार्य मानव की बौद्धिक और भावात्मक आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करना है। दूसरे शब्दों में धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान आदि की रचना कर मनुष्य ने अपनी बौद्धिक और भावात्मक आवश्यकता की सन्तुष्टि की है ।

स्वभाव से ही जिज्ञासु, मेधावी और समझदार होने के कारण मनुष्य अपने में प्रकृति तथा विश्व के सम्बन्ध में एक दृष्टिकोण निर्मित करने की आवश्यकता अनुभव करता है, ताकि वह विश्व को नियन्त्रित करने वाली शक्ति को समायोजित कर उसे अपने उपयोग में ला सके। इसी प्रकार सामाजिक प्राणी होने के नाते वह नैतिक–विधान और आचार–संहिता की आवश्यकता अनुभव करता है, जिससे जीवन–व्यापार में कोई असुविधा न हो ।

मार्क्स और फ्रायड दोनों ही यह मानते हैं कि धर्म का निकट भविष्य में अन्त हो जायेगा। मार्क्स के अनुसार धर्म अफीम के नशे की तरह है, जिसके प्रभाव में निर्बोध श्रमिक वर्ग अपने अधिकारों के प्रति उदासीन हो जाता है और पूंजीपतियों के वर्ग द्वारा शोषित होता रहता है। चूंकि धर्म वर्ग–व्यवस्था को प्रोत्साहन देता है, इसलिये पूंजीपतियों का वर्ग इसका उपयोग मजदूरों के वर्ग के शोषण के निमित्त करता है। धर्म में विश्वास का कारण हमारी अज्ञानता है। विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के प्रसार से जब यह अज्ञान दूर हो जायेगा, तो धर्म का स्वयं लोप हो जायेगा और एक आदर्श वर्गहीन समाज की रचना होगी। मार्क्स के अनुसार धर्म और विज्ञान में विरोध है। विज्ञान के द्वारा ही मानव प्रगति कर सकता है, सुसंस्कृत बन सकता है । धर्म इस प्रगति में बाधा डालता है, अतः इसका उन्मूलन होना चाहिये।"

वैज्ञानिक शिक्षा की महत्ता फ्रायड भी मानते हैं और उनकी भी धारणा है कि ज्ञान के प्रसार द्वारा ही धर्म का अन्त होगा, किन्तु वे धर्म को मनोवैज्ञानिक समस्या मानते हैं। फ्रायड के अनुसार धर्म एक प्रकार का मानसिक रोग है (Neurosis) ,जिसका कारण सुरक्षाजनित मानव की स्वाभाविक इच्छा है। बाल्यावस्था से ही मानव एक सबल संरक्षण की आवश्यकता अनुभव करता रहा है, जो उसे अज्ञात खतरों से बचाये । बाल्यावस्था में यह सुरक्षा उसे अपने

पिता द्वारा मिलती है। बड़े होने पर भी प्रतिकूल परिस्थितियों एवं विषम प्राकृतिक शक्तियों के भय से वह घिरा रहता है, अतः प्रौढ़ावस्था प्राप्त करने के बाद भी वह किसी-न-किसी रूप में सुरक्षा की आवश्यकता अनुभव करता हैं। यही आवश्यकता उसे धर्म रूपी भ्रमजाल में डाल देती है। फ्रायड इसे मानव की मनोविकृति मानता है। फ्रायड के अनुसार धर्म का मानव-जीवन में वही स्थान है, जो सर्प के जीवन में उसकी केंचुली का होता है । जिस प्रकार एक अवस्था पहुंचने पर साँप केंचुली का परित्याग कर देता है, उसी प्रकार मानव को भी प्रौढ़ावस्था में पहुंचने पर धर्म का त्याग कर देना चाहिये। बौद्धिक विकास होने पर मानव को वस्तुस्थिति का ज्ञान अवश्य हो जाता है, अतः विकास की इस अवस्था पर पहुंचने के बाद मानव-धर्म का परित्याग अवश्य कर देगा - ऐसी भविष्यवाणी की जा सकती है ।

पश्चिम में वैज्ञानिक चिन्तन की जो शुरूआत गैलीलियो और न्यूटन से हुई और जिसे पूर्ण आधुनिकता तक डार्विन, मार्क्स और फ्रायड ने पहुंचाया उसकी चकाचौंध अब धुंधली पड़ने लगी है। आज सारी भौतिक समृद्धि और भौतिक सुविधा के बावजूद व्यक्ति अपने को असहाय, शून्य में तैरता पा रहा है। भौतिक संसाधनों की प्रचुरता ही उनकी सारी समस्याओं का समाधान नहीं। पश्चिम की वैज्ञानिकता का पहला हमला आस्तिकता पर हुआ । वैज्ञानिकों ने ईश्वर को नकार दिया । धर्म को ढोंग कहा गया । नये चिन्तन से तर्क को प्रधानता मिली और आस्था को मूढ़ता का पर्याय माना जाने लगा । जल्दी ही आस्थाहीन भौतिक विकास की विकृतियां सामने आई । भौतिक समृद्धि का सुख शरीर को मिलने लगा, किन्तु मन बेचैन हो गया । निराशा के इस दौर में शरीर-वैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर गया कि क्या ईश्वर के प्रति आस्था, आध्यात्मिक विश्वास, उपासना एवं भक्ति के सहारे मनुष्य अधिक सुखमय जीवन व्यतीत कर सकता है ? 1995 में डाट माउथ-हिचकाक मेडिकल सेंटर अमेरिका द्वारा एक प्रयोग किया गया जिसमें पाया गया कि जिन हृदय रोगियों का आपरेशन किया जाने वाला है वह सफल होगा या नहीं इसका पूर्वानुमान लगाने का सबसे सरल व विश्वसनीय आधार यह है कि जिस रोगी का आपरेशन होने वाला है, वह धार्मिक दृष्टि से आस्थावान है या नहीं । इस केन्द्र में ऐसा प्रयोग 232 हृदय आपरेशनों में किया गया और पाया गया कि आस्थाहीन वर्ग में मृत्यु-दर आस्थावानों की अपेक्षा तीन गुना अधिक रही। इसी प्रकार के अन्य अनुसन्धानों से समान परिणाम प्राप्त हुए। प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत इसी आधार पर धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया ।

<u>प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या का चयन</u>

धर्म मनुष्य की आन्तरिक अनुभूतियों से सम्बन्धित है। धर्म को जटिल मानसिक क्रिया कहा गया है। धर्म के तीन पहलू हैं – ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक । ज्ञानात्मक पहलू का सम्बन्ध विवेक से है जबकि भावनात्मक का भावना से सम्बन्ध है। धर्म का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिये मनोविज्ञान का सहयोग लेना आवश्यक प्रतीत होता है। मनोविज्ञान की सहायता के बिना धर्म के आन्तरिक पहलुओं का अध्ययन असम्भव है ।

धर्म का आधार मानवीय हृदय एवं भावना है । धर्म में उपासक ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है । ईश्वर को वह विभिन्न गुणों से विभूषित करता है । ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, दयालु आदि है । ईश्वर के प्रति उपासक निर्भरता की भावना का भी प्रकाशन करता है। ईश्वर के प्रति वह प्रेम, भय, आत्मसमर्पण आदि भावनाओं का प्रदर्शन करता है। धर्म में उपासक अपनी क्रियाओं द्वारा धार्मिक अनुभूतियों का प्रकाशन करता है ।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की धर्म के प्रति आस्था होती है अथवा अनास्था भी हो सकती है, जिसे हम धार्मिक अभिवृत्ति मानते हैं। मनुष्य की धार्मिक अभिवृत्ति पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है । यदि कोई व्यक्ति धर्म के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति रखता है, तब ऐसी स्थिति में निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कुछ विशेष कारकों के प्रभाव के कारण उसमें नकारात्मक अभिवृत्ति निर्मित हुई है । प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य इन्हीं विशेष कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना है ।

हमारे समाज में हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय के व्यक्ति सामान्य रूप से पाये जाते हैं। दोनों ही समुदाय धार्मिक अभिवृत्ति रखते हैं । क्या दोनों समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर होता है ? इस प्रश्न का उत्तर खोजना प्रस्तुत अनुसन्धान का प्रमुख लक्ष्य है ।

युंग ने दो प्रकार के व्यक्तित्व– अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी बताये हैं । अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का व्यक्ति एकान्तप्रिय, आत्मगत दृष्टिकोण वाले, संकोची तथा व्यवहारकुशल नहीं होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की वाक्–शक्ति कम होती है और आदर्शवादी विचारों से अधिकप्रभावित होते हैं। इसके ठीक विपरीत बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले समाज प्रिय, व्यवहारकुशल, यथार्थवादी तथा वस्तुगत दृष्टिकोण वाले होते हैं । ऐसे व्यक्ति शीघ्र निर्णय को क्रियान्वित करते हैं । वाक्–शक्ति अधिक होती है और संकोची प्रवृति के नहीं होते हैं । इसके अतिरिक्त ऐसे भी

व्यक्ति होते हैं, जिनमें उक्त दोनों ही व्यक्तित्व की विशेषतायें पाई जाती हैं, जिन्हें उभयमुखी कहा जाता है । प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत व्यक्तित्व के प्रकार अर्थात् अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी का धार्मिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना भी है । धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्तर्मुखता अथवा बहिर्मुखता के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य है ।

धार्मिक अभिवृत्ति को अन्धविश्वास (Superstition) प्रभावित करता है अथवा नहीं ? यह जानना भी प्रस्तुत अनुसन्धान का एक अन्य उद्देश्य है। विश्वास जहाँ एक शक्ति है, मनुष्य को ऊँचा उठाती है, वहीं अन्धविश्वास उस शक्ति का एक ऐसा विकृत रूप है जो उसे पतन के गर्त में गिराता है । अन्धविश्वास की बीमारी एक ऐसी घृणित बीमारी है जो शरीर पर तो अपना प्रभाव डालती है, साथ ही मन तथा बुद्धि को भी अपना प्रभाव डालकर नष्ट कर देती है । हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास का प्रभाव किस रूप में पड़ता है, इस तथ्य का विश्लेषण प्रस्तुत अनुसन्धान में किया जाना अपेक्षित है ।

व्यक्ति का शैक्षिक व सामाजिक–आर्थिक स्तर भी उसकी धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित कर सकता है । समाज में ऐसे व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति अलग प्रकार की हो सकती है, जिनका शैक्षिक तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च हो और इसके विपरीत निम्न सामाजिक –आर्थिक स्तर रखने वाले व्यक्तियों की अभिवृत्ति –भिन्न प्रकार की हो सकती है । प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत धार्मिक अभिवृत्ति पर शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना है ।

पुरुष अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं अथवा महिलायें अधिक धार्मिक प्रवृत्ति की होती हैं ? इस प्रश्न का उत्तर खोजना एक विवाद को समाप्त करना होगा । धार्मिक – अभिवृत्ति पर लिंग का क्या प्रभाव पड़ता है ? प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा इस तथ्य का विवेचन करना आवश्यक है । पुरूष तथा महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा दोनों के मध्य सार्थक अन्तर की जांच करना प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

धार्मिक–अभिवृत्ति पर परिवेश का प्रभाव भी पड़ सकता है । उदाहरण के रूप में शहर में रहने वाले व्यक्ति का परिवेश अलग प्रकार का होता है, जबकि ग्रामीण परिवेश भिन्न रूप से व्यक्ति के विचारों को प्रभावित करता है । प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य इस परिवेशगत

प्रभाव का अध्ययन करना भी है । शहरी तथा ग्रामीण लोगों की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना भी आवश्यक है ।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि धार्मिक–अभिवृत्ति पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ सकता है । इन सभी बहुकारकीय प्रभावों का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रस्तुत अनुसन्धान की निम्नलिखित समस्या का चयन किया गया –

" हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर बहुकारकीय प्रभाव का एक अध्ययन "

बहुकारकों के रूप में समुदाय (हिन्दू एवं मुस्लिम), व्यक्तित्व के प्रकार (अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी), अन्धविश्वास, सामाजिक–आर्थिक स्तर, लिंग तथा आवास क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत किया जाना है ।

सम्बन्धित परिवर्तियों का विवरणः

धर्म

धर्म शब्द की व्युत्पत्ति "धि" नामक धातु से हुई है जिसका अर्थ धारण करना अर्थात् जो समाज को धारण करे वह धर्म है। (धियते लोकः अनेन इति धर्मः) धरति धारयति वा लोकम् इति धर्मः । सम्भवतः धर्म की परिभाषा का अर्थ है कि धर्म मनुष्य का वह स्वभाव है जो सम्पूर्ण मानव-समाज को परस्पर संगठित रखता है। इस दृष्टि से धर्म को सामाजिक एकता अथवा संगठन की शक्ति के रूप में देखा जा सकता है। महर्षि कणाद द्वारा रचित वैशेषिक दर्शन के अनुसार "यतोभ्युदयनिः श्रेयसिद्धिः सः धर्मः" अर्थात् धर्म वह है जो मनुष्य की सर्वागीण उन्नति तथा उसके कल्याण में सहायक हो ।

मनु ने धर्म के दस लक्षणों का उल्लेख करते हुए धर्म को परिभाषित किया है- "धृतिः क्षमा दमोअस्तेयम् शौचमिद्रियनिग्रहः धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकम् धर्मलक्षणम्" अर्थात धैर्य, क्षमा, संयम, चौरी न करना, स्वच्छता, सभी इन्द्रियों को वश में रखना, विवेकशीलता, विद्या, सत्य बोलना तथा कभी क्रोध न करना ये धर्म के दस लक्षण हैं ।

धर्म के अंग्रेजी अनुवाद "रिलिजन" के अर्थ का विश्लेषण करते हुए भी धर्म के स्वरूप को समझा जा सकता है। "रिलिजन" शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के "रिलिजेयर" नामक शब्द से हुई है, जिसका अर्थ "बाँधना" । जो मनुष्य तथा ईश्वर में सम्बन्ध स्थापित करता है और मनुष्यों को परस्पर बाँधता है या संगठित रखता है ।

धर्म को परिभाषित करना अत्यन्त कठिन कार्य है। जैसा कि जे0बी0 प्राट (J.B. Pratt) का कहना है - "यह यत्किंचित बेतुका तथ्य प्रतीत होता है कि धर्म नाम के लोक प्रचलित शब्द जो मनुष्य जाति के होठों से बार-बार निकलता है और जिससे मानव-जीवन के सबसे प्रत्यक्ष व्यापार का बोध होता है, फिर भी यह इतना जटिल है कि इसे परिभाषित करना काफी दुष्कर है।" फिर भी धर्म की सही परिभाषा वही हो सकती है जो धर्म के सभी पहलुओं ज्ञान, भावना एवं कर्म को महत्ता प्रदान करे ।

गैलवे (Galloway) के अनुसार, "अपने से परे शक्ति में मनुष्य का वह विश्वास धर्म है, जिसके द्वारा वह अपनी संवेगात्मक आवश्यकताओं की संस्तुष्टि और जीवन की स्थिरता प्राप्त करता है तथा जिसे वह उपासना एवं सेवा के माध्यम से प्रकट करता है।" उक्त परिभाषा में धार्मिक चेतना के विभिन्न अंगों का विवेचन हुआ है। धार्मिक चेतना के ज्ञानात्मक पहलू का विवेचन एक शक्ति में विश्वास करने से स्पष्ट हो जाता है। वह शक्ति मानव से परे

है । संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति होने से धर्म के भावात्मक पहलू का पुष्टिकरण हो जाता है। धर्म के द्वारा व्यक्ति आत्मरक्षा के लिए प्रयत्नशील रहता है। धर्म का यह स्वरूप (Stability of Life) की प्राप्ति के द्वारा स्पष्ट हो जाता है। आवश्यकताओं की पूर्ति कर्म से होने के फलस्वरूप क्रियात्मक पहलू की भी व्याख्या हो जाती है। उपासना और सेवा जैसी क्रियाओं से धर्म के क्रियात्मक पहलू की भी व्याख्या हो जाती है। इस परिभाषा में पराशक्ति का उल्लेख कर जो मानव के परे है गैलवे ने धर्म की सराहनीय व्याख्या की है। परे की भावना सभी धर्मो में किसी न किसी रूप में समाविष्ट है ।

प्रो0 गैलवे के अतिरिक्त प्रो0 फिलन्ट (Flint) ने धर्म की महत्वपूर्ण परिभाषा दी है। यह परिभाषा उन्होंने अपनी पुस्तक 'Theism' में इस प्रकार दी है – "धर्म मनुष्य का अपने से अधिक समर्थ सत्ता या सत्ताओं, जो इन्द्रिय अगोचर है परन्तु उसकी भावनाओं और कर्मो के प्रति उदासीन नहीं है में आस्था से उद्भुत भावनायें एवं क्रियायें हैं ।" इस परिभाषा में धार्मिक चेतना के विभिन्न पहलुओं पर बल दिया गया है। धर्म में मनुष्य ऐसी शक्तिशाली सत्ता में विश्वास करता है जो मानव की अपेक्षा सबल है । यह बात ज्ञानात्मक पक्ष को प्रकट करती है। यह परिभाषा एकेश्वरवादी तथा अनेकेश्वरवादी धर्मो पर समान रूप से लागू होती है। यह परिभाषा धर्म के आन्तरिक तथा बाह्‌ पक्षों का संकेत करती है। सत्ता या सत्ताओं के द्वारा बाह्‌ तत्व का प्रकाशन होता है तथा विश्वास भाव एवं क्रियायें आन्तरिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

धर्म की कोई पूर्णतः निश्चित तथा सर्वमान्य परिभाषा देना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि विभिन्न दार्शनिक भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से इसके स्वरूप की व्याख्या करते रहे हैं। उदाहरणार्थ, कुछ दार्शनिक धर्म के उस पक्ष को सर्वप्रमुख मानकर इसके अर्थ एवं स्वरूप की व्याख्या करते हैं जिसे सैद्धान्तिक या बौद्धिक पक्ष कहा जाता है, जबकि कुछ अन्य दार्शनिकों के मतानुसार धर्म का भावानात्मक पक्ष ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार कुछ दार्शनिक इन दोनों दृष्टिकोणों को अस्वीकार करते हैं तथा धर्म के व्यावहारिक अथवा क्रियात्मक पक्ष को ही प्रमुख मानते हैं, जिसमें आचरण तथा कर्मकांड या धार्मिक अनुष्ठानों को विशेष महत्व दिया जाता है। जेम्स एच0ल्यूबा ने अपनी पुस्तक "ए साइकॉलॉजिकल स्टडी आफ रिलिजन" में विभिन्न दार्शनिकों द्वारा दी गई धर्म की पचास भिन्न-भिन्न परिभाषाओं का उल्लेख किया है। इनमें से प्रत्येक परिभाषा धर्म के किसी एक विशेष अंश या पक्ष को सर्वाधिक महत्व देकर उसके स्वरूप की व्याख्या करती है । ऐसी स्थिति में हमारे लिये धर्म का कोई स्पष्ट और निश्चित अर्थ समझना

बहुत कठिन हो जाता है ।

धर्म की कोई एक निश्चित एवं सर्वमान्य परिभाषा खोजने के स्थान पर डॉ0 वर्मा के अनुसार कुछ ऐसे सामान्य तत्वों को खोजने का प्रयास करना चाहिये जिन्हें धर्म के मूल तत्व कहा जा सकता है और जो किसी न किसी रूप में सभी धर्मो में पाए जाते हैं । धर्म के प्रमुख मूल तत्व इस प्रकार हैं –

1– किसी अलौकिक या अतिमानवीय शक्ति अथवा सत्ता में विश्वास धर्म का आधारभूत अनिवार्य तत्व है ।

2– इस अलौकिक शक्ति या सत्ता की पूजा अथवा उपासना धर्म का दूसरा मूल तत्व है ।

3– उन समस्त व्यक्तियों, स्थानों, पुस्तकों तथा वस्तुओं को अति पवित्र मानना जिनका सम्बन्ध इस अलौकिक शक्ति से है ।

4– मनुष्य के लिये दुःख से मुक्ति का आश्वासन धर्म का चौथा मूल तत्व है ।

उक्त धर्म के मूल तत्व के आधार पर धर्म की अग्रलिखित परिभाषा दी जा सकती है–

" धर्म मानव–जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करने वाली वह व्यापक अभिवृत्ति है जो सर्वाधिक मूल्यवान, पवित्र, सर्वज्ञ तथा शक्तिशाली समझे जाने वाले आदर्श और अलौकिक उपास्य विषय के प्रति अखंड आस्था एवं पूर्ण प्रतिबद्धता के फलस्वरूप उत्पन्न होती है और जो मनुष्य के दैनिक आचरण तथा प्रार्थना, पूजा–पाठ, जप–तप आदि बाह्य कर्मकांड में अभिव्यक्त होती है।"

धर्म की अवस्थायें

प्रोफेसर एटकिन्सन ली(Atkinson Lee) ने धर्म को निम्नलिखित अवस्थायें बताई हैं –

1– प्रारम्भिक धर्म (Primitive Religion)

2– प्राकृतिक धर्म (Naturalistic Regligion)

3– मानवीय धर्म (Humanistic Religion)

4– आध्यात्मिक धर्म (Spiritual Religion)

प्रारम्भिक धर्म असभ्य एवं अशिक्षित जनता के धार्मिक विचारों का सूचक है। प्राकृतिक धर्म में समस्त प्रकृति पूजा का विषय बन जाता है । मानवीय धर्म में मानव को देवता के रूप में चित्रित किया जाता है । मानव की पूजा का अर्थ मानवीय मूल्यों की पूजा है । आध्यात्मिक धर्म धार्मिक अवस्था का अंतिम एवं विकसित रूप है । ईसाई एवं इस्लाम धर्म अध्यात्मवादी धर्म के उदाहरण हैं जो कि एकेश्वरवाद से पूर्ण हैं ।

1- <u>प्रारम्भिक धर्म</u>–प्रारम्भिक धर्म प्राचीन काल के व्यक्तियों के धार्मिक विचारों का स्पष्टीकरण है। प्रारम्भिक धर्म आदिम मनुष्य के धार्मिक व्यवहारों का अध्ययन करता है। प्रारम्भिक धर्म के मुख्य रूप इस प्रकार हैं –

(अ) <u>जीववाद</u>(Animism)

जीववाद का अर्थ है वह विश्वास जिसके आधार पर लोग सभी वस्तुओं में जीव या आत्मा को व्याप्त मानते हैं । जीव के बिना कहीं भी गति या घटना नहीं हो सकती है। जीववाद को अंग्रेजी में 'Animism' कहते हैं, एनिमा का अर्थ है जीवन का श्वास, आत्मा है। टायलर(E.B.Tylor) ने जीववाद सिद्धान्त की स्थापना अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "प्रिमिटिव कलचर" में की है ।

(ब) <u>प्राणवाद</u>(Spiritism)

जीववाद का विकसित रूप प्राणवाद है । प्राणवाद धर्म की एक ऐसी अवस्था है जो सार्वभौम कही जा सकती है । प्रत्येक देश के धर्म के इतिहास में प्राणवाद नामक अवस्था का संकेत मिलता है। यह धर्म आज भी मुख्यतः दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा फयूजियन्स के बीच प्रचलित है। प्राणवाद में भिन्न-भिन्न कोटि के जीवों को माना गया है । कुछ जीव नेक स्वभाव वाले हैं तथा कुछ दुष्ट स्वभाव वाले हैं। प्राणवाद, जीववाद से भिन्न हैं । जीववाद में आत्मा वस्तुओं के साथ बँध जाती है, परन्तु प्राणवाद में आत्मा वस्तुओं से अपना सम्बन्ध विच्छेद करने की क्षमता रखती है ।

(स) <u>फीटिशवाद</u> (Fetishism)

फीटिशवाद एक धार्मिक विश्वास है जिसमें व्यक्ति किसी आत्मा को कुछ वस्तु से बाँधकर उस पर अपना नियन्त्रण रखना चाहता है और उससे अपनी दैनिक

आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है। 'Fetish' शब्द का विकास 'Feitico' से हुआ है, जिसका अर्थ "आकर्षण" होता है। 'Fetish' शब्द का निर्माण लैटिन शब्द 'Factitius' से हुआ है जिसका अर्थ कृत्रिम होता है। ' Fetish ' शब्द को जादू का पर्याय भी मानते हैं । सर्वप्रथम फीटिश को आराधना का विषय पुर्तगाल के नाविकों ने पन्द्रहवीं शताब्दी में माना था । फीटिश की आराधना पश्चिमी अफ्रीका में भी प्रचलित है ।

(द) <u>मानावाद</u> (Manaism)

यह प्रारम्भिक धर्म का ऐसा रूप है, जिसमें माना नामक शक्ति को आराधना का विषय माना जाता है। माना को व्यक्तित्वरहित, अद्भुत तथा विलक्षण माना जाता है। माना भौतिक शक्ति से नितान्त भिन्न एक ऐसी शक्ति है जो सभी प्रकार के शुभ-अशुभ व्यापारों में सक्रिय रहती है और जिस पर अधिकार या नियन्त्रण होने से सर्वाधिक लाभ होता है । माना का प्रकाशन अद्भुत पत्थर के रूप में माना जाता था। यदि कोई राजा माना से युक्त तावीज पहनकर युद्ध में भाग लेता था और विजयी होता था, तो विजय का श्रेय माना को दिया जाता था ।

(च) <u>टोटमवाद</u> (Totemism)

टोटम पशुओं का एक वर्ग है, जिसे पवित्र माना जाता है । पशुओं को प्राचीन काल के लोग अपने पूर्वजों का प्रतीक मानते थे । प्रमुख रूप से भालू, कौवा, सर्प, बगुला, छिपकली, बाघ को टोटम के रूप में माना जाता था। प्राचीन काल के लोगों में ऐसा विश्वास था कि जो खून उनके अन्दर संचालित है वही उन पशुओं में भी संचालित है। टोटम जातियाँ अपने-अपने वर्ग के टोटम पशु की प्राय: रक्षा भी करती हैं।

2- <u>प्राकृतिक धर्म-</u> (Natueralistic Religion)

प्राकृतिक धर्म, प्राकृतिक वस्तुओं की आराधना में विश्वास करता है। यह बात प्राकृतिक धर्म के नाम से स्पष्ट है । इस धर्म में समस्त प्रकृति पूजा का विषय बन जाती है। सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पृथ्वी, जल, प्रकाश इत्यादि विशेष रूप से आराधना के विषय होते हैं। प्राकृतिक वस्तुओं को देखकर मानव श्रद्धा और आदर का भाव व्यक्त करता है। प्राकृतिक धर्म ईश्वर को प्रकृति के रूप में ग्रहण करता हैं । इस धर्म में

सारा विश्व एक नियम के अन्तर्गत संचालित होता है, जिसे प्राकृतिक नियम कहा जाता है। यह नियम अचल एवं अटल है । इस नियम के विरूद्ध एक पत्ता भी हिल–डुल नहीं सकता है ।

3– <u>मानवीय धर्म</u> (Humanistic Religion)

यह धर्म मानव की आराधना में विश्वास करता है। मानव सृष्टि के सभी प्राणियों में अपना एक मूर्धन्य स्थान रखता है। यही हमारी धार्मिक मांग की पूर्ति कर सकता है। हमारी नैतिकता मनुष्य को केन्द्र मानकर दृढ़ होती है । हमारी संस्कृति, धर्म, राजनीति सभी का केन्द्र–बिन्दु एकमात्र मानव ही है । मानवीय धर्म में मानव को ईश्वर का गौरव प्रदान किया जाता है । मनुष्य में करुणा, क्षमा, सहानुभूति और त्याग जैसे गुणों की अभिव्यक्ति हुई है । मनुष्य से बढ़कर कौन ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो प्रेम का पात्र हो ।

मानवीय धर्म के अनुसार मानव बिना मानवेत्तर सत्ता की सहायता से निजी प्रयास से अपना विकास कर सकता है । मानव स्वयं अपना भाग्यविधाता है । यह मानवीय धर्म, नियतिवाद, भाग्यवाद तथा निराशावाद के सिद्धान्त का खण्डन करता है। यह आशावाद से ओतप्रोत है ।

कुछ प्रमुख मानवीय धर्म इस प्रकार है –

(अ) <u>बौद्ध धर्म</u>

बुद्ध ने धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों पर विचार कर सारे संसार को दुःखमय माना । उनके अनुसार जीवन दुःखमय है । यह विश्व दुःख का सागर है। जन्म, रोग, बुढ़ापा, मृत्यु सभी दर्दनाक हैं । सांसारिक वस्तुओं से विरक्त रहना ही सुख का मात्र उपाय है । बुद्ध ने दुःख के बारह कारण बताये हैं तथा इन दुःखों को दूर करने क लिये आठ मार्ग बताये हैं, जिन्हें अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। इन मार्गो

पर चलने से सभी दुःखों का अन्त होता है, जिससे दुःखाभाव की अवस्था आती है। इसी दुखाभाव की अवस्था को निर्वाण की अवस्था कहते हैं । यह अवस्था बिना सुख-दुःख की एक तटस्थ अवस्था होती है ।

(ब) टैगोर का मानवीयवाद

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी पुस्तक "रिलिजियन आफ मैन" में अपने मानवीय धर्म के बारे में लिखा है, "मेरा धर्म मानवीय धर्म है जिसमें ईश्वर की व्याख्या मानवीय रूप में की जाती है।" इनके अनुसार ईश्वर की अभिव्यक्ति मानव में पूर्णरूप से हो पायी है । अतः मानव की पूजा ही ईश्वर की पूजा है । टैगोर के अनुसार ईश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति तारे युक्त स्वर्ग में न होकर मानव आत्मा में होती है ।

(स) हेलेनिज्म (Hellenism)

इस धर्म में "हेलेन" की पूजा ग्रीक लोग किया करते थे । यह मानवीय ईश्वर का प्रतीक था । लोग मानवपूजा इसलिये किया करते थे कि मानव एक विवेकी तथा नैतिक परायण जीव है । हैलेन सभ्यता का प्रतीक माना गया । लोगों की यह धारणा थी कि हैलेन की पूजा से अन्धविश्वास का नाश होता है । उस समय लोग भूत-प्रेत की पूजा करते थे । हेलेनिज्म भूत-प्रेत की पूजा का निषेध करता है ।

(द) प्रत्यक्षवाद (Positivism)

इस धर्म के प्रणेता कामटे(Comte) हैं। प्रत्यक्ष वह है जिसका ज्ञान इन्द्रियों के माध्यम से हो । चूंकि मानवता प्रत्यक्ष होती है, इसलिये कामटे ने इसे प्रत्यक्षवाद कहा है । कामटे नारीत्व की पूजा को मानवीय धर्म का प्रधान अंग मानते हैं।

4- आध्यात्मिक धर्म (Spiritual Religion)

यह धर्म का सर्वाधिक नवीन रूप है । आध्यात्मिक धर्म का विकास 'Spirit' की पूजा से हुआ है । मानव इस विश्व में निवास करने के कारण लौकिक है, जबकि ईश्वर पारलौकिक है। आध्यात्मिक धर्म के विकास का कारण दूसरी दुनियां में विश्वास करना है । आध्यात्मिक धर्म का ईश्वर एक महान जीव है। यह मानव से काफी उत्तम है । मानव-सीमित, अपूर्ण तथा अंशव्यापी है जबकि ईश्वर पूर्ण,

सर्वव्यापी तथा असीमित है । आध्यात्मिक धर्म का ईश्वर प्राकृतिक धर्म के समान कोई प्राकृतिक वस्तु नहीं है । वह प्राकृतिक वस्तुओं से ऊपर है ।

आध्यात्मिक धर्म के प्रमुख रूप इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म तथा जुडाइज्म है। इनका संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है –

(अ) <u>इस्लाम–धर्म–</u>

इस्लाम–धर्म का विकास अरब में हुआ है । इसके प्रणेता मुहम्मद साहब हैं। वे ईश्वर के दूत माने जाते हैं । लोगों का विचार है कि जब विश्व में बुराईयां फैल जाती हैं तब उनका अन्त करने के लिये ईश्वर किसी दूत को भेजता है । मुहम्मद साहब उन्हीं दूतों में से एक हैं । वे घर के गरीब व्यक्ति थे । उनका निवास स्थान अरब था । अपनी ईमानदारी के कारण वे काफी सम्मानित थे । उनके व्यक्तित्व का प्रभाव देख खमीजा नाम की महिला ने उनसे शादी कर ली । वे जंगल में जाया करते थे और फरिश्तें आकर उन्हें कुछ आपतें लिखाया करते थे । इस प्रकार अरब में इस्लाम धर्म का बीजारोपण हुआ और कुरान नामक एक धार्मिक पुस्तक का आविर्भाव हुआ । मुहम्मद साहब ईश्वर नहीं वरन् उसके दूत हैं, इसलिये यह धर्म ईसाई धर्म से भिन्न हैं । ईसाई धर्म में ईसा मसीह को ईश्वर का पुत्र माना जाता है । जिस प्रकार ईसाई धर्म बाइबिल पर आधारित है उसी प्रकार इस्लाम धर्म कुरान पर आंधारित है। इस्लाम धर्म के अनुसार सत्य बोलना, चोरी नहीं करना, हिंसा नहीं करना आवश्यक है। सूद नहीं लेना और न ही देना, मदिरा नहीं पीना, दिन में पांच बार नमाज पढ़ना – यह सब धर्म के विशेष अंग है । खैरात बांटना और रमजान करना प्रत्येक मुसलमान के लिए आवश्यक है तथा एक व्यक्ति को जो आर्थिक दृष्टि से सबल है मक्का जाना अति आवश्यक है । इस्लाम के मानने वाले सामूहिक और व्यक्तिगत प्रार्थना में विश्वास करते हैं । प्रत्येक व्यक्ति के कर्मो का दर्शक खुदा है । मरने के बाद व्यक्ति की आत्मा खत्म नहीं हो जाती बल्कि वह कयामत के दिन के लिए कब्रगाह में प्रतीक्षा करती है । कयामत के दिन कुछ फरिश्तें आते हैं और कर्मो के अनुसार आत्माओं को जन्नत या जहन्नुम में भेजा जाता है ।

(ब) <u>ईसाई–धर्म</u>

ईसाई धर्म हिन्दू धर्म से काफी प्रभावित है । कहा जाता है कि ईसा मसीह

13 वर्ष की अवस्था में भारत आये । यहीं उनका परिचय भारत के ब्राह्मणों से हुआ और तब से वे भारत के धर्म को जानने लगे। फलतः ईसाई धर्म हिन्दू धर्म का एक प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है । कुछ लोग ईसाई धर्म का आधार वेद और उपनिषद मानते हैं । कृष्ण तथा ईसामसीह के जीवन में बहुत समता है । ईसाई धर्म का प्रधान अंग उसकी नैतिकता है । सत्य बोलना, चोरी न करना, बाइबिल के प्रति नतमस्तक होना, ईश्वर की प्रार्थना करना, मानव के प्रति करुणा प्रेम, सहानुभूति आदि दर्शाना–ईसाई धर्म के प्रमुख आचार–विचार हैं । यह धर्म कर्मवाद में विश्वास करता है। इस धर्म में पुनर्जन्म में विश्वास नहीं किया जाता है ।

(द) <u>जुडाइज्म</u> (Judaism)

यह यहूदियों का धर्म है । इस धर्म की उत्पत्ति और विकास इसराइल में हुआ। इसके संस्थापक मासेस थे । मासेस के अनुसार ईश्वर का नाम "जाहवेह" है, जिसका प्रकटीकरण प्रकृति के द्वारा होता है । प्रकृति एक ऐसा चित्रपट है जिस पर ईश्वर अपना नाटक खेलता है । जुडा धर्म के अनुसार ईश्वर महान जीव है । वह दयालु है तथा क्षमा भी करता है । ईश्वर व्यक्तिपूर्ण है । इस धर्म में ईश्वर को प्राकृतिक जीव माना है । इसी कारण इस धर्म को आध्यात्मिक धर्म नहीं मानते हैं । किन्तु इस धर्म के ईश्वर में करुणा पाई जाती है । वह लोगों पर दया रखता है । यह धर्म एकेश्वरवादी है ।

<u>धार्मिक–दर्शन के प्रकार</u>

दार्शनिक दृष्टिकोण से धर्म को निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता है –

1– अनीश्वरवाद

2– सर्वेश्वरवाद

3– द्वैतवाद

4– अनेकेश्वरवाद

5– एकेश्वरवाद

प्रत्येक की व्याख्या इस प्रकार है –

1– <u>अनीश्वरवाद</u> (Atheism)

ईश्वरवाद का निषेध अथवा ईश्वर में अविश्वास ही इस सिद्धांत का आधार

है । अनीश्वरवाद के मूलतः पाँच रूप हैं –

1– <u>सन्देहवादी अनीश्वरवाद</u> (Sceptical Atheism)

इसके आधुनिक प्रतिनिधि डेविड ह्यूम हैं । अनीश्वरवाद का यह वह रूप है जो मानवीय योग्यता को ईश्वरीय ज्ञान के लिए संशयपूर्ण मानता है ।

2– <u>हठवादी</u> (Dogmatic)

ऐस लोग जिन्हें ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं है, परन्तु इसके लिये उनके पास कोई तर्क नहीं है । ये लोग अन्धविश्वासी है । वे अपनी समझ को उचित मानते हैं । डॉ0 हेकर ने इस सिद्धान्त को पुष्ट किया ।

3– <u>अज्ञेयवादी</u> (Agnostic)

ईश्वर के अस्तित्व का निश्चित ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य की बुद्धि के लिये सम्भव नहीं है । अतः ऐसे जीव की सत्ता पर, जो न जाना जाता है और न जाना जा सकताहै, विश्वास करना गलत है ।

4– <u>व्यवहारवादी</u> (Practical)

व्यवहारवादी अनीश्वरवाद का कहना है कि ईश्वर के अभाव में भी जीवन सुखी, सम्पूर्ण रहता है । ईश्वर में विश्वास करना अपेक्षित तब होगा, जब व्यावहारिक जीवन उसके बिना कठिन होता है ।

5– <u>भौतिकवादी</u> (Materialistic)

यह भौतिक तत्व को ईश्वर के स्थान पर प्रधानता देता है। जगत भौतिक तत्व से निर्मित हुआ है । जीवन और चेतना भौतिक तत्व की देन है ।

भारतीय दर्शन मं चार्वाक दर्शन, बुद्ध, जैन, सांख्य, मीमांसा दर्शन अनीश्वरवादी हैं । चार्वाक को छोड़कर सभी परलोक की सत्ता में विश्वास करते हैं तथा नैतिकता को प्रश्रय देते हैं। अतः ये मूलतः अध्यात्मवाद का पोषक है ।

2– <u>सर्वेश्वरवाद</u> (Pantheism)

इसके अनुसार ईश्वर ही एकमात्र परमार्थ सत्ता है । इसके अतिरिक्त किसी

भी सत्ता को परमार्थ नहीं कहा जा सकता। यह ईश्वर स्वतंत्र है, क्योंकि अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिये किसी सत्ता पर आधारित नहीं है । ईश्वर ही सब कुछ है और सब कुछ ईश्वर है । (God is all and all is God)

सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर और विश्व का सम्बन्ध अभिन्न है । न तो ईश्वर को विश्व से अलग किया जा सकता है और न विश्व को ईश्वर से ही । ईश्वर और विश्व दोनों एक दूसरे के लिए आवश्यक है। सर्वेश्वरवाद ईश्वर को व्यक्तित्वरहित मानता है, इसलिये उसमें इच्छा, संकल्प आदि का पूर्ण अभाव है । दया या करूणा की आशा करना अनुचित है ।इसी कारण से ईश्वरवाद से सर्वेश्वरवाद भिन्न हैं। ईश्वरवाद के अनुसार ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है, अर्थात् उसमें इच्छा, संकल्प, दया तथा करूणा विद्यमान है ।

ईश्वर और विश्व के बीच शाश्वत सम्बन्ध माना जाता है । ईश्वर ने संसार की उत्पत्ति किसी काल-विशेष में नहीं की है । दोनों का सम्बन्ध काल निरपेक्ष है । ईश्वर सदा विश्व में व्याप्त है तथा विश्व सर्वदा ईश्वर पर आधारित है । इस प्रकार सर्वेश्वरवाद केवल निमितेश्वरवाद(Deism) से भिन्न है। केवल निमितेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर ने विश्व की उत्पत्ति किसी काल विशेष में की है । अतः यहां ईश्वर और विश्व का सम्बन्ध कालिक माना गया है ।

सर्वेश्वरवाद के अन्तर्गत ईश्वर विश्व का उपादान कारण है । उपादान कारण वह है जो बराबर कार्य में व्याप्त रहता है । जैसे-मिट्टी को घड़े का उपादान कारण कहा जाता है, क्योंकि यह बराबर घड़े में व्याप्त रहती है ।

<u>सर्वेश्वरवाद के प्रकार</u>

सर्वेश्वरवाद चार प्रकार के होते हैं -

(अ) <u>परम्परावादी</u> (Traditional)

स्पिनोजा के सर्वेश्वरवाद को परम्परागत सर्वेश्वरवाद कहा जाता है । स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही एकमात्र सत्ता है । ईश्वर जिसे स्पिनोजा ने द्रव्य कहा है, असीम, स्वतन्त्र, सर्वव्यापक तथा व्यक्तित्व रहित है । ईश्वर के लिये किसी दूसरे पदार्थ की अपेक्षा नहीं है । वह पूर्णतः स्वतंत्र तथा आत्मनिर्भर है ।

(ब) <u>प्रत्ययवादी</u> (Idealistic)

जर्मन दार्शनिक फेकनर के अनुसार जिस प्रकार मानव का शरीर आत्मा से संचालित होता है, उसी प्रकार विश्वरूपी शरीर का संचालन ईश्वररूपी आत्मा से सम्भव है। इस मत को प्रत्ययवादी सर्वेश्वरवाद कहा जाता है ।

(स) <u>विकासात्मक</u> (Evolutionary)

विकासात्मक सर्वेश्वरवाद के अनुसार परम सत्ता में अनेक सम्भावनायें हैं जिन्हें क्रमशः कार्यान्वित किया जाता है । विकास का अर्थ संभाव्य का यथार्थ में रूपान्तरित होना है । विकास के क्रम में सर्वप्रथम भौतिक तत्व का विकास होता है फिर जीवों का विकास होता है । इसके पश्चात चेतन प्राणियों का उद्भव हुआ है । चेतन प्राणियों से आदर्श प्राणियों का विकास होता है ।

(द) <u>भौतिकवादी</u> (Meterialistic)

इस सिद्धान्त ने भौतिक पदार्थो के द्वारा एकरूपता की व्याख्या करनी चाही है। परन्तु सर्वेश्वरवाद का यह मत अनुचित है, क्योंकि भौतिकवाद के विरूद्ध उठने वाली सारी आपत्तियाँ इस मत के विरूद्ध भी उठाई जा सकती हैं, जिनका निराकरण नहीं किया जा सकता है । हम विश्व में जड़ और चेतन दोनों का समावेश पाते हैं। ऐसी अवस्था में अन्तिम सत्ता केवल जड़ को मानकर चेतन की व्याख्या प्रस्तुत करना असंगत सा प्रतीत होता है ।

मैकग्रेगर के अनुसार, "सर्वेश्वरवाद एक धर्म नहीं अपितु ईश्वर सम्बन्धी दार्शनिक सिद्धांत है।"

3– <u>द्वैतवाद</u> (Dualism)

जिस सत्ता में दो मूल तत्वों के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता हो उसे द्वैतवाद कहा जाता है । जड़ और चेतन, साधारणतः ये ही दो तत्व हैं, जिन्हें द्वैतवाद मानता है । द्वैतवाद के समर्थक प्लेटो के अनुसार दो पदार्थ ही मूल तत्व हैं, जिन्हें क्रमशः शुभ प्रत्यय तथा जड़ कहते हैं । शुभ प्रत्यय पूर्णतः स्वतंत्र, सर्वव्यापक तथा अन्य प्रत्ययों का आधार है । उन्होंने शुभ प्रत्यय को ईश्वर कहा है । जड़ निर्गुण तथा सभी भौतिक द्रव्यों का आधार है। अरस्तू के अनुसार मूल तत्व जड़ तथा आकार

है। इन्हीं दोनों के संयोग से विश्व की वस्तुओं की उत्पत्ति होती है ।

भारतीय दर्शन में द्वैतवाद समर्थक सांख्य दर्शन है । इसके अनुसार पुरूष और प्रकृति दो मूल तत्व हैं । पुरूष चेतन है, परन्तु प्रकृति अचेतन, पुरूष निष्क्रिय है, परन्तु प्रकृति सक्रिय है । पुरूष अनेक हैं, परन्तु प्रकृति एक है ।

द्वैतवाद धर्म में दो विरोधी सत्ताओं का अस्तित्व स्वीकार किया जाता है । इस प्रकार द्वैतवाद संघर्ष की ओर ध्यान आकर्षित करता है । दो विरोधी भावनाओं में पारस्परिक संघर्ष के विभिन्न उदाहरण हम प्राचीन काल के इतिहास में पाते हैं और यह बातें पौराणिक युग के उदाहरणों में दृष्टिगत होती है – देव और दानव का संघर्ष, राम और रावण का युद्ध, कृष्ण और कंस का संघर्ष । इसी प्रकार चीन में यंग (Yang) और यिन (Yin) नामक दो विरोधी सत्ताओं में निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। यंग को सक्रिय, गर्म, प्रकाश, पुरूष तथा शुभ रूप में माना जाता है, जबकि यिन को निष्क्रिय, शीतल, अन्धकार, स्त्री तथा अशुभ के रूप में माना जाता है ।

पारसियों में द्वैतवाद धर्म का उदाहरण जोरास्ट्रियन धर्म में मिलता है। इस धर्म के अनुसार अहुरामजदा और अहरिमान दो ईश्वर हैं, जिनमें निरन्तर संघर्ष होता रहता है। अहुरामजदा पूर्णतः शुभ, प्रकाश का प्रतीक है जबकि अहरिमान अशुभ तथा अन्धकार का सूचक है । ईसाई धर्म में भी शैतान और इस्लाम धर्म में भी शैतान की कल्पना की जाती है । यह शैतान बुराइयों का कारण होता है ।

विश्व की अच्छाई का कारण ईश्वर है तथा बुराई का कारण शैतान है। इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर पूर्ण नहीं है । मील महोदय के अनुसार द्वैतवाद में एक ऐसे ईश्वर का विचार आता है, जो सीमित है । ईश्वर अपने प्राणियों को सुखी बनाना चाहता है, परन्तु सीमित होने के कारण वह अपने विचार को कार्य में परिणत नहीं कर पाता है । अतः ईश्वर की शक्ति को असीम नहीं कहा जा सकता है ।

4– <u>अनेकेश्वरवाद</u> (Polytheism)

जिस धर्म में अनेक ईश्वरों अथवा देवताओं का अस्तित्व माना जाता है उस धर्म को अनेकेश्वरवाद कहा जाता है । Poly+Theism अर्थात Many+God-- अनेक ईश्वर में विश्वास ।

वेद में अनेक देवताओं के विचार सन्निहित हैं । वे एक दूसरे से पृथक नहीं हैं । जिस प्रकार प्राकृतिक शक्तियाँ एक दूसरे से सम्बन्धित हैं उसी प्रकार वेद के देवतागण एक दूसरे से सम्बन्धित हैं । वैदिक काल के देवताओं का कोई स्पष्ट व्यक्तित्व नहीं है । वैदिक ऋषि प्राकृतिक दृश्यों को देखकर अपने सरल हृदय के कारण प्रफुल्लित हो जाते थे तथा वे प्राकृतिक दृश्यों को देवताओं का रूप प्रदान करते थे। इस प्रकार प्राकृतिक पदार्थो में उन्होंने देव–भाव का आरोपण किया, जिसके फलस्वरूप देवताओं की संख्या अनेक हो गई ।

वैदिक युग का सबसे प्रसिद्ध देवता है "वरूण"। वरूण आकाश का देवता है । इन्द्र का स्थान भी महत्वपूर्ण है । इन्द्र को वर्षा का देवता कहा जाता है । इसी प्रकार वायु, मरूद्गण तथा रूद्र देवता माने गये हैं । सूर्य संसार का प्रकाश देवता है। वह मनुष्यों को कर्म में प्रवत्त होने के लिये जगाता है । वह अन्धकार को दूर करता है । ऋग्वेद में अग्नि का मुख्य स्थान है । यह यज्ञ का देवता है ।

इस प्रकार वेद में अनेक देवी–देवताओं का वर्णन किया गया है । वरूण, मित्र, इन्द्र, वायु, रूद्र, चन्द्रमा, सूर्य, विष्णु, ऊषा, अग्नि, पूसन, सोम आदि वेद के देवता हैं । वेद के विभिन्न देवताओं की उपासना के लिये अनेक स्तुतियों का सृजन हुआ है ।

अनेकेश्वरवाद के विरूद्ध यह आपत्ति है कि यह अनेक ईश्वरों को सत्य मानता है जो एक दूसरे को सीमित करते हैं। एकता की भावना में पूर्णता की भावना है। परन्तु अनेकता की भावना में पूर्णता असम्भव है । इस धर्म में देवताओं की कल्पना मानव के आधार पर की गई है । ईश्वर की अनेकता में विश्वास करने से न तो इस विश्व की व्याख्या हो सकती है और न मानव की धार्मिक भावना की तृप्ति होती है । विश्व एक ईकाई है, जिसकी व्याख्या एक मूल सत्ता से ही सम्भव है। धार्मिक भावना की तृप्ति केलिये एक ईश्वर की सत्ता का रहना परम आवश्यक है । इस प्रकार धार्मिक दृष्टि से अनेकेश्वरवाद असफल है ।

5– <u>एकेश्वरवाद</u> (Monotheism)

एकेश्वरवाद, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, एक ईश्वर की सत्ता में विश्वास करना । प्रकृति के विभिन्न अंगों को मूलतः एक समझना। एकेश्वरवाद मानवबुद्धि के विकसित होने पर उदित हुआ है ।

एकेश्वरवाद से सम्बन्धित चार सिद्धांत दृष्टिगत होते हैं ।

(अ) सर्वेश्वरवाद – ईश्वर ही सब है और सब कुछ ईश्वर है ।

(ब) केवल निमित्तेश्वरवाद (Deism)

इसके अनुसार ईश्वर असीम निरपेक्ष तथा शाश्वत रूप से चेतन है। ईश्वर ने संसार का निर्माण किया है । ईश्वर को संसार का निमित्त कारण कहा जाता है । ईश्वर ने संसार का निर्माण शून्य से किया है, इसलिये विश्व का उपादान कारण कुछ भी नहीं है । ईश्वर पूर्ण है। ईश्वर संसार का निर्माण किसी कमी को पूरा करने के लिये नहीं करता है, क्योंकि ईश्वर में किसी प्रकार की कमी नहीं है । सृष्टि के पीछे ईश्वर की स्वेच्छा निहित है । ईश्वर ने संसार का निर्माण इसलिये किया है कि भिन्न-भिन्न पदार्थो का अस्तित्व और सुख प्राप्त हो । अतः सृष्टि उद्देश्यहीन नहीं है। ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है और संसार में निहित न होकर इससे अलग है। जिस प्रकार किसी भी यन्त्र का अस्तित्व यन्त्र बनाने वाले से बिल्कुल पृथक रहता है । उसी प्रकार विश्व का भी अस्तित्व सृष्टि के बाद ईश्वर से बिल्कुल पृथक है ।

केवल निमितेश्वरवाद का ईश्वर एकान्त प्रिय है । वह विश्व का निर्माण कर विश्व से अलग हो जाता है । इसलिये ईश्वर को स्वभाव से शुष्क माना गया है। ईश्वर कठोर हृदय वाला तथा भावनाहीन है । वह मानवीय समस्याओं के प्रति पूर्णतः उदासीन है । ईश्वर प्रेममय नहीं है जो अपनी सृष्टि के प्रति प्रेम तथा अपनापन का भाव प्रकाशित करता हो ।

केवल निमितेश्वरवाद ने ईश्वर को विश्वातीत माना है । ईश्वर का संसार से कोई सम्बन्ध नहीं है । ऐसा ईश्वर धार्मिक भावना के लिये बाधक प्रतीत होता है। धर्म में साधक ईश्वर के समीप रहने की चेष्टा करता है,परंतु विश्वातीत ईश्वर के साथ ऐसा सम्बन्ध सम्भव नहीं है । ईश्वर मात्र सृष्टा है रक्षक नहीं, जबकि उपासक एक ऐसे ईश्वर की कल्पना करता है जो उपासक के प्रति प्रेम, दया, क्षमा आदि का प्रकाशन करता हो ।

(स) <u>निमित्तोपादानेश्वरवाद</u> (Panentheism)

निमित्तोपादानेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, अनन्त

तथा एक है । ईश्वर विश्व का मूल तत्व है। वह विश्व का स्रष्टा है। सारा विश्व ईश्वर में अन्तर्भूत है। परन्तु विश्व ईश्वर के बराबर नहीं है । ईश्वर विश्व में अन्तर्भूत होकर उसमें व्याप्त है और उसमें सीमित न होकर उसके बाहर है । इसीलिये ईश्वर को विश्वव्यापी तथा विश्वातीत दोनों माना गया है । केवल निमितेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्वातीत और सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्वव्यापी है, परन्तु निमित्तोपादानेश्वरवाद ईश्वर को विश्वातीत एबं विश्वव्यापी मानकर दोनों का समन्वय करता है ।

निगित्तोपादानेश्वरवाद ईश्वर को विश्व का निमित्त और उपादान कारण दोनों मानता है । निमित्त कारण होने के कारण ईश्वर विश्व से अलग है पर उपादान कारण होने के कारण घड़े में व्याप्त है, उसी प्रकार ईश्वर विश्व में व्याप्त है जिस प्रकार कुम्हार की सत्ता घड़े से अलग है जिसका वह निमित्त कारण है उसी प्रकार ईश्वर भी विश्व से अलग है ।

केवल निमित्तेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्व का निमित्त कारण है । सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्व का उपादान कारण है , परन्तु निमित्तोपादानेश्वरवाद दोनों का समन्वय करता है, क्योंकि यह सिद्धान्त ईश्वर को विश्व का निमित्त तथा उपादान कारण दोनों ही मानते हैं । इसीलिये इस सिद्धान्त को निमित्तोपादानेश्वरवाद कहा जाता है ।

यद्यपि जड़ और चेतन दोनों ईश्वर की अभिव्यक्ति है, फिर भी मनुष्य चेतन प्राणी होने के नाते जड़ की अपेक्षा ईश्वर की अधिक पूर्ण अभिव्यक्ति है । इसलिये मनुष्य में चेष्टा स्वातन्त्र्य है जो जड़ में नहीं है । इसके बाद भी मनुष्य में स्वतन्त्र सत्ता का अभाव है, क्योंकि सब कुछ ईश्वर की प्रकृति का फल है । मानव ईश्वरमय है । इसलिये मानव को शुभ या अशुभ कहना ईश्वर को शुभ या अशुभ कहना है ।

निमित्तोपादानेश्वरवाद का ईश्वर विश्वव्यापी है । विश्वव्यापी रहने के कारण वह विश्व की अपूर्णताओं से अछूता नहीं रहता है । अपूर्ण ईश्वर हमारी धार्मिकता की रक्षा करने में असमर्थ है । धर्म में मनुष्य ऐसे ईश्वर की कल्पना करता है जो असीम और पूर्ण हो ।

(द) **ईश्वरवाद (Theism)**

ईश्वरवाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है प्रथम व्यापक अर्थ में जिसके अनुसार ईश्वरवाद उस सिद्धान्त को कहा जाता है जो ईश्वर को सत्य मानता है । इस अर्थ में केवल निमित्तेश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद, अनेकेश्वरवाद आदि ईश्वर सम्बन्धी सिद्धान्त को ईश्वरवाद के अन्तर्गत रखा जाता है । द्वितीय अर्थ में ईश्वरवाद एकेश्वरवाद का एक रूप है । यह एक सिद्धान्त है जो ईश्वर को अनन्त और व्यक्तित्वपूर्ण मानता है। फिलन्ट के अनुसार, "वह धर्म, जिसमें एक व्यक्तित्वपूर्ण तथा पूर्ण ईश्वर आराधना का विषय रहता है, ईश्वरवादी धर्म कहा जाता है ।

ईश्वरवाद ईश्वर को व्यक्तिपूर्ण मानता है, क्योंकि धार्मिक भावना की पुष्टि व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर से ही सम्भव है । ईश्वर उपास्य है और जीवात्मा उपासक, ईश्वर अर्थात् उपास्य में उपासक के प्रति करूणा, क्षमा, प्रेम का रहना आवश्यक है । उपासक में उपास्य केप्रति भक्ति, श्रद्धा, आत्मसमर्पण का रहना अनिवार्य है । व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर ही उपास्य और उपासक के सम्बन्ध की पूर्ति कर सकता है । ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, करूणा आदि विशेषणों से विभूषित है। ईश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्व का निमित्त और उपादान कारण दोनों हैं। ईश्वर उपादान कारण इसलिये है कि वह विश्व को अपने अन्दर से उत्पन्न करता है, और निमित्त कारण इसलिये है कि वह अपनी प्रवीणता से विश्व का निर्माण करता है ।

ईश्वरवाद ईश्वर को विश्वव्यापी तथा विश्वातीत मानता है। ईश्वर विश्व के कण-कण में व्याप्त है । फिर भीवह विश्व में समाप्त नहीं हो जाता । वह विश्व से महान है क्योंकि विश्व की सीमाओं से पूर्णतः अलग है ।

ईश्वरवाद निमित्तोपादानेश्वरवाद से अत्यधिक समान है । दोनों में मूल अन्तर यह है कि ईश्वरवाद ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण मानता है, परन्तु निमित्तोपादनेश्वरवाद ईश्वर को व्यक्तित्व रहित मानता है । हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, यहूदी, पारसी-धर्म, ईश्वरवादी-धर्म के रूप कहे जा सकते हैं । ईश्वरवाद हमारी धार्मिक प्रवृत्ति को सन्तुष्ट करता है ।

प्रो० फ्लिन्ट ने ईश्वरवाद को धर्म का पयार्य माना है । उनके मतानुसार

उच्च कोटि के धर्म, ईश्वरवादी धर्म ही होना चाहिये । ईश्वरवाद से न्यून कोई धर्म स्वीकार नहीं और ईश्वरवाद से अधिक कुछ सम्भव नहीं है ।

अन्ध – विश्वास

किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की प्रगति एवं समुन्नति में उसकी चिन्तन पद्धति का सबसे बड़ा योगदान होता है । प्राचीन काल की स्थिति भिन्न थी । तब बुद्धि तथा विज्ञान का इतना अधिक विकास नहीं हुआ था और न ही चिन्तन को प्रभावित करने वाले आज जैसे सुविकसित तन्त्र थे । उपलब्ध प्रकृति प्रदत्त परिस्थितियाँ तथा मानवी पुरूषार्थ प्रगति अथवा अवनति के कारण बनते थे । ऐसी स्थिति में सामाजिक जीवन में अनेकों कुरीतियों, बुराइयों, दुष्प्रवृत्तियों और अन्ध–परम्पराओं का साम्राज्य था । परन्तु जब से शिक्षा, विज्ञान का विकास हुआ, प्रसार हुआ, लोग शिक्षित हुए और समाज में बुद्धि–जीवियों की संख्या में वृद्धि हुई । उसी के अनुरूप सामाजिक–जीवन की अन्ध–परम्पराओं को समाप्त हो जाना चाहिये था, किन्तु सत्यता यह है कि प्रबुद्ध और बुद्धिजीवी कहे जाने वाले, तर्क और विचारशीलता की दुनियाँ में जीने वाले व्यक्ति भी किसी के छींक देने अथवा काली बिल्ली के रास्ता काटने पर ठिठक जाते हैं और आवश्यक कार्य के लिये भी जाना रोक देते हैं ।

संसार में घटित प्रत्येक घटना के पीछे कार्य–कारण सम्बन्ध होता है । वर्तमान वैज्ञानिक युग में इस कार्य–कारण सम्बन्ध की खोज कर नवीन तथ्यों को प्रकट किया जा रहा है और भविष्य में भी यह प्रयास निरन्तर चलता रहेगा । स्वाभाविक और प्राकृतिक घटनाओं के पीछे गम्भीर कारण खोजने और उनका सम्बन्ध अपने कार्यो की सफलता या असफलता से जोड़ने की प्रवृति सामान्य श्रेणी के व्यक्तियों में पाई जाये तो इसका कारण अशिक्षा और अज्ञानता मानी जाती है, परन्तु दुःख के साथ यह सत्य स्वीकार करना पड़ रहा है कि पढ़े–लिखे शिक्षित व्यक्ति भी इससे आकंठ प्रभावित हैं । यही पढ़े–लिखे व्यक्ति प्रतिष्ठा–निर्देश के रूप में अशिक्षित व अज्ञानी व्यक्तियों को अन्ध–परम्पराओं की दलदल में धक्का लगा रहे हैं । जिन व्यक्तियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समाज की कुरीतियों, बुराईयों, अन्ध–परम्पराओं को समाप्त कराने में अपनी प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह करेंगे वे ही मानसिक विकारों से ग्रस्त हैं। यही कारण है कि आज भी यह अन्ध–परम्परायें अन्ध–विश्वास केरूप में हमारी मनो–भूमि पर शासन कर रही हैं और वे इतनी प्रभावक हैं कि उन्होंने हमारे विचारों और भावों से भी गहरे

धरातल पर संस्कार के रूप में जम गई हैं । इन संस्कारों को यथार्थ के धरातल पर संशोधित तथा परिमार्जित करने की आवश्यकता है । अन्ध–विश्वास को जीवन और समाज के हर क्षेत्र से निरस्त कर स्वस्थ मान्यताओं, आदर्श परम्पराओं को प्रतिष्ठित करने की नितान्त आवश्यकता है।

मनुष्य अपने विश्वासों की ही छाया है । जैसा मनुष्य का विश्वास होगा वैसे ही उसके संस्कार बनते जायेंगे। उन्हीं के आधार पर वह अन्धेरे रास्तों पर चलने को तैयार हो जायेगा। आत्म–विश्वास, ईश्वर के प्रति विश्वास, आदर्शों के प्रति आस्था जहाँ अपनी सत्तामूलक शक्ति से लोगों को लाभान्वित करती है वहीं यह विश्वास की शक्ति भी उसके मूल में रहती है ।

विश्वास जहाँ एक शक्ति है, मनुष्य को ऊँचा उठाती है, वहीं अन्ध–विश्वास उस शक्ति का ऐसा विकृत रूप है जो उसे पतन के गर्त में गिराती है । हमारे समाज में इस शक्ति का विकृत रूप एक महामारी के रूप में फैल गया है। अन्धविश्वास की बीमारी एक ऐसी घृणित बीमारी है जो शरीर पर तो अपना प्रभाव डालती है, साथ ही मन, बुद्धि और आत्मा तक को अपना ग्रास बना कर उसे जड़ बना देती है। यही कारण है कि व्यक्ति अन्ध–विश्वासों के कारण प्रत्यक्षतः हानि उठाकर भी दोषी अन्ध–विश्वासों को नहीं समझते । अन्ध–विश्वासों को धर्म के भय के कारण नहीं छोड़ पाते हैं । उन्हें किसी नये अनिष्ट की आशंका होने लगती है । उल्टा यह तर्क देने लगते हैं कि इन विधि–विधानों को मानने से यह हानि हो गई, अब अगर इनका पालन नहीं करेंगे तब पता नहीं आगे क्या हानि होगी ।

जिस प्रकार भौतिक जगत में सफाई व स्वच्छता की आवश्यकता है, उसी प्रकार मस्तिष्क में जो दुष्प्रवृत्तियां , कुसंस्कारों तथा अन्ध–विश्वासों की सफाई व स्वच्छता आवश्यक है। यह स्वच्छता ही पवित्र चिन्तन–मनन विकसित करती है । स्वभाव से आलसी मनुष्य हर बात को तर्क की कसौटी पर नहीं कसता और न विवेकपूर्वक तथ्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है जो कुछ भी आसपास हो रहा है उसी कोउचित मानकर अपना लेना बुद्धिमानी नहीं है । यह एक अन्धी परम्परा को जन्म देती है, जिसके कारण समाज में बुराईयाँ और दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ती चली जाती हैं ।

भारतीय समाज में कुछ प्रमुख अन्धविश्वास निम्नलिखित हैं –

1– छिपकली का शकुन

2- कुत्ते का कान फड़फड़ाना

3- बिल्ली का रास्ता काट जाना

4- छींक आ जाना

5- शनिवार को लोहा बाज़ार से खरीदकर लाना ।

6- भूतवाद का भ्रम

7- हाथ की हथेली खुजलाना

8- बाहर जाते समय खाली घड़ा या बर्तन दिखाई देना

9- मुहूर्त द्वारा शुभ–अशुभ समय

10- मकान की छत पर कौवा का बोलना

11- मामा और भांजे का एक ही नाव में बैठना

12- शुक्रवार की रात्रि को महत्वपूर्ण वार्ता करना

13- रात्रि में बिल्ली का रोना

14- मार्ग में नीलकंठ के दर्शन होना

15- सुबह बन्दर का नाम लेना

16- सिर पर कौवा का बैठना

17- शनिवार को तेल खरीदना

18- बाहर जाते समय एक आँख के व्यक्ति का दिखाई देना

19- रात्रि में कुत्ते का रोना

20- बाहर जाते समय घोड़े का जमीन पर लोटना

21- रात्रि में उल्लू का बोलना

22- तीन व्यक्तियों का किसी कार्य हेतु जाना

23- हाथ में नमक देना

24- पुरूष की दाहिनी अथवा स्त्री की बायीं आँख फड़कना

25- किसी लेटे व्यक्ति के ऊपर से कूद जाना

26- चप्पल का उल्टा हो जाना

27- खाली कैंची चलाना

28- सोमवार को नये कपड़े पहनना

29- घर में आइना फूट जाना

30- नये बन रहे घर पर काली हान्डी अथवा झन्डी लगाना

31- अचानक दिया बुझ जाना

32- रोटी बनाते समय बेलन छूट जाना

33- तेरह नम्बर

34- बाहर जाते समय बछड़े को दूध पिलाती हुई गाय दिखाई देना

35- ग्रहण में स्नान करना

36- देवी-देवताओं को प्रसन्न करने हेतु पशु-पक्षियों तथा बच्चों की बलि चढ़ाना

37- जादू-टोना व टोटका

38- झाड़-फूँक व नजर उतारना

39- स्वप्न-फल विचार

40- बहू के पैर पड़ने से घर की उन्नति या अवनति होना

41- मृतक भोज

42- भिक्षावृत्ति को बढ़ावा देना

43- वर्ण, जाति, गोत्र, वर्ग, लिंग, धर्म, सम्प्रदाय के आधार पर बड़े छोटे का भेदभाव करना

44- दहेज प्रथा, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा का समर्थन करना

45- गुरूवार को नाखून न काटना तथा सिर न धोना

इस प्रकार अनेक कुरीतियाँ अपने समाज को जर्जर बना रही है । किसी भी समाज अथवा देश की प्रगति में स्वस्थ रीति-रिवाजों एवं सत्परम्पराओं का विशेष योगदान होता है । परम्परागत प्रचलन भी कितने ही व्यक्तियों एवंसमाज की प्रगति में सहायक सिद्ध होते हैं । ऐसे विवेकपूर्ण, उपयोगी रीति-रिवाजों, स्वस्थ परम्पराओं का अनुकरण उपयोगी है । किन्तु साथ ही उन परम्पराओं, रीति-रिवाजों, अन्ध-विश्वासों की भी कमी नहीं होती जो प्रचलन के रूप में लम्बे समय से चले आ रहे हैं । जबकि विवेक की कसौटी पर कसने पर वर्तमान में उनकी कोई उपयोगिता तथा औचित्य दृष्टिगत नहीं होता है । अन्ध-विश्वासों, कुरीतियों, कुपरम्पराओं का जितना बोलबाला अपने देश में है उतना अन्य किसी भी दूसरे देश में नहीं है । इसके कारण देश और समाज की प्रगति बाधक हो रही है ।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के Personality शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। Personality शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Persona शब्द से हुई है जिसका अर्थ वेशभूषा अथवा मुखौटा है, जिसे नाटक के पात्र पहनते हैं। नाटकों में कार्य करते समय अभिनेता एक प्रकार के मुखौटे या नकाब का प्रयोग करते थे जिससे उनका वास्तविक रूप छिपा रहे और जिस व्यक्तित्व को वह अभिव्यक्त करना चाहते हैं वह दर्शकों के सामने आयें।

स्टेग्नर एवं कारवास्की (1952) ने व्यक्तित्व को तीन रूपों में परिभाषित करने का प्रयास किया है । प्रथम, उद्दीपक के रूप में एक व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। यह प्रभाव कभी अधिक होता है कभी कम, कभी धनात्मक होता है तो कभी ऋणात्मक । इसके अतिरिक्त एक ही उद्दीपक का प्रभाव विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है । द्वितीय प्रतिक्रिया के रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपना भिन्न व्यक्तित्व रखता है । वह अपने विशिष्ट रूप में उद्दीपक के प्रभाव को अभिव्यक्त करता है । तृतीय, व्यक्तिगत गुणों के समुच्चय के रूप में व्यक्तित्व होता है । व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ, आकांक्षायें, बुद्धि तथा प्रेरणा आदि सभी ऐसे तत्व हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति प्रतिक्रियायें करता है । वुडवर्थ के उद्दीपक-प्राणी-अनुक्रिया (S - O - R)सूत्र पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि उद्दीपक एवं प्रतिक्रिया के मध्य व्यक्ति की बुद्धि, प्रेरणा, उद्दीपक के संबंध में उसका पूर्व अनुभव तथा परिस्थिति-विशेष के प्रति उसकी मनोवृत्ति इत्यादि मध्यवर्ती परिवर्ती होते हैं, जो उसकी प्रतिक्रिया को प्रभावित करते हैं ।

ओलपोर्ट ने व्यक्तित्व को व्यक्ति की मनोदैहिक प्रणालियों का आन्तरिक गत्यात्मक संगठन बताया है, जिसके द्वारा उसका वातावरण के साथ एक अनोखा समायोजन निर्धारित होता है ।

उक्त परिभाषा द्वारा व्यक्तित्व की निम्नलिखित तीन विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है -

1- व्यक्तित्व का स्वरूप गत्यात्मक होता है ।

2- व्यक्तित्व मनोदैहिक विशेषताओं का संगठन है ।

3- व्यक्तित्व के निर्माण अथवा विकास में वातावरण का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।

व्यक्तित्व के प्रकार (Types of Personality)

हिप्पोक्रेटीज के अनुसार व्यक्तित्व निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं -

2– उदासीन – निराशावादी

3– क्रोधी – शीघ्र क्रोधित होने वाले

4– आशावादी – आशा के साथ शीघ्र कार्य करने वाले

क्रेश्मर ने शारीरिक रचना के आधार पर व्यक्तित्व को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है –

1– पिकनिक – छोटे और मोटे शरीर वाले

2– ऐस्थैनिक – लम्बे और पतले शरीर वाले

3– ऐथलैटिक – हड्डी तथा मांसपेशियों के संबंध में शक्तिशाली तथा चौड़े कन्धे वाले

4– डिसप्लास्टिक – बेडौल शरीर वाले

शेल्डन ने भी शारीरिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है –

1– गोल शरीर वाले – कोमल तथा गोल शरीर वाले होते हैं ।

2– हृष्ट–पुष्ट शरीर वाले– शक्तिवान तथा हृष्ट–पुष्ट शरीर वाले होते हैं ।

3– शक्तिहीन शरीर वाले – ऐसे व्यक्ति शक्तिहीन, लम्बे, पतले तथा अविकसित मांसपेशियों वाले होते हैं ।

मॉर्गन तथा गिलीलैंड के अनुसार स्वभाव के अनुसार व्यक्तित्व को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है –

1– प्रफुल्ल – खुश–मिजाज तथा आशावादी

2– उदास – उदास तथा निराशावादी

3– चिड़चिड़े – गर्म–मिजाज, झगड़ालू तथा चिड़चिड़े व्यक्तित्व वाले

4– अस्थिर – अस्थिर तथा असन्तुलित व्यक्तित्व वाले

युंग ने 1923 में व्यक्तित्व के सामाजिक रूपों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्गीकरण किया। यह वर्गीकरण इस प्रकार है –

1– बहिर्मुखी (Extrovert)

बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति समाज एवं सामाजिक वातावरण में अधिक रुचि रखने के कारण अत्यधिक सामाजिक होते हैं । प्रत्येक सामाजिक उत्सव में भाग लेना,

समूहों का नेतृत्व करना तथा अपने स्वभाव के व्यक्तियों से भिन्नता स्थापित करना उनके व्यक्तित्व का एक आवश्यक अंग बन जाता है । ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति संतुष्ट, उदार एवं सदैव दूसरों की सहायता करने के लिये तत्पर रहते हैं । वे किसी भी प्रकार का निर्णय लेने में अत्यधिक तत्परता दिखाते हैं और उसे कार्यान्वित करने में भी काफी शीघ्रता करते हैं । इनका व्यक्तित्व बाह् परिस्थितियों द्वारा अधिक और आन्तरिक भावना द्वारा कम निर्धारित होता है । नेता, व्यवसायी, राजनीतिज्ञ तथा अभिनेता आदि इसी समूह में आते हैं ।

2- **अन्तर्मुखी** (Introvert)

अन्तर्मुखी व्यक्ति की विशेषतायें बहिर्मुखी व्यक्ति की विशेषताओं से सर्वथा भिन्न होती हैं। यह आत्म-केन्द्रित होते हैं तथा इन्हें न तो समाज में रूचि रहती है और न ही वे मित्रों के साथ समय व्यतीत करना ही पसन्द करते हैं। फलस्वरूप सामाजिक उत्सव ऐसे व्यक्तियों के लिये अधिक महत्व नहीं रखते। ऐसे व्यक्ति प्रकृति में अधिक रूचि रखते हैं । व्यवहारकुशल न होने के कारण प्रायः उदास रहने वाले तथा अत्यधिक संवेगात्मक एवं दिवा-स्वप्न में विचरण करने वाले होते हैं । वैज्ञानिक, दार्शनिक तथा अत्यधिक धार्मिक व्यक्ति इस वर्ग में आते हैं ।

नेमैन तथा याकोरजिंस्की ने बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी परीक्षण के आधार पर वक्र-रेखा का निर्माण किया और बताया कि वक्र-रेखा के एक सिरे पर बहिर्मुखी तथा दूसरे पर अन्तर्मुखी व्यक्तित्व बहुत कम संख्या में पाये जाते हैं । अधिकतर व्यक्ति वक्र-रेखा के बीच में आते हैं, जिनमें दोनों ही तरह की विशेषतायें देखी जा सकती हैं। मध्यम श्रेणी के ऐसे व्यक्तियों को उभयमुखी(Ambivert) कहा जा सकता है। इस प्रकार के व्यक्तित्व एक समय में बहिर्मुखी हैं तो दूसरे समय में ऐसे व्यक्ति अन्तर्मुखी रूप में मिलते हैं ।

कारक तथा तत्व विश्लेषण विधि के आधार पर गिल्फर्ड ने अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी परीक्षण देकर पॉच प्रकार के तत्वों का संकेत दिया है, जिनको गिल्फर्ड ने सामाजिक अन्तर्मुखी, विचारशील अन्तर्मुखी, दमित, चंचल प्रकृति तथा खुश-मिजाज के रूप में व्यक्त किया है ।

व्यक्तित्व के निर्धारक

व्यक्तित्व का निर्माण तथा विकास कई कारकों द्वारा निर्धारित होता है । इन कारकों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है । प्रथम–आन्तरिक कारक, जिनमें मुख्यतः अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ, शरीर–रचना एवं रक्त रसायन आदि आते हैं । द्वितीय बाह्य कारक, जिसके अन्तर्गत परिवार, विद्यालय, समाज एवं संस्कृति व्यक्तित्व को प्रभावित करती है ।

आन्तरिक निर्धारक

(1) **अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ–** मानव शरीर में जिन अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का प्रभाव व्यक्तित्व निर्माण एवं विकास पर पड़ता है, वे निम्नलिखित हैं –

1– **पोष ग्रन्थि–** इस ग्रन्थि से होने वाला स्राव पेन्क्रियाटिक स्राव कहलता है। शरीर में चीनी की मात्रा इसी स्राव की मात्रा पर निर्भर करती है । इसकी कमी होने पर व्यक्ति में शक्ति एवं स्फूर्ति की कमी हो जाती है ।

2– **कंठ ग्रन्थि–** इस ग्रन्थि से निकलने वाला स्राव थायराक्सिन कहलता है। जन्म के समय से इस ग्रन्थि में विकृति होने के कारण व्यक्ति की मानसिक शक्ति क्षीण एवं दुर्बल हो जाती है । इस स्राव की अधिकता से व्यक्ति अधिक चिन्तित एवं अस्थिर चित्त वाला हो जाता है। इसकी कमी से व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है । वह अतिशीघ्र थकावट महसूस करने लगता है ।

3– **एड्रिनल ग्रन्थि–** इस ग्रन्थि से निकलने वाला स्राव एड्रिनेलिन के नाम से जाना जाता है । इस ग्रन्थि के दो भाग होते हैं : अग्र खण्ड तथा पृष्ठ खण्ड । अग्र खण्ड से यदि आवश्यकता से कम स्राव हो तो व्यक्ति कमजोर हो जाता है और उसकी यौन–रूचियाँ भी समाप्तप्राय हो जाती हैं । इसके साथ ही साथ व्यक्ति चिड़चिड़ा भी हो जाता है । वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में उसे कठिनाई होती है । इस ग्रन्थि के आवश्यकता से अधिक क्रियाशील होने पर व्यक्ति अत्यधिक सचेत एवं सन्तुलित व्यवहार वाला हो जाता है। इस ग्रन्थि के आन्तरिक भाग की क्रिया में शिथिलता आने पर व्यक्ति में संवेगात्मक अस्थिरता आ जाती है। जिन व्यक्तियों में इसकी क्रियाशीलता में वृद्धि हो जाती है, वे अधिक उत्तेजित होने वाले, चंचल सक्रिय एवं दिवास्वप्न में विचरण करने वाले हो जाते हैं ।

4– **जनन ग्रन्थियाँ–** इसको यौन ग्रन्थि के नाम से जाना जाता है। किशोरावस्था में

बालक–बालिकाओं में होने वाले शारीरिक परिवर्तन इसी ग्रन्थि की क्रियाशीलता के परिणाम होते हैं। इस ग्रन्थि की क्रिया की अधिकता या कमी से स्त्री पुरूष दोनों में विभिन्न प्रकार की विकृतियां एवं असामान्यतायें आ जाती हैं । इन ग्रन्थियों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध तो पाचन क्रिया से रहता है तथापि ये अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के व्यवहार को भी प्रभावित करती हैं ।

5– **पीयूष ग्रन्थि**–इसकी शारीरिक विकास के लिये आवश्यकता होती है । बालपन में इस आवश्यक स्राव की कमी में शरीर छोटा हो जाता है । इसके विपरीत स्राव अधिक मात्रा में होने से शरीर अधिक लम्बा हो जाता है ।

(2) **शरीर–रचना**–शरीर–रचना से तात्पर्य शरीर की बनावट, लम्बाई, स्वास्थ्य, मुखाकृति आदि से हैं । यदि किसी व्यक्ति में शारीरिक आकर्षण है, तब ऐसी स्थिति में स्वाभाविक रूप से अन्य व्यक्ति उससे प्रभावित होते हैं । इसके विपरीत शारीरिक दोष व्यक्ति में उल्टा प्रभाव डालता है । इससे व्यक्ति में हीन भाव उत्पन्न हो सकते हैं तथा आत्म–विश्वास की कमी आ जाती है । आत्म–विश्वास की कमी का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति को अपने जीवन में असफलता देखने को मिलती है । शारीरिक गठन के दोष के कारण समाज में समायोजन की कमी भी देखी जाती है । अच्छा शारीरिक गठन ही स्वस्थ व्यक्तित्व का स्वरूप है तथा दोषपूर्ण शारीरिक गठन शारीरिक तथा मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्तित्व का प्रतीक है।

(3) **रक्त–रसायन**– रक्त में विभिन्न रसायनों की अधिकता या कमी से व्यक्तित्व में विकार एवं दोष उत्पन्न हो जाते हैं । ये रसायन दो प्रकार से प्रभावित कर सकते हैं– प्रथम रक्त में विद्यमान तत्व जैसे-लवण, विटामिन, चीनी आदि की कमी या अधिकता व्यक्तित्व को प्रभावित करती है । द्वितीय वे तत्व जो व्यक्ति स्वयं बाह् वातावरण से प्राप्त करता है जैसे-मद्य अथवा नशीले पदार्थ आदि । इनकी अधिकता से व्यक्तित्व असन्तुलित हो जाता है ।

<u>बाह् निर्धारक</u>

1– **परिवार**– बालक परिवार में जन्म लेता है और जन्म लेने के बाद ही माता–पिता, भाई–बहन एवं सम्बन्धीजन उसकी ओर ध्यान देने लगते हैं । इस प्रकार परिवार का तथा बालक के मध्य अन्त:क्रिया बालक के व्यक्तित्व निर्माण में निर्णायक भूमिका अदा करती है। बालक के व्यक्तित्व पर सर्वाधिक प्रभाव माता–पिता के व्यक्तित्व तथा उनके व्यवहार का पड़ता है । यदि परिवार में अधिक कठिनाईयों के कारण माता–पिता दोनों ही नौकरी करते हैं

तो बालक को माँ से वह समुचित प्रेम नहीं मिलता जो उसे मिलना चाहिये । ऐसी अवस्था में बालक के पालन–पोषण का भार घर की आया पर पड़ता है , जिससे बालक जिद्दी, परिवार से विमुख एवं उदण्ड प्रकृति का हो जाता है । इसी प्रकार माता–पिता के पारस्परिक सम्बन्ध कटु रहने पर बालक के मन में दोषयुक्त विचार आ जाते हैं और वह माता–पिता किसी के भी प्रति आकर्षण अथवा आदर का भाव नहीं रखता है । घर के अनुशासन का अत्यधिक कठोर या अत्यधिक सरल होना भी बालक के लिये अहितकर होता है । इन दोनों ही अवस्थाओं में बालक जिद्दी, उदण्ड एवं अनुशासन की अवहेलना करने वाला हो जाता है । इसके विपरीत सामान्य अनुशासन रहने पर बालक में उचित अनुचित के बीच अन्तर करने की क्षमता उत्पन्न होती है।

पियाजे ने बच्चों के व्यवहार के अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि बहुत छोटे बच्चों में व्यवहार के कोई निर्धारित सिद्धान्त नहीं होते हैं । छोटे बालक स्वतः अपने खेल में आनन्द प्राप्त करते हैं तथा प्रायः अकेले ही खेलते हैं । अतः उन्हें आचरण सम्बन्धी सिद्धान्तों का पालन करने की कम आवश्यकता पड़ती है । जैसे–जैसे बालक आयु में बढ़ते हैं, वैसे–वैसे उनके व्यवहार पर संस्कृति का प्रभाव स्पष्टतर होता जाता है । कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया कि बालकों के उग्र व्यवहार तथा डरने का मूल कारण उन पर परिवार के सदस्यों का प्रभाव है । अत्यन्त प्रिय तथा अप्रिय दोनों प्रकार के बालकों के साथ परिवार के सदस्यों का व्यवहार असामान्य रहता है ।

बालक का अपने भाई–बहनों में स्थान अथवा जन्म–क्रम का भी व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है । परिवार का सबसे बड़ा बालक उत्तरदायित्व की भावनावाला एवं स्वावलम्बी बन जाता है, क्योंकि उसके ऊपर परिवार के अन्य बच्चों की देखभाल का उत्तरदायित्व आ जाता है। इसके विपरीत परिवार का सबसे छोटा बच्चा प्यार एवं स्नेह पाने के कारण कुछ सीमा तक अन्य बच्चों पर अधिकार जमाने वाला हो जाता है । घर का अकेला बच्चा माता–पिता के सम्पूर्ण स्नेह का एक मात्र अधिकारी बन जाता है । अतः माता–पिता के सम्पूर्ण स्नेह प्राप्त कर वह आधिपत्य की भावना से युक्त बलपूर्वक कार्य करने वाला हो जाता है । कभी–कभी अकेले बच्चों में अत्यधिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित हो जाती है। परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने पर बच्चा अपनी इच्छाओं की पूर्ति न होते देखकर समाज के अन्य बालकों के साथ मिलकर अनुचित ढंग से धनोपार्जन करके अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने की चेष्टा करता है, जिससे उसमें बुरी आदतों का विकास होता है ।

2— **विद्यालय**— पाँच छः वर्ष की आयु के बाद बालक विद्यालय जाना प्रारम्भ कर देता है । इस अवस्था में उसके आदर्श माता—पिता के स्थान पर विद्यालय के अध्यापक हो जाते हैं । वह उनसे अपना तादात्म्य स्थापित करके उनकी विशेषताओं को ग्रहण करने की चेष्टा करता है । विद्यालय के जीवन में आकर वह साथियों के सम्पर्क में आता है, जहां पर उसका समूह जीवन प्रारम्भ होता है । विद्यालय के सहपाठी अपना प्रभाव डालते हैं। बालक का सही सामूहिक जीवन सही व्यक्तित्व के विकास में सहायक हो सकता है । इसके विपरीत दोषपूर्ण सामूहिक जीवन के व्यक्तित्व में दोष उत्पन्न कर सकताहै । इसका अर्थ यह है कि एक व्यक्तित्व के निर्माण में विद्यालय के वातावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है । विद्यालय में बालक विभिन्न स्वभाव के अनेक बालकों एवं व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है अतएव वह समायोजन के सिद्धान्तों को धीरे—धीरे समझने लगता है ।

3— **समाज तथा संस्कृति**— बालक के जीवन के विकास में वह उन्हीं कार्यो को करना सीखता है जो समाज को मान्य होते हैं । समाज के आदर्शों को बिना किसी तर्क के बालक अपना लेता है । बालक का विकास पुरूष के रूप में तथा बालिका का विकास स्त्री के रूप में होता है, परन्तु यह विकास एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में बिल्कुल भिन्न होता है । व्यवसाय आदि का चयन भी संस्कृति से प्रभावित है । व्यवसाय के अनुसार व्यक्ति में रहन—सहन के ढंग आ जाते हैं । विशेष प्रकार के ढंग व्यक्तित्व को पहचानने में सहायक होते हैं ।

समाज में अन्य व्यक्तियों का व्यवहार, सामाजिक मान्यतायें, प्रथायें, आदि भी बालक के व्यवहार को एक निश्चित दिशा देते हैं। व्यक्ति कभी स्वयं को सामाजिक वातावरण के साथ समायोजित करता है और कभी वातावरण को अपने अनुरूप बनाता है। यदि कोई व्यक्ति इन सामाजिक मान्यताओं के विपरीत जाता है तो उसे समाजविरोधी की संज्ञा दी जाती है तथा वह अन्य व्यक्तियों की दृष्टि में निम्न स्तर के माने जाते हैं ।

संस्कृति भी व्यक्ति के व्यवहार में ऐसे परिवर्तन लाती है जिसके कारण उसके सम्पूर्ण देशवासियों को उसी रूप में देखा जाता है । भारतीय संस्कृति ने हर भारतीय को शान्ति से रहना सिखाया तथा शान्ति के पुजारियों ने देश को दास्ता की जंजीरों से मुक्त कराने में महान योगदान दिया । आज भी हम विश्व में शान्ति का दीप जलाने में सबसे आगे हैं। शान्ति हमारे देश के चरित्र के रूप में चमक रही है ।

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार, "संस्कृति रहने और सोचने के ढंगों में दैनिक क्रियाओं में, कक्षा में, साहित्य में, धर्म, मनोरंजन व सुखोपभोग में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परिवार, विवाह, खानपान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, परम्परा, धर्म आदि में एक देश का दूसरे देश के व्यक्तियों में भिन्न स्वरूप संस्कृति के प्रभाव के फलस्वरूप है ।

सामाजिक आर्थिक स्थिति

सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत व्यवहार का अध्ययन करने सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन आवश्यक होता है । माता-पिता की आर्थिक स्थिति बालक के व्यवहार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है । सन्तोषजनक आर्थिक-सामाजिक स्थिति बालकों को सही दिशा में विकसित करने में सहायक होती है । सुख-सुविधाओं, शक्ति, अवसरों, पदार्थों एवं भोग वस्तुओं के अभाव में व्यक्ति के व्यवहार, उसके सोचने के ढंग तथा मनोवृत्तियों में महत्वपूर्ण अन्तर आ सकता है । इसका कारण उसकी शैक्षिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति ही है । उपयुक्त सामाजिक-आर्थिक स्तर के अभाव में कुपोषण, अस्वास्थ्यकर जीवन दशायें, स्थान की कमी, विद्यालयों में निम्न स्तर की शैक्षिक सुविधा, रोजगार के अवसरों की कमी, माता-पिता की देखभाल एवं स्नेह में कमी इत्यादि कारक व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं ।

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसन्धान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1- हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2- अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2.1 हिन्दू अन्तर्मुखी तथा हिन्दू बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2.2 मुस्लिम अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2.3 हिन्दू अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2.4 हिन्दू बहिर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3– हिन्दू तथा मुस्लिम के मध्य अन्ध–विश्वास का अध्ययन करना ।

3.1 उच्च अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा निम्न अन्धविश्वासी हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3.2 उच्च अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों तथा निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3.3 उच्च अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3.4 निम्न अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4– उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक–स्तर के व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4.1 उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4.2 उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4.3 उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दु तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4.4 निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दु तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5– पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5.1 हिन्दू पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5.2 मुस्लिम पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5.3 हिन्दू पुरूष तथा मुस्लिम पुरूषों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5.4 हिन्दू महिला तथा मुस्लिम महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6– शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6.1 शहरी हिन्दू तथा ग्रामीण हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6.2 शहरी मुस्लिम तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6.3 शहरी हिन्दू तथा शहरी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6.4 ग्रामीण हिन्दू तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता–अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

7– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बाहेर्मुखी) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

8– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

9– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

10– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरूष व महिला) केप्रभाव का अध्ययन करना ।

11– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

12- धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्ध-विश्वास स्तर(उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

13- धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

14- धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

15- धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

16- धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

17- धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) केप्रभाव का अध्ययन करना ।

18- धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

19- धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

20- धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

21- धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग(पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

प्रस्तुत अनुसन्धान की उपकल्पना

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य के आधार पर निम्नलिखित शून्य उपकल्पनायें निर्मित की गई ।

1– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

2– अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं होगा ।

2.1 हिन्दु अन्तर्मुखी तथा हिन्दू बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

2.2 मुस्लिम अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

2.3 हिन्दू अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता–अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

2.4 हिन्दू बहिर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता–अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के अन्ध–विश्वास के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3.1 उच्च अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा निम्न अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3.2 उच्च अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों तथा निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3.3 उच्च अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3.4 निम्न अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4- उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक–स्तर के व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4.1 उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4.2 उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4.3 उच्च सामाजिक –आर्थिक स्तर के हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4.4 निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5- पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5.1 हिन्दू पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।

5.2 मुस्लिम पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5.3 हिन्दू पुरूष तथा मुस्लिम पुरूषों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5.4 हिन्दू महिला तथा मुस्लिम महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6- शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6.1 शहरी हिन्दू तथा ग्रामीण हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6.2 शहरी मुस्लिम तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6.3 शहरी हिन्दु तथा शहरी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6.4 ग्रामीण हिन्दू तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता–अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

7– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दु व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

8– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

9– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक –आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

10– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

11– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

12– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

13– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व, प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक –आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

14– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

15– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

16– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्चव निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

17– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

18– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

19– धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

20– धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

21– धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

उक्त शून्य उपकल्पनाओं की जांच प्रस्तुत अनुसंधान में क्रांतिक अनुपात तथा प्रसरण–विश्लेषण गणना द्वारा की जानी अपेक्षित है ।

<u>प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्व</u>

धर्म एक जटिल मानसिक क्रिया है, जिसका सम्बन्ध मनुष्य की आन्तरिक अनुभूतियों से होता है । प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा धर्म के ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक पहलू को जानने का प्रयास किया गया है । प्रत्येक व्यक्ति धर्म के प्रति सकारात्मक अथवा नकारात्मक अभिवृत्ति रखता है, जिससे उसकी जीवन–शैली प्रभावित होती है । व्यक्ति की धर्म के प्रति अभिवृत्ति कई कारकों से प्रभावित होती है । प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा उन विशेष कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना है जो कि धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं । इस प्रकार प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा प्राप्त परिणाम अनुसन्धान के महत्व को प्रदर्शित करते हैं ।

हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय के व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन कर प्राप्त परिणाम दोनों सम्प्रदायों को समझने में सहायक होंगे। हिन्दुओं और मुसलमानों की धार्मिकता, भारतीय समाज के लिये अत्यधिक आवश्यक है । धार्मिक–अभिवृत्ति का ज्ञान हिन्दू–मुसलमानों के आपसी सम्बन्धों की विवेचना करने में सहायक सिद्ध होगा । धर्म के प्रति मनोग्रस्तता के परिणामस्वरूप साम्प्रदायिकता का विकास हुआ है ।

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत व्यक्तित्व तथा धार्मिक अभिवृत्ति का भी अध्ययन सम्भव होगा । व्यक्तित्व के प्रकार अर्थात अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पडता है, इसका अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा किया जायेगा । अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति अधिक धार्मिक होते हैं अथवा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति अधिक धार्मिक होते हैं ? इस महत्वपूर्ण व रोचक प्रश्न का अध्ययन तथा विश्लेषण प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत किया जाना अपेक्षित है । इससे स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत अनसन्धान अत्यधिक महत्वपूर्ण है ।

प्रस्तुत अनुसन्धान इसलिये भी अधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि अन्धविश्वास तथा धार्मिक अभिवृत्ति के पारस्परिक सम्बन्धों पर अनुसन्धान महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करता है । अन्ध-विश्वास की बीमारी एक ऐसी घृणित बीमारी हैं जो शरीर पर तो अपना प्रभाव डालती है, साथ ही मन तथा बुद्धि पर भी अपना प्रभाव डालकर नष्ट कर देती है । हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास का प्रभाव किस रूप में पडता हैं , इस तथ्य का विश्लेषण प्रस्तुत अनुसन्धान करता है ।

व्यक्ति का सामाजिक -आर्थिक स्तर भी उसकी धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित कर सकता है । समाज में ऐसे व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति अलग प्रकार की हो सकती है, जिनका सामाजिक-आर्थिक स्तर अत्यधिक उच्च है और इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर रखने वाले व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति भिन्न प्रकार की हो सकती है । इस प्रकार प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा यह जानना सम्भव होगा कि सामाजिक आर्थिक स्तर का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पडता है ?

धार्मिक-अभिवृत्ति पर लिंग का क्या प्रभाव पडता है, इस तथ्य का विश्लेषण प्रस्तुत अनुसन्धान के महत्व में वृद्धि करता है । पुरूष अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं अथवा महिलायें अधिक धार्मिक पवृत्ति की होती हैं , इस तथ्य का विवेचन करना अनुसन्धान का प्रमुख उद्देश्य हैं । धार्मिक अभिवृत्ति पर परिवेश का भी पभाव पड सकता है । शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति तथा ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति में भिन्नता हो सकती है। इस परिवेशगत प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा किया जाना है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट है कि प्रस्तुत अनुसन्धान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त हो सकेंगे साथ ही धर्म जैसे जटिल विषय को समझना सम्भव हो सकेगा ।

****

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित अनुसन्धानों का इतिहास

<u>सम्बन्धित अनुसन्धानों का इतिहास:</u>

प्रस्तुत अनुसन्धान से सम्बन्धित विभिन्न अनुसन्धान मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये हैं, जिनका वर्णन इस प्रकार है –

सर्वप्रथम भारत में श्री एन0के0 दत्त (1965) द्वारा पंजाब विश्वविद्यालय के 200 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया । श्री दत्त द्वारा धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । लिकर्ट विधि पर आधारित धार्मिक अभिवृत्ति का निर्माण किया गया । अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्रों की अपेक्षा छात्रायें अधिक धार्मिक प्रवृत्ति की पाई गईं । कला तथा विज्ञान वर्ग का कोई प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति पर नहीं पाया गया । धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों की विचलनशीलता में भी अन्तर सार्थक रूप में पाया गया । छात्राओं की धार्मिक अभिवृत्ति में कम विचलनशीलता पाई गई ।

राजामानिकम (1966) ने धार्मिक अभिवृत्ति का 659 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया । विद्यार्थी आन्ध्र प्रदेश, केरल, मैसूर तथा तमिलनाडु राज्य से प्रतिदर्श के रूप में चुने गये । विद्यार्थियों का चयन कला वर्ग, विज्ञान वर्ग तथा व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित वर्ग से किया गया। अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की धार्मिक अभिवृत्ति तथा सामाजिक अभिवृत्ति के मध्य सकारात्मक सह–सम्बन्ध होता है । व्यावसायिक विद्यार्थी अधिक धार्मिक अभिवृत्ति को रखते हैं । जबकि कला तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी तुलनात्मक रूप से कम धार्मिक अभिवृत्ति रखते हैं ।

टण्डन (1967) द्वारा उत्तर प्रदेश के 21 कस्बों के 3917 छात्र–छात्राओं की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया । परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की धार्मिक अभिवृत्ति तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता है । धार्मिक अभिवृत्ति तथा परिवार के आकार के मध्य कोई सम्बन्ध भी नहीं पाया गया । विद्यार्थियों के गृह समायोजन तथा धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया ।

पाण्डेय (1977) ने धार्मिक मूल्य तथा बुद्धि–स्तर के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया । हाईस्कूल के 200 विद्यार्थियों पर यह अध्ययन किया गया । 100 विद्यार्थी उच्च बुद्धिस्तर के लिये गये जबकि 100 विद्यार्थी औसत बुद्धिस्तर के प्रतिदर्श के रूप में चुने गये । अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि औसत बुद्धिस्तर के विद्यार्थियों की अधिक धार्मिक प्रवृत्ति पाई गई।

हेलड तथा देबल (1980) द्वारा नागपुर के बी0ए0 तथा बी0एस0सी0 कक्षा के 60 विद्यार्थियों की धार्मिक–प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया । यह विद्यार्थी कला तथा विज्ञान दोनों वर्गों से लिये गये । परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि कला वर्ग के विद्यार्थी अधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखते हैं, जबकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी तुलनात्मक रूप से कम धार्मिक प्रवृत्ति रखते हैं । सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति कला वर्ग की छात्राओं में पाइ गई, तत्पश्चात विज्ञान वर्ग के छात्रों में धार्मिक प्रवृत्ति पाई गई । तृतीय स्थान पर विज्ञान वर्ग की छात्राओं में तथा चतुर्थ स्तर पर सर्वाधिक कम धार्मिक प्रवृत्ति कला वर्ग के छात्रों में पाई गई ।

कुप्पुस्वामी तथा इयापेन (1968) द्वारा मद्रास के 272 स्कूल शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । स्कूल में दी जा रही नैतिकशिक्षा तथा धार्मिक निर्देशन के प्रति शिक्षकों की सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई ।

वर्मा तथा उपाध्याय (1984) द्वारा रायपुर के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया । अध्ययन का उद्देश्य धार्मिकता तथा सामाजिक दूरी के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना था । अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि उच्च धार्मिकता रखने वाले विद्यार्थियों ने दूसरों के साथ कम सामाजिक दूरी रखी अर्थात मित्रों के साथ अधिक घनिष्ठता रखते हैं ।

करन तथा पंजियार (1987) द्वारा मधुबनी जिले के 300 व्यक्तियों की धार्मिक – अभिवृत्ति का अध्ययन किया । अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि मिथिला के ब्राह्मण सर्वाधिक धार्मिकता की प्रवृत्ति रखते हैं । अधिक आयु के वृद्ध व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखते हैं ।

जोसेफ (1990) द्वारा केरल के वृद्ध तथा युवा व्यक्तियों की धार्मिक प्रवृत्ति का अध्ययन किया । अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि युवाओं की अपेक्षा वृद्धों में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति पाई गई। घर में रहने वाले वृद्ध अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के पाये गये जबकि संस्था–भवन में रहने वाले वृद्ध कम धार्मिक प्रवृत्ति के पाये गये ।

<u>हिन्दू तथा मुस्लिम सम्प्रदाय की धार्मिक–अभिवृत्ति से सम्बन्धित अनुसन्धान:</u>

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत हिन्दू तथा मुस्लिम सम्प्रदाय की धार्मिक–अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना अपेक्षित है । अनेक इस प्रकार के अनुसन्धान विभिन्न मनोवैज्ञानिक द्वारा किये गये हैं और महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त किये हैं। इनका वर्णन इस प्रकार है :–

टण्डन (1967) द्वारा उत्तर-प्रदेश के 21 कस्बों के 3917 छात्र-छात्राओं की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया । परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि सर्वाधिक सकारात्मक धार्मिक अभिवृत्ति हिन्दू सम्प्रदाय के विद्यार्थी रखते हैं । उसके पश्चात द्वितीय स्थान पर मुस्लिम सम्प्रदाय के विद्यार्थी धार्मिक अभिवृत्ति रखते हैं ।

हिन्दूओं और मुस्लिमों की धार्मिकता समाज के लिये व्यापक महत्व रखती है । हिन्दूओं की अस्पृश्यता के प्रति अभिवृत्ति के कारण मुसलमानों के आत्म-सम्मान को धक्का लगा जबकि इस्लाम धर्म में सार्वभौम भ्रातृत्व के होते हुए भी जैसा कि लगभग सभी धर्मों में पाया जाता है कि मात्र उनका धर्म सर्वश्रेष्ठ है, की भावना व्याप्त थी । सिंह (1970) का कथन है कि धर्म, जिसने मानवता को संकीर्ण श्रेणियों में विभाजित कर दिया है, धर्मनिरपेक्षता के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण बाधा है । धर्मनिरपेक्षतावाद भौतिकतावादी तथा धर्म निवारक होने के कारण भारतीय परम्परा तथा संस्कृति के जो पूरी तरह धार्मिकता पर आधारित है, विरूद्ध है । धर्मनिरपेक्षतावाद वास्तव में एक बौद्धिक दृढ़ विश्वास है, लेकिन भारत में इसे राजनीतिक आवश्यकता के रूप में स्वीकार कियागया है ।

ब्रोचा तथा सिंह (1969) द्वारा 150 हिन्दू व 50 मुस्लिम लड़कियों पर अध्ययन किया। धार्मिक विश्वास तथा अस्पृश्यता की भावना का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष रूप में ज्ञात हुआ कि दोनों में धार्मिक विश्वास लगभग समान पाया गया ।

हसन तथा खालिक (1981) द्वारा राँची विश्वविद्यालय के 480 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया । अध्ययन द्वारा स्पष्ट हुआ कि हिन्दुओं की अपेक्षा मुस्लिम विद्यार्थियों ने अधिक धार्मिक प्रवृत्ति प्रकट की । अध्ययन द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि धार्मिकता तथा चिन्ता के मध्य सार्थक सकारात्मक सहसम्बन्ध होता है ।

युनुस (1983) द्वारा 3 (अलीगढ़ जिले के) ग्रामों में 569 परिवार मुखियाओं का अध्ययन किया गया । अध्ययन में पाया गया कि बीमारी को दूर करने के लिये 96.2% हिन्दू मुखियाओं द्वारा सुरक्षात्मक साधन के रूप में देवी-देवताओं की पूजा को स्वीकार किया गया ।

ख़ान (1988) ने मेरठ शहर के 64 मुस्लिम तथा 56 हिन्दूओं का अध्ययन कर यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि दोनों ही सम्प्रदायों में धर्म का विश्वास था । धर्म के विना भय तथा असुरक्षा की भावना निहित रहती है ।

ख़ान तथा अरोरा (1989) द्वारा 200 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया । जिसमें 100 हिन्दू तथा 100 मुस्लिम छात्र थे । अध्ययन के परिणामों द्वारा स्पष्ट हुआ कि आत्मप्रकाशन हिन्दू विद्यार्थियों में मुस्लिम विद्यार्थेयों से अधिक पाया गया । हिन्दुओं में यह भावना बहुसंख्यक समुदाय के शुभ–चिन्तक के रूप में तथा सुरक्षा की भावना के कारण पाई गई ।

<u>धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग के प्रभाव से सम्बन्धित अनुसन्धान:</u>

विभिन्न अनुसन्धानों द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग का प्रभाव पड़ता है । पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति पाई जाती है ।

हसन (1975) द्वारा 160 हिन्दू विद्यार्थियों पर किये गये अध्ययन से स्पष्ट होता है कि धर्म पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

ओझा (1966) द्वारा मुजफ्फरपुर के 200 कॉलिज विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । लगभग सभी विद्यार्थियों में धार्मिक प्रवृत्ति पाई गई तथा ईश्वर में विश्वास रखने वाले पाये गये ।

टण्डन (1967) द्वारा उत्तर प्रदेश के 21 कस्बों के 3917 छात्र–छात्राओं पर अध्ययन किया गया । अध्ययन के परिणामों के रूप में ज्ञात हुआ कि छात्रों की अपेक्षा छात्रायें अधिक धार्मिक प्रवृत्ति की होती हैं । धार्मिक अभिवृत्ति तथा सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक व सामाजिक मूल्यों के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया ।

हेलड तथा देबल (1980) द्वारा नागपुर के बी0ए0 तथा बी0एस0सी0 कक्षा के 60 छात्रों की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि छात्रों की अपेक्षा छात्रायें अधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखती हैं, यद्यपि यह सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ ।

कुलन्दाइवल तथा जैकब (1964) द्वारा केरल प्रदेश के कोटयाम जिले में 14 हाईस्कूल के 7834 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया, जिनमें 5189 छात्र तथा 2645 छात्रायें प्रतिदर्श के रूप में चुनी गईं । अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि लगभग सभी विद्यार्थियों की धर्म के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई । छात्रायें सार्थक रूप से अधिक सकारात्मक धार्मिक अभिवृत्ति रखती हैं ।

हस्नैन तथा अधिकारी (1982) द्वारा पिथौरागढ़ की 20 नर्स, 20 बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं तथा 20 इन्टरमीडिएट कक्षा की छात्राओं की धार्मिक-अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ है कि सर्वाधिक धार्मिक अभिवृत्ति नर्स का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं में पाई गई । द्वितीय स्तर पर सकारात्मक धार्मिक अभिवृत्ति बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं में पाई गई ।

तिवारी, माथुर तथा मोरभट्ट (1980) द्वारा आगरा के 50 पुरूष तथा 40 स्त्रियों की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया । दो आयु स्तर के आधार पर 25 युवा (20-25 वर्ष) तथा 25 वृद्ध (48-53 वर्ष) के दो समूह चुने गये । अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि महिलाओं में पुरूषों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक धार्मिक अभिवृत्ति पाई गई । युवा महिलाओं में वृद्ध महिलाओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक धार्मिक अभिवृत्ति पाई गई ।

हसन तथा खालिक (1981) द्वारा राँची विश्वविद्यालय से सम्बद्ध विभिन्न महाविद्यालयों के 480 विद्यार्थियों की धार्मिक-अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि हिन्दूओं की तुलना में मुसलमान विद्यार्थियों में अधिक सकारात्मक धार्मिक-अभिवृत्ति पाई गई । लिंग का कोई सार्थक प्रभाव धार्मिक-अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है ।

करन तथा पंजियार (1987) द्वारा मधुबनी जिले के 300 व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि पुरूषों की तुलना में स्त्रियाँ अधिक सकारात्मक धार्मिक-अभिवृत्ति रखतीं हैं । यद्यपि सांख्यिकी गाणना द्वारा विश्लेषण करने पर मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । युवाओं की तुलना में वृद्ध व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के पाये गये ।

<u>धार्मिक-अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन:</u>

बी0के0 टण्डन (1967) द्वारा उत्तर प्रदेश के 3917 छात्र-छात्राओं की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । यह विद्यार्थी प्रतिदर्श के रूप में 21 कस्बों से चुने गये थे। अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि धार्मिक-अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है । निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों द्वारा अधिक सकारात्मक धार्मिक - अभिवृत्ति प्रदर्शित की गई ।

कुलन्दाइवल तथा जैकब (1964) द्वारा केरल प्रदेश के कोटयाम जिले में 7834 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया । इन विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में 14 हाईस्कूल विद्यालयों से किया गया । अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि अभिभावकों की शैक्षिक योग्यता तथा विद्यार्थियों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध होता है, यद्यपि इसकी मात्रा काफी कम है । अध्ययन द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि अभिभावकों की आय तथा विद्यार्थियों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है ।

शाह तथा वार्ष्णेय (1982) ने आगरा की मध्यम सामाजिक आर्थिक स्थिति की 100 विवाहित तथा 100 अविवाहित लड़कियों पर अध्ययन किया । औसत सामाजिक आर्थिक स्थिति की इन लड़कियों द्वारा धर्म के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति प्रकट की ।

हसन तथा खालिक (1981) द्वारा राँची विश्वविद्यालय से सम्बद्ध विभिन्न महाविद्यालयों के 480 विद्यार्थियों की धार्मिक-अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि सामाजिक आर्थिक स्तर का कोई सार्थक प्रभाव धार्मिक-अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । यह हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ ।

धार्मिक-अभिवृत्ति तथा व्यक्तित्व:

व्यक्तित्व का प्रभाव अभिवृत्ति विकास पर पड़ता है । एडोर्नो एवं सहयोगियों (1950) ने अभिवृत्तियों एवं व्यक्तित्व के गुणों के सम्बन्ध का अध्ययन किया । इन्होंने प्रयोज्यों को यहूदी विरोधी अभिवृत्ति मापनी एवं जातिवादिता मापनियों को देकर उन पर अपनी अनुक्रिया देने को कहा । इन दोनों ही मापनियों के प्राप्तांकों में उच्च सह-सम्बन्ध (.80) पाया गया । इन प्रयोज्यों को दो समूहों में अर्थात उच्च एवं निम्न अंक प्राप्त करने वाले समूहों में बाँटा गया, तत्पश्चात इन प्रयोज्यों के व्यक्तित्व का विस्तृत अध्ययन व्यक्तित्व मापनियों एवं नैदानिक साक्षात्कार द्वारा किया गया। परिणाम में यह पाया गया कि जातिवादिता मापनी पर उच्च अंक प्राप्त करने वाले व्यक्तियों ने अपनी इच्छाओं को जो समाज द्वारा स्वीकृत थीं, स्वयं स्वीकार न करके दूसरों पर प्रक्षेपित किया। ये परम्परावादी मूल्यों एवं अपरिवर्तनशील व्यक्तित्व वाले थे । इनका पालन-पोषण कठोर अनुशासन में हुआ था । माता-पिता से प्रेम परिस्थिति जन्य रीति से प्राप्त करते थे एवं परिवार द्वारा अनुमोदित व्यवहार करने पर ही माता-पिता से प्रेम मिलता था । इसके विपरीत कम रूढ़िवादी प्रयोज्यों ने अपने माता-पिता के व्यवहारों का उल्लेख करते समय मानव-सुलभ कमियों को भी व्यक्त किया । इनके व्यक्तित्व का संगठन लचीला था । इनका पालन-पोषण प्रेम-पूर्ण

ढंग से हुआ था एवं माता-पिता से बिना शर्त प्रेम प्राप्त होता था ।

यद्यपि एडोर्नो एवं सहयोगियों के उक्त अध्ययन की आलोचना हुई परन्तु इस अध्ययन के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ उसके व्यक्तित्व गुणों से प्रभावित होतीं हैं । कुछ अन्य अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि भिन्न-भिन्न तरीके से सामाजीकरण एवं पालन-पोषण के कारण व्यक्तियों का अलग-अलग व्यक्तित्व निर्मित होता है, जिनसे भिन्न-भिन्न प्रकार की अभिवृत्तियां विकसित होती हैं (वार्सल 1967, ट्राएंडिस एवं ट्राएंडिस 1971) ।

<u>धार्मिक-अभिवृत्ति पर ग्रामीण व शहरी प्रभाव:</u>

हसन (1975) द्वारा 160 हिन्दू विद्यार्थियों पर किये गये अध्ययन से स्पष्ट होता है कि धार्मिक अभिवृत्ति पर ग्रामीण व शहरी प्रभाव नहीं पड़ता है ।

राजामानिकम (1966) ने धार्मिक-अभिवृत्ति का 659 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया । प्रतिदर्श के रूप में विद्यार्थियों का चयन आन्ध्र प्रदेश, केरल, मैसूर तथा तमिलनाडु राज्य से किया गया । अंध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि ग्रामीण व कस्बों के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थी अधिक धार्मिक-प्रवृत्ति के होते हैं ।

पाण्डेय (1976) द्वारा 100 शहरी तथा 97 ग्रामीण विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है ।

करन तथा पंजियार (1987) द्वारा मधुबनी जिले के 300 व्यक्तियों की धार्मिक - अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि शहरी व्यक्तियों की तुलना में ग्रामीण व्यक्ति अधिक सकारात्मक धार्मिक अभिवृत्ति रखते हैं ।

कोर्टे (1980) ने प्रदर्शित किया कि शहरों के निवासी किसी अपरिचित की सहायता कम ही करते हैं । मिलग्राम (1977) ने प्रदर्शित किया कि नगर के लोग अपरिचितों के हाथ मिलाने और बात करने के शिष्टाचार को पसन्द नहीं करते हैं । अनेक अन्य शोध-कर्ताओं ने प्रदर्शित किया है कि बड़े नगरों में रहने वाले लोग अपरिचित व्यक्तियों की ओर ध्यान नहीं देते हैं, अपने तक सीमित रहते हैं और मित्रता के लिये रूचि प्रदर्शित नहीं करते हैं । बड़े शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों की जीवन-शैली में अन्तर होता है । गाँवों तथा कस्बों की जीवन-शैली एक प्रकार की होती है और उसमें अधिक विविधता नहीं होती । इसके विपरीत नगरीय क्षेत्रों में विविध प्रकार की

जीवन शैली के लोग आसपास रहते हैं । बड़े नगरों के एक ही बहुतलीय भवन के आवासों में रहने वाले हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई या सिख हो सकते हैं । समाजवादी, साम्यवादी या कट्टरपंथी हो सकते हैं । इस प्रकार की विविधताओं के बीच निरन्तर रहते-रहते नगरीय लोग अपने से भिन्न जीवन-शैली वालों के प्रति अधिक सहनशील हो जाते हैं और उनके प्रति स्वीकारात्मक अभिवृत्ति विकसित कर लेते हैं ।

धार्मिक-अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास का प्रभाव:

यद्यपि धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास के प्रभाव से सम्बन्धित अनुसन्धानों की पर्याप्त कमी है और प्रस्तुत अनुसन्धान के महत्वपूर्ण निष्कर्ष इस विषय पर प्रकाश डाल सकेंगे । किन्तु फिर भी यह माना जा सकता है कि अन्ध-विश्वास तथा धार्मिक-अभिवृत्ति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि कोई व्यक्ति अत्यधिक उच्च धार्मिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखता है, तब इस बात की अधिक सम्भावना है कि वह अत्यधिक अन्ध-विश्वासी भी हो । ईश्वर से भयभीत धार्मिक व्यक्ति अन्धविश्वासी होते हैं । ऐसे व्यक्ति भाग्यवादी तथा रहस्यमयी शक्तियों पर अत्यधिक विश्वास रखते हैं ।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में यह आश्चर्य का विषय है कि आज भी हमारे समाज में अन्धविश्वास व्याप्त है और हमारे व्यवहार को प्रभावित कर रहा है तथा हमारे सामाजिक समायोजन को भी प्रभावित कर रहा है । सामान्य रूप से अनपढ़ तथा निम्न बौद्धिक स्तर के व्यक्तियों में अन्ध-विश्वास अधिक पाया जाता है ।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि धार्मिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित अनेक अनुसन्धान हुए हैं इन अध्ययनों द्वारा धार्मिक अभिवृत्ति जैसे कठिन विषय को समझने में सरलता हुई है । हिन्दुओं व मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित अनुसन्धानों (टण्डन 1967, ब्रोचा तथा सिंह 1969, हसन व खालिक 1981, युनुस 1983, खान 1988, खान तथा अरोरा 1989) द्वारा दोनों समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर प्रकाश पड़ता है । इसी प्रकार धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग के प्रभाव से सम्बन्धित अनुसन्धानों (हसन 1975, ओझा 1966, टण्डन 1967, हेलड तथा देबल

1980, कुलन्दाइवट व जैकब 1964, हस्नैन तथा अधिकारी 1982, तिवारी, माथुर व मोर भट्ट 1980, हसन तथा खालिक 1981, करन तथा पंजियार 1987) का भी महत्व है । धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तित्व, आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के प्रभाव से सम्बन्धित महत्वपूर्ण अनुसन्धान हुए हैं, किन्तु सम्भवतः यह अत्यन्त रोचक तथ्य है कि धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास का क्या प्रभाव पड़ता है इससे सम्बन्धित अनुसन्धान पिछले कई दशकों से नहीं हो पाये हैं ।

प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा प्राप्त महत्वपूर्ण परिणाम इस कमी को पूरा करेंगे ।

****

तृतीय अध्याय

अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प

अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं का विवेचन करना अपेक्षित है:

(1) जनसंख्या

(2) प्रतिदर्श

(3) अनुसन्धान अभिकल्प

(4) प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का वर्णन

(5) प्रशासन प्रक्रिया

(6) प्रयुक्त सांख्यकीय विधियाँ

(1) <u>**जनसंख्या:**</u> प्रस्तुत अध्ययन उत्तर-प्रदेश के गोरखपुर जनपद में ग्रामीण एवं शहरी हिन्दू तथा मुस्लिम आबादी पर किया गया ।

(2) <u>**प्रतिदर्श:**</u> प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत प्रतिदर्श के रूप में 300 पुरूष तथा 300 स्त्रियों को चुना गया । प्रतिदर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा गोरखपुर जनपद से किया गया । प्रतिदर्श का चयन 25 वर्ष से 40 वर्ष की आयुवर्ग से किया गया । कुल प्रतिदर्श 600 में से 300 हिन्दू तथा 300 मुस्लिम सम्प्रदाय के स्त्रियों तथा पुरूषों को सम्मिलित किया गया। इसी प्रकार 300 शहरी तथा 300 ग्रामीण स्त्रियों तथा पुरूषों का चयन किया गया ।

प्रतिदर्श चयन का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है –
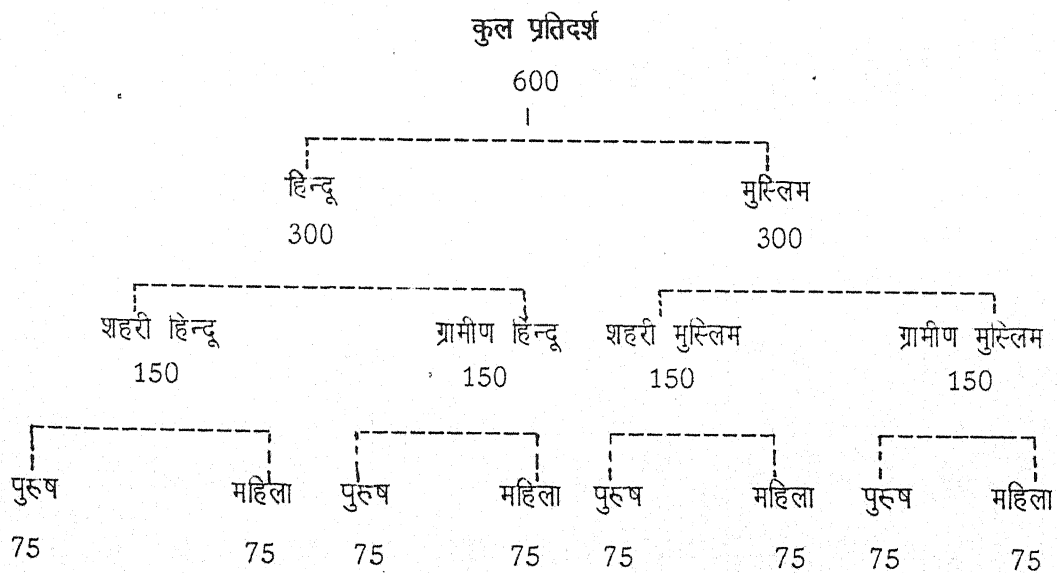
﴾3﴿ **अनुसन्धान अभिकल्पः** प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय ﴾हिन्दू तथा मुस्लिम﴿, व्यक्तित्व प्रकार ﴾अन्तर्मुखी तथा बाहिर्मुखी﴿, अन्धविश्वास, लिंग, सामाजिक आर्थिक स्तर, आवास क्षेत्र ﴾ग्रामीण तथा शहरी﴿ के प्रभाव का अध्ययन करना है । धार्मिक अभिवृत्ति पर उक्त सभी परिवर्तियों का प्रभाव पहले ही पड़ चुका है अथवा घटित हो चुका है । धार्मिक अभिवृत्ति के आधार पर उक्त परिवर्तियों के प्रभाव का अध्ययन किया जाना सम्भव है, अतः प्रस्तुत अनुसन्धान घटनोत्तर अनुसन्धान (Ex-Post-Facto Research) प्रकार का है। स्वतन्त्र परिवर्ती पहले ही प्रभाव डाल चुके हैं, अनुसन्धानकर्ता आश्रित परिवर्ती अर्थात धार्मिक-अभिवृत्ति के आधार पर निरीक्षण कार्य प्रारम्भ करेगा ।

प्रस्तुत अनुसन्धान में स्वतन्त्र तथा आश्रित परिवर्ती इस प्रकार हैं -

स्वतन्त्र परिवर्ती- धर्म सम्प्रदाय ﴾हिन्दू व मुस्लिम﴿ व्यक्तित्व प्रकार ﴾अन्तर्मुखी व बाहिर्मुखी﴿ अन्ध-विश्वास ﴾उच्च व निम्न﴿ सामाजिक-आर्थिक स्तर ﴾उच्च व निम्न﴿ लिंग ﴾पुरूष व महिला﴿ आवास क्षेत्र ﴾ग्रामीण व शहरी﴿

आश्रित परिवर्ती- धार्मिक-अभिवृत्ति ।

﴾4﴿ **प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विवरण-** प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया -

1- धार्मिकता अभिवृत्ति मापनी - डॉ0 एल0आई0 भूषण

2- अन्ध-विश्वास मापनी - डॉ0 एल0एन0 दुबे तथा बी0एम0 दीक्षित

3- अर्न्तमुखी - बहिर्मुखी परीक्षण - डॉ0 जयप्रकाश

4- सामाजिक - आर्थिक स्तर मापनी - डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ

उक्त मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विस्तार से वर्णन इस प्रकार है -

1- **धार्मिकता अभिवृत्ति मापनी-** यह परीक्षण श्री एल0आई0 भूषण, भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर द्वारा मानकीकृत तथा निर्मित किया गया है । परीक्षण के प्रारम्भिक प्रारूप में 77 पद थे, जिनका प्रशासन 100 व्यक्तियों पर किया गया । .80 तथा उससे अधिक विभेद शक्ति रखने वाले 46 पदों को चुना गया तथा शेष 31 पदों को निकाल दिया गया । उच्च तथा निम्न प्राप्तांकों के आधार पर प्रत्येक पद का सार्थक अन्तर काई वर्ग तथा फाई गुणांक की गणना द्वारा ज्ञात किया गया ।

विश्वास के स्तर .01 के आधार पर 6 पद निरस्त कर दिये गये तथा शेष 40 पदों को चुन लिया गया । पुनः 40 पदों का प्रशासन 80 बी0ए0 के विद्यार्थियों पर किया गया । विभेद शक्ति .80 से कम रखने वाले 4 पदों को पुनः निकाल दिया गया तथा अन्तिम शेष 36 पदों को चुना गया । जिनमें 25 पद सकारात्मक तथा 11 पद नकारात्मक थे । फलांकन पद्धति – धार्मिकता मापनी लिकर्ट प्रकार की पाँच बिन्दु मापनी है । प्रत्येक पद के सामने पाँच विकल्प दिये गये हैं – बिल्कुल सहमत, सहमत, कह नहीं सकता, असहमत तथा बिल्कुल असहमत । प्रयोज्य पाँच विकल्पों में से जहां भी प्रतिक्रिया व्यक्त करना चाहता है उसे गोल घेरे के रूप में चिन्हित करेगा। सभी पदों के उत्तर चिन्हित करने के पश्चात सकारात्मक पदों को 5(बिल्कुल सहमत), 4(सहमत), 3(कह नहीं सकता, 2 (असहमत) तथा बिल्कुल असहमत को 1 अंक प्रदान किया जायेगा । नकारात्मक पदों का फलांकन इसके ठीक विपरीत अर्थात बिल्कुल सहमत को 1 अंक, सहमत को 2 अंक, कह नहीं सकता को 3 अंक, असहमत को 4 अंक तथा बिल्कुल असहमत को 5 अंक प्रदान करने के रूप में की जाती है । इस प्रकार कुल 36 पदों में न्यूनतम 36 अंक जबकि उच्चतम 180 अंक प्रयोज्य को मिल सकते हैं ।

<u>परीक्षण की विश्वसनीयता–</u>

अर्द्ध–विच्छेदन विधि द्वारा विश्वसनीयता ज्ञात करने के उद्देश्य से सम तथा विषम पदों के मध्य सहसम्बन्ध .69 प्राप्त हुआ । स्पीयरमैन ब्राउन सूत्र द्वारा विश्वसनीयता गुणांक .82 प्राप्त हुआ ।

पुनर्परीक्षण विधि द्वारा पाँच सप्ताह के अन्तराल के पश्चात् विश्वसनीयता की गणना की गई, जो कि .78 प्राप्त हुई । इस प्रकार प्रस्तुत परीक्षण उच्च विश्वसनीय है ।

<u>परीक्षण की वैधता–</u>

प्रस्तुत परीक्षण की वैधता, 46 धार्मिक व्यक्तियों के समूह तथा इतने ही धर्म के प्रति आस्था नहीं रखने वाले समूह के मध्य प्राप्तांकों द्वारा निर्धारित किया गया । दोनों समूहों के प्राप्तांकों के मध्य "टी" मूल्य 8.47 ज्ञात हुआ, जो कि .001 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित करता है । इससे परीक्षण की पूर्वकथन वैधता सप्ष्ट होती है ।

इसके अतिरिक्त धार्मिक मूल्य मापनी (ऑलपोर्ट, वर्नन तथा लिण्डजे द्वारा निर्मित) द्वारा प्राप्त अंकों तथा प्रस्तुत परीक्षण द्वारा प्राप्त अंकों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना की गई, जो कि सकारात्मक .57 ज्ञात हुआ । प्राप्त सहसम्बन्ध की मात्रा .001 स्तर पर सार्थक है । इससे स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत परीक्षण उच्च रूप से वैध भी है ।

2- <u>अन्ध-विश्वास मापनी-</u> प्रस्तुत मापनी डॉ0 एल0एन0 दुबे तथा डॉ0 बी0एम0 दीक्षित द्वारा मानकीकृत तथा निर्मित की गई है । प्रस्तुत मापनी में अन्ध-विश्वास से सम्बन्धित 40 पद हैं । प्रत्येक पद के तीन विकल्प दिये गये हैं । जिस विकल्प से प्रयोज्य सहमत होता है उसके नीचे लिखे अंक को गोल से घेर देना होता है ।

प्रस्तुत मापनी का मानकीकरण ग्रामीण तथा शहरी 1865 व्यक्तियों पर किया गया यह सभी व्यक्ति सामाजिक-आर्थिक स्थिति के रूप में सभी स्तरों द्वारा चुने गये । इसी प्रकार बुद्धि-स्तर, आयु स्तर, शैक्षिक स्तर तथा व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों से सम्बन्धित थे । इसका वर्णन इस प्रकार है -

तालिका - 1

क्षेत्र	व्यक्तियों की संख्या		योग
	पुरूष	स्त्री	
शहरी	674	427	1102
ग्रामीण	411	352	763
योग	1085	780	1865

तालिका - 2

सामाजिक आर्थिक स्तर	पुरूष	स्त्री	योग
उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर	259	182	441
औसत सामाजिक आर्थिक स्तर	537	345	882
निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर	289	253	542
योग	1085	780	1865

तालिका – 3

शैक्षिक	पुरुष	स्त्री	योग
हाईस्कूल से निम्न	385	246	631
हाईस्कूल व इण्टर	346	277	623
स्नातक तथा उससे अधिक	354	257	611
योग	1085	780	1865

तालिका – 4

बुद्धि–स्तर	पुरुष	स्त्री	योग
औसत से अधिक	304	189	493
औसत	413	342	755
औसत से कम	368	249	617
योग	1085	780	1865

तालिका – 5

आयु–समूह	पुरुष	स्त्री	योग
15 से 25 वर्ष	489	297	786
25 से अधिक	596	483	1079
योग	1085	780	1865

तालिका – 6

व्यक्तित्व प्रकार	पुरुष	स्त्री	योग
अन्तर्मुखी	434	550	984
बहिर्मुखी	651	230	881
योग	1085	780	1865

प्रस्तुत मापनी की विश्वसनीयता स्पीयरमैन ब्राउन सूत्र द्वारा .82 तथा कूडर रिचर्डसन सूत्र द्वारा .84 ज्ञात हुई । मापनी की वैधता रेडिकल कंजरवेटिव अभिवृत्ति मापनी के प्राप्तांकों के साथ ज्ञात सहसम्बन्ध की मात्रा के आधार पर .73 ज्ञात हुई ।

परीक्षण के निर्देश – " आप लोगों को यह परीक्षण दिया जा रहा है । इस परीक्षण का उद्देश्य कुछ बातों के बारे में अपना राय जानना है ।

परीक्षण के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये सभी खानों को भर लीजिये । फिर उसके नीचे दिये गये आदेश को ध्यानपूर्वक पढ़िये । अब पृष्ठ पलटिये । पृष्ठ पर कुछ कथन दिये गये हैं । प्रत्येक कथन के साथ तीन सम्भावित उत्तर भी दिये गये हैं । आप जिस उत्तर से सहमत हों, उसके सामने लिखे हुए अंक को गोले से घेर दीजिये ।

परीक्षण के लिये कोई समय निर्धारित नहीं है, परन्तु आप जल्दी से जल्दी कार्य समाप्त करने का प्रयास कीजिये ।

अब अपना कार्य प्रारम्भ कर दीजिये ।

फलांकन पद्धति – परीक्षण में कुल 40 पद हैं । प्रत्येक पद के तीन विकल्प हैं । प्रयोज्य को किसी एक विकल्प का उत्तर देना है । जो उत्तर उच्च अन्ध–विश्वास से सम्बान्धित होगा उसमें 3 अंक दिये जायेगें । इसी प्रकार जो उत्तर निम्न अन्ध–विश्वास से सम्बान्धित होगा उसमें 2 अंक तथा शून्य अन्ध–विश्वास से सम्बान्धित विकल्प में 1 अंक दिया जायेगा ।

अन्त में सभी प्राप्त अंकों को जोड़कर अन्ध–विश्वास मापनी के प्राप्तांक प्राप्त किये जायेंगे।

3- **अन्तर्मुखी – बहिर्मुखी परीक्षण–**

प्रस्तुत परीक्षण नीमैन–कौहिल–स्टीडिट द्वारा निर्मित परीक्षण का भारतीय वातावरण के अनुरूप हिन्दी अनुवाद है । यह भारतीय अनुकूलन डॉ0 जय प्रकाश द्वारा किया गया है ।

प्रस्तुत परीक्षण में 50 पद हैं, जिनका उत्तर "हाँ" अथवा "नहीं" में देना होता है ।

परीक्षण की विश्वसनीयता – पुनर्परीक्षण विधि द्वारा 100 विद्यार्थियों पर दो महीने के अन्तराल के पश्चात विश्वसनीयता का निर्धारण किया गया । स्नातक स्तर पर .79 विश्वसनीयता तथा स्नातकोत्तर स्तर पर .81 विश्वसनीयता ज्ञात हुई । स्पीयमैन ब्राउन सूत्र द्वारा परीक्षण की अर्द्ध–विच्छेदन विधि द्वारा भी .82 विश्वसनीयता ज्ञात हुई ।

परीक्षण की वैधता–

हिन्दी भारतीय अनुकूलन परीक्षण तथा मौलिक नीमैन–कोहिलस्टीडिट का प्रशासन 75 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों पर किया गया । दोनों परीक्षणों द्वारा प्राप्त अंकों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक .87 प्राप्त हुआ ।

परीक्षण प्रशासन के निर्देश–

" इस परीक्षण में 50 वक्तव्य के सामने "हां" और "नहीं" लिखा हुआ है । कोई भी वक्तव्य अपने आप में सही या गलत नहीं है । पहला वक्तव्य पढ़िये और सोचिये कि यह आपके विषय में ठीक है या नहीं । उदाहरणार्थ पहला वक्तव्य है, " बहुत अधिक आत्मरत (अपने में लीन) रहते हैं ।" आप सोचिये कि आप बहुत अधिक आत्मरत रहते हैं या नहीं । यदि यह वक्तव्य आपके सम्बन्ध में ठीक है अर्थात् आप अत्यधिक आत्मरत रहते हैं तो हाँ के स्थान पर (–) का चिन्ह बना दीजिये और यदि आप समझते हैं कि यह वक्तव्य आपके सम्बन्ध में ठीक नहीं हैं अर्थात आप अधिक आत्मरत नहीं रहते हैं तो "नहीं" के स्थान में (–) चिन्ह लगा दीजिये । बस इसी प्रकार एक–एक वक्तव्य को पढ़ते जाइये और अपने सम्बन्ध में उनकी सत्यता का विचार करते हुए हाँ या नहीं पर चिन्ह लगाते जाइये ।"

फलांकन पद्धति–

फलांकन विधि परीक्षण की काफी सरल है । परीक्षण प्रपत्र के ऊपर "मास्क की" रखकर सही उत्तरों को जोड़ लिया जाये । इसके अतिरिक्त शेष प्राप्तांक गलत प्राप्तांक होंगे। सही तथा गलत प्राप्तांकोंके योग के आधार पर सत्य प्राप्तांक ज्ञात किया जाना है ।

सही प्राप्तांकों में से गलत प्राप्तांकों को घटाकर सत्य प्राप्तांक प्राप्त किय जाता है । +20 से अधिक प्राप्तांक वाला प्रयोज्य अत्यधिक बाहिर्मुखी जबकि −20 से कम अंक वाला प्रयोज्य अत्यधिक अन्तर्मुखी होगा । +10 से +20 के मध्य बहिर्मुखी होगा जबकि −10 से −20 के मध्य अन्तर्मुखी होगा । +10 से −10 के मध्य प्राप्तांक यदि आते हैं, तब ऐसी स्थिति में प्रयोज्य न तो अन्तर्मुखी होगा और न ही बहिर्मुखी होगा अर्थात उभयमुखी होगा ।

इसे हम इस रूप में भी स्पष्ट कर सकते हैं –

प्राप्तांक	व्यक्तित्व प्रकार
+20 से अधिक	अत्यधिक बाहिर्मुखी
+10 से +20	बहिर्मुखी
−10 से +10	उभयमुखी
−20 से −10	अन्तर्मुखी
−20 से कम	अत्यधिक अन्तर्मुखी

4– <u>सामाजिक–आर्थिक स्थिति मापनी:</u>

डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ द्वारा मानकीकृत तथा निर्मित प्रस्तुत परीक्षण दो रूपों में हैं । पहला "फार्म–ए" जो कि शहरी व्यक्तियों की सामाजिक – आर्थिक स्थिति का मापन करता है, जबकि दूसरा "फार्म –बी" जो कि ग्रामीण व्यक्तियों की सामाजिक –आर्थिक स्थिति का मापन करता है।

फार्म ए – शहरी व्यक्तियों के लिये निर्मित किया गया है । प्रारम्भिक प्रशासन 700 विद्यार्थियों पर किया गया था जो कि हाईस्कूल से स्नातक स्तर की कक्षाओं से सम्बन्धित थे । परीक्षण का संशोधित रूप इन्हीं कक्षाओं के 1000 विद्यार्थियों पर किया गया । यह विद्यार्थी आगरा, लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद , मेरठ तथा देहरादून के थे ।

परीक्षण में कुल 20 पद हैं, जिनका प्रशासन सामूहिक अथवा व्यक्तिगत रूप से किया जा सकता है ।

मापनी की विश्वसनीयता की गणना पुनर्परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गई। बीकानेर के 100 विद्यार्थियों पर 10 दिन के अन्तराल के बाद पुर्नपरीक्षण कराया गया सहसम्बन्ध गुणांक .87 प्राप्त हुआ ।

डॉ0 कुप्पुस्वामी तथा पाण्डेय द्वारा निर्मित परीक्षण के परिणामों के साथ सहसम्बन्ध ज्ञात कर वैधता का निर्धारण किया गया । प्राप्त सहसम्बन्ध की मात्रा क्रमशः .57 तथा .89 प्राप्त हुई ।

फलांकन पद्धति अत्यन्त सरल है । प्रयोज्य द्वारा दी गई प्रतिक्रिया के अनुरूप प्रत्येक पद में सूची के अनुसार भारित अंक प्रदान किया जाता है । तत्पश्चात सभी भारित अंकों को जोड़ लिया जाता है । प्राप्त कुल अंकों के आधार पर निम्नलिखित मानक के अनुसार प्रयोज्य की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का निर्धारण किया जाता है -

प्राप्तांक	सामाजिक आर्थिक स्थिति
223 तथा अधिक	उच्च
108 से 222	औसत
107 तथा उससे कम	निम्न

"फार्म बी" ग्रामीण व्यक्तियों के लिये निर्मित मापनी में भी केवल 20 पद हैं ।

परीक्षण की विश्वसनीयता पुनर्परीक्षण विधि द्वारा निर्धारित की गई । 50 ग्रामीणों को एक माह के अन्तराल के पश्चात पुनपरीक्षण किया गया । सहसम्बन्ध गुणांक .85 ज्ञात हुआ । जिससे स्पष्ट होता है कि मापनी विश्वसनीय है ।

प्रस्तुत मापनी के परिणामों का सहसम्बन्ध पारीख तथा त्रिवेदी द्वारा निर्मित ग्रामीण व्यक्तियों के लिये निर्मित सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी के परिणामों के मध्य ज्ञात किया गया । सहसम्बन्ध की मात्रा काफी अधिक .81 ज्ञात हुई जो कि प्रस्तुत मापनी की वैधता प्रदर्शित करती है ।

फलांकन पद्धति काफी सरल है । प्रत्येक प्रयोज्य द्वारा दी गई प्रतिक्रिया पर सूची के आधार पर भारित अंक दिया जाता है । सभी अंकों के योग द्वारा कुल प्राप्तांक

ज्ञात किये जाते हैं । निम्नलिखित मानक के आधार पर सामाजिक आर्थिक स्थिति ज्ञात होती है –

प्राप्तांक	सामाजिक आर्थिक स्थिति
110 तथा उससे अधिक	उच्च
60 से 109	औसत
59 तथा उससे कम	निम्न

5– **प्रशासन प्रक्रिया–**

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न परीक्षणों का प्रशासन किया गया । प्रस्तुत अनुसन्धान कुल 600 व्यक्तियों पर किया गया । 600 व्यक्तियों में से 300 पुरूष तथा 300 महिलाओं का चयन किया गया । कुल 300 पुरूषों में से 150 ग्रामीण पुरूष तथा 150 शहरी पुरूषों का चयन किया गया । इसी प्रकार 300 महिलाओं में से 150 ग्रामीण महिलायें तथा 150 शहरी महिलाओं का प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया । 150 शहरी पुरूषों में से 75 हिन्दू चुने गये जबकि 75 मुस्लिम सम्प्रदाय से चुने गये । 150 ग्रामीण पुरूषों में से 75 हिन्दू सम्प्रदाय के थे जबकि 75 मुस्लिम सम्प्रदाय के थे । 150 ग्रामीण महिलाओं में से 75 महिलायें हिन्दू धर्म से सम्बद्ध थीं जबकि 75 महिलायें मुस्लिम सम्प्रदाय से सम्बद्ध थीं । 150 शहरी महिलाओं में 75 महिलायें शहरी हिन्दू धर्म की चुनी गईं जबकि 75 महिलायें शहरी मुस्लिम सम्प्रदाय की चुनी गईं ।

उक्त सभी पुरूष महिलाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया । अर्थात् अनुसन्धान के उद्देश्य के अनुरूप कोई भी पुरूष अथवा महिला उपयुक्त होने पर उसका चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया । पुरूष तथा महिलाओं का चयन निर्धारित संख्या के अनुरूप ही किया गया । इस बात का भी विशेष ध्यान रखा गया कि सभी का आयु वर्ग 25 वर्ष से 40 वर्ष के मध्य ही हो । इस प्रकार जो भी पुरूष व महिला अपने अनुसन्धान की दृष्टि से उपयुक्त पाये गये उन पर परीक्षणों का प्रशासन किया गया । परीक्षणों का प्रशासन सामान्यतः व्यक्तिगत रूप से ही कराया गया । धार्मिकता अभिवृत्ति मापनी सर्वप्रथम दी गई । सभी निर्देश देते हुए किस

प्रकार उसे पाँच उत्तरों में से किसी एक उत्तर जिससे वह सहमत है उत्तर देना है, समझाया गया। इसी प्रकार अन्धविश्वास मापनी के निर्देश दिये गये । प्रत्येक कथन के तीन सम्भावित उत्तरों में से किसी एक सम्भावित उत्तर को प्रयोज्य को देना है । व्यक्तित्व परीक्षण में भी निर्देश देकर समझाया गया । 50 वक्तव्यों में से यदि वह "हाँ" से सहमत अथवा "नहीं" से सहमत है उसी रूप में प्रतिक्रिया देने के लिये कहा गया । इसी प्रकार सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन भी किया गया ।

300 शहरी पुरूषों तथा महिलाओं पर परीक्षणों का प्रशासन गोरखपुर शहर में किया गया जिनमें से 150 मुस्लिम तथा 150 हिन्दू सम्प्रदाय से सम्बद्ध थे ।

300 ग्रामीण पुरूषों तथा महिलाओं पर परीक्षणों का प्रशासन गोरखपुर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर किया गया । सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी के प्रारूप "ब" का प्रशासन ग्रामीण महिलाओं तथा पुरूषों पर किया गया ।

इस प्रकार उपर्युक्त प्रशासन प्रक्रिया द्वारा विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से प्रदत्त संकलन किया गया ।

6- <u>प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ</u>-

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के अनुरूप प्रदत्त संकलन के पश्चात सांख्यिकीय पद्धतियों को प्रयुक्त किया गया । इनका वर्णन इस प्रकार है -

(अ) <u>मध्यमान</u> (Mean)

मध्यमान को अंकगणेतीय माध्य भी कहा जाता है । जब किसी एक समूह के आंकड़ों अथवा प्राप्त अंकों को जोड़कर समूह की संख्या से विभाजित किया जाता है और इस प्रकार जो राशि प्राप्त होती है, उसी राशि को उस समूह के आंकड़ों का मध्यमान कहा जाता हे । सम्बन्धित समूह के विषय में यह ऐसा अंक होता है, जिसका सम्बन्ध समूह के प्रत्येक आंकड़े से होता है । यह एक ऐसा स्थिर अंक होता है, जो कि पूरे समूह का प्रतिनिधित्व करता है व जिसका स्वरूप अत्यन्त सरल व बोधगम्य होता है तथा इसकी गणना भी सरल होती है ।

(1) अवर्गीकृत प्रदत्त से मध्यमान ज्ञात करना–

सरल शब्दों में औसत अथवा मध्यमान का अर्थ अलग अलग प्राप्तांकों के योगफल (Σ) में उनकी संख्या (N) से भाग देने पर निकाले गये मूल्य से है। विशेष रूप से अवर्गीकृत प्रदत्तों का मध्यमान ज्ञात करने के लिये यही सरल विधि प्रयोग में लाई जाती है । मध्यमान प्राप्त करने की उपर्युक्त विधि को सूत्र का रूप दिया जा सकता है –

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

जहाँ–

M	=	मध्यमान
Σ	=	का योग
X	=	प्राप्तांक
N	=	समूह में सदस्यों की संख्या

(2) वर्गीकृत प्रदत्त से मध्यमान ज्ञात करना–

यद्यपि बड़े समूहों के प्रदत्त को व्यवस्थित किये बिना ही मध्यमान अथवा किसी अन्य केन्द्रवर्ती मान की संगणना की जा सकती है परन्तु यह व्यावहारिक दृष्टि से सुविधाजनक नहीं होता । ऐसे प्रदत्त को व्यवस्थित करके विभिन्न सांख्यिकीय गणनायें प्राप्त करने में सुविधा होती है । वास्तव में व्यवस्थित प्रदत्तसे मध्यमान ज्ञात करने का अर्थ आवृत्ति–वितरण से मध्यमान ज्ञात करना है ।

व्यवस्थित प्रदत्त से मध्यमान ज्ञात करने की दो विधियाँ हैं –

(1) दीर्घ विधि

(2) संक्षिप्त विधि

दीर्घ विधि में वर्गान्तर के मध्य–बिन्दु को उस वर्गान्तर की सभी संख्याओं का प्रतिनिधि मानते हैं । तत्पश्चात् उन मध्य बिन्दुओं को वर्गान्तर की आवृत्तियों से गुणा कर fX मान प्राप्त किया जाता है । सभी fX के योग में आवृत्तियों की संख्या का भाग देकर मध्यमान प्राप्त किया जाता है ।

सूत्र रूप में–

$$M = \frac{\Sigma fX}{N}$$

जहाँ–

M = मध्यमान

Σ = योग

f = आवृत्ति वर्गान्तर की

X = मध्य बिन्दु

N = आवृत्तियों का योग.

संक्षिप्त विधि को कल्पित मध्यमान विधि भी कहते हैं । सूत्र के रूप में हम इसको इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं –

$$M = A.M. + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) i$$

जहाँ–

M = मध्यमान

$A.M.$ = कल्पित मध्यमान

Σ = योग

f = आवृत्ति

d = विचलन

N = आवृत्तियों का योग

i = वर्ग अन्तराल

(ब) <u>प्रामाणिक विचलन–</u> (Standard Deviation)

प्रामाणिक विचलन विचलनशीलता के मापों में सबसे अधिक विश्वसनीय और स्थिर माप समझा जाता है । इसलिये मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानों में इसका बहुत अधिक उपयोग होता है । किसी विशिष्ट न्यादर्श का मध्यमान अपने समग्र के मध्यमान से उसी प्रकार भिन्नता प्रदर्शित करता है, जिस प्रकार किसी समूह के सदस्यों की निजी योग्यतायें समूह केन्द्रीय योग्यता से भिन्नता प्रदर्शित करतीं हैं ।

प्रामाणिक विचलन की गणना करते समय सारी प्रक्रियायें वही होती हैं जो मध्यमान विचलन की गणना में की जाती हैं, अन्तर केवल इतना होता है कि

प्रामाणिक विचलन ज्ञात करते समय सभी विचलनों का वर्ग कर दिया जाता है और फिर उन वर्गो के योग का औसत निकालते हैं । अन्त में उस औसत का वर्गमूल ज्ञात कर लिया जाता है ।

(1) <u>अव्यवस्थित प्रदत्त से प्रामाणिक विचलन ज्ञात करना–</u>

अव्यवस्थित प्रदत्त से प्रामाणिक विचलन निकालने में निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया जाता है –

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

जहाँ–

Σd^2 = विचलनों के वर्ग का योग

N = प्राप्तांकों की संख्या

(2) <u>व्यवस्थित प्रदत्त से प्रामाणिक विचलन ज्ञात करना–</u>

व्यवस्थित प्रदत्त से प्रामाणिक विचलन ज्ञात करने का सूत्र इस प्रकार है –

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}}$$

जिसमें–

fd^2= विचलनों के वर्ग और आवृत्तियों के गुणनफल का योग

N = आवृत्तियों का योग

(स) <u>क्रान्तिक अनुपात</u> (Critical Ratio)

दो बड़े व स्वतन्त्र समूहों के मध्यमानों के अन्तर की जाँच क्रान्तिक अनुपात परीक्षण द्वारा की जाती है । इस परीक्षण के अन्तर्गत दोनों मध्यमानों के अन्तर को दोनों प्रतिदर्शों की अन्तर की मानक त्रुटि से विभाजित करने पर जो मान प्राप्त होता है, वह क्रान्तिक अनुपात(Critical Ratio)कहलाता है । दो मध्यमानों की विश्वसनीयता की जाँच उनके मध्यमान अन्तर तथा उनकी सम्बन्धित अन्तर की

मानक त्रुटि पर आधारित होती है ।

दो बड़े स्वतन्त्र समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के निम्नलिखित चरण होते हैं –

(1) प्रत्येक समूह के मध्यमान की मानक त्रुटि ज्ञात करना ।

(2) दोनों समूहों के अन्तर की मानक त्रुटि ज्ञात करना ।

(3) दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर को अन्तर की मानक त्रुटि से विभाजित करना तथा क्रान्तिक अनुपात के मान को ज्ञात करना ।

(4) दोनों समूहों की अलग–अलग संख्याओं के आधार पर उपयुक्त स्वतंन्त्रता के अंशों को ज्ञात करना ।

(5) "टी" तालिका में सम्बन्धित स्वतंन्त्रता के अंशों पर तथा विश्वास के विभिन्न स्तरों पर सार्थकता की जाँच करना ।

क्रान्तिक अनुपात का सूत्र –

$$C.R. = \frac{M_1 - M_2}{\sigma d}$$

$$\sigma d = \sqrt{\frac{(\sigma_1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma_2)^2}{N_2}}$$

जिसमें –

M_1 = पहले समूह का मध्यमान

M_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

σd = अन्तर की मानक त्रुटि

σ_1 = प्रथम समूह का प्रामाणिक विचलन

σ_2 = द्वितीय समूह का प्रामाणिक विचलन

N_1 = प्रथम समूह की संख्या

N_2 = द्वितीय समूह की संख्या

(द) <u>प्रसरण–विश्लेषण</u> (Analysis of Variance)

प्रसरण–विश्लेषण के मान की अभिव्यक्ति F– –अनुपात (F-Ratio) द्वारा की जाती है । जिस प्रकार टी–परीक्षण का मान दो मध्यमानों के अन्तर तथा उनके अन्तरों की मानक त्रुटि का अनुपात होता है । उसी प्रकार प्रसरण–विश्लेषण में एफ–अनुपात सम्बन्धित समूहों के मध्यमानों की विचलनशीलता तथा समूहों के अन्तर्गत विभिन्न इकाइयों की विचलनशीलता के अनुपात को व्यक्त करता है ।

$$\text{एफ–अनुपात} = \frac{\text{समूहों के मध्य में मध्यमान वर्ग}}{\text{स्वयं समूहों के अन्तर्गत इकाइयों में व्याप्त मध्यमान वर्ग}}$$

इस प्रकार प्रसरण–विश्लेषण विधि एक ऐसी परीक्षण विधि है, जिससे वस्तुनिष्ठ आधार पर एक ऐसा मापदण्ड उपलब्ध हो जाता है, जिसके द्वारा यह ज्ञात हो सकता है कि क्या विभिन्न समूहों में व्याप्त विचलनशीलता, समूहों के अन्तर्गत व्याप्त विचलनशीलता से इतनी अधिक मात्रा में है कि जिससे यह न्यायोचित अनुमान लगाया जा सके कि विभिन्न समूहों के मध्यमान एक समान नहीं हैं और वे अलग–अलग जनसंख्याओं से लिये गये हैं ।

****

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्त–विश्लेषण तथा विवेचन

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर प्रदत्त-विश्लेषण तथा विवेचन निम्नलिखित दो भागों में प्रस्तुत किया गया है –

<u>भाग – "अ"–</u>

हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति, व्यक्तित्व-प्रकार, अन्ध-विश्वास, सामाजिक-आर्थिक स्तर, लिंग तथा आवासीय क्षेत्र (ग्रामीण-शहरी) के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर का अध्ययन, विश्लेषण तथा विवेचन करना ।

<u>भाग – "ब"–</u>

धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम), व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी), अन्ध-विश्वास स्तर(उच्च व निम्न), सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न), लिंग (पुरूष व महिला), आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के प्रभाव का अध्ययन करना तथा प्रदत्त-विश्लेषण व विवेचन करना ।

प्रस्तुत अनुसन्धान के विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर विभिन्न शून्य उपकल्पनायें निर्मित की गई हैं । प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत प्रदत्त-विश्लेषण द्वारा शून्य उपकल्पनाओं की सत्यता की जाँच तथा उनका विवेचन भी किया जाना अपेक्षित है ।

<u>भाग – "अ"</u>

प्रस्तुत भाग- "अ" के अन्तर्गत निम्नलिखित 6 उद्देश्यों से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन किया जायेगा–

1– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों क मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2– अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के अन्ध-विश्वास स्तर का अध्ययन करना ।

4– उच्च तथा निम्न-सामाजिक-आर्थिक स्तर के व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5– पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता-अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6– शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता-अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

1- हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति का अध्ययन-

300 हिन्दुओं तथा 300 मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दोनों सम्प्रदायों के समूह के मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन की गणना की गई। हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। प्राप्त परिणाम इस प्रकार ज्ञात हुए -

तालिका-1-

हिन्दू व मुस्लिम व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक-अनुपात -

धर्म-सम्प्रदाय	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू	300	130.51	16.38	2.82
मुस्लिम	300	134.72	20.11	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका-1 देखने से स्पष्ट होता है कि हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 130.51 है, जबकि मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 134.72 प्राप्त हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दुओं की तुलना में मुस्लिम सम्प्रदाय के व्यक्ति अधिक धार्मिक-प्रवृत्ति के होते हैं। अपने ईश्वर के प्रति अधिक आस्थावान होते हैं। दोनों मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। तालिका-1 देखने से स्पष्ट होता है कि क्रान्तिक अनुपात 2.82 प्राप्त हुआ जो कि 598 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .01 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। .01 स्तर पर सार्थक अन्तर होने के लिये आवश्यक मान 2.58 होना चाहिये जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इस आवश्यक मान से अधिक है।

इस प्रकार प्राप्त परिणामों के आधार पर स्पष्ट होता है कि हिन्दू सम्प्रदाय के व्यक्ति मुस्लिमों की तुलना में अधिक धार्मिक-अभिवृत्ति नहीं रखते हैं एवं दोनों समूहों की धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

बार चित्र – 1

हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय की धार्मिक अभिवृत्ति
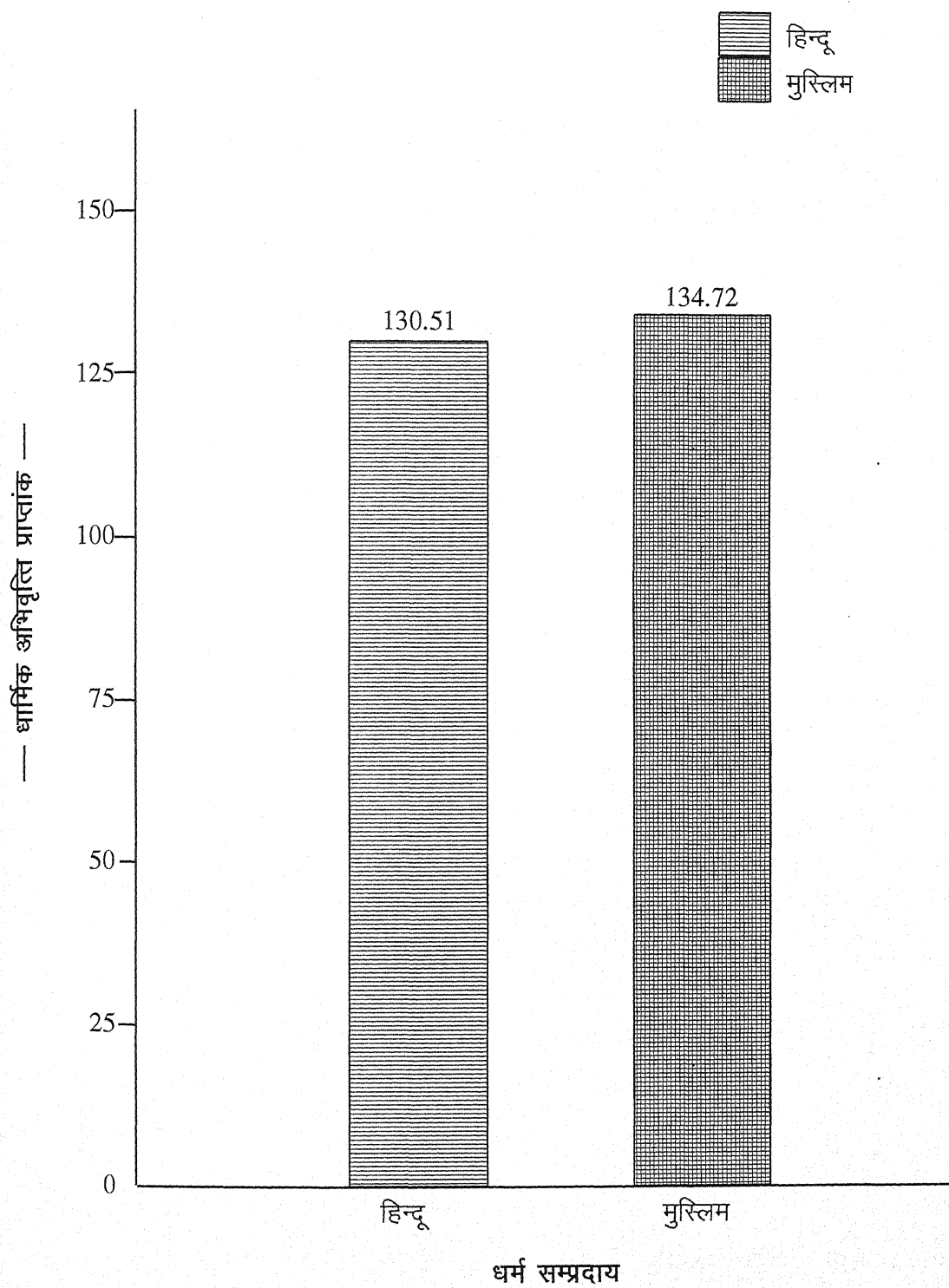
अतः प्रथम शून्य उपकल्पना, "हिन्दूओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा " उक्त परिणामों के आधार पर गलत सिद्ध होती है ।

इसी प्रकार के परिणाम हसन तथा ख़ालिक (1981) द्वारा भी प्राप्त हुए हैं । रांची विश्वविद्यालय के 480 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया । परिणामों में पाया गया कि हिन्दुओं की अपेक्षा मुस्लिम विद्यार्थियों ने अधिक धार्मिक-प्रवृत्ति प्रकट की । बार चित्र-1 द्वारा भी उक्त परिणामों को प्रदर्शित किया गया है ।

2- **अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन-**

104 अन्तर्मुखी तथा 50 बहिर्मुखी व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । दोनों व्यक्तित्व प्रकार समूहों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन की गणना की गई । अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की भी गणना की गई । परिणाम इस प्रकार ज्ञात हुए -

तालिका-2-

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात -

व्यक्तित्व प्रकार	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
अन्तर्मुखी	104	130.66	17.60	2.04
बहिर्मुखी	50	135.92	13.52	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका-2 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान 130.66 है, जबकि बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्तियों की धार्मिक -अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान तुलनात्मक रूप से अधिक 135.92 प्राप्त हुआ है। स्पष्ट होता है कि बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति अधिक धार्मिक-प्रवृत्ति के

बार चित्र – 2

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार की धार्मिक अभिवृत्ति
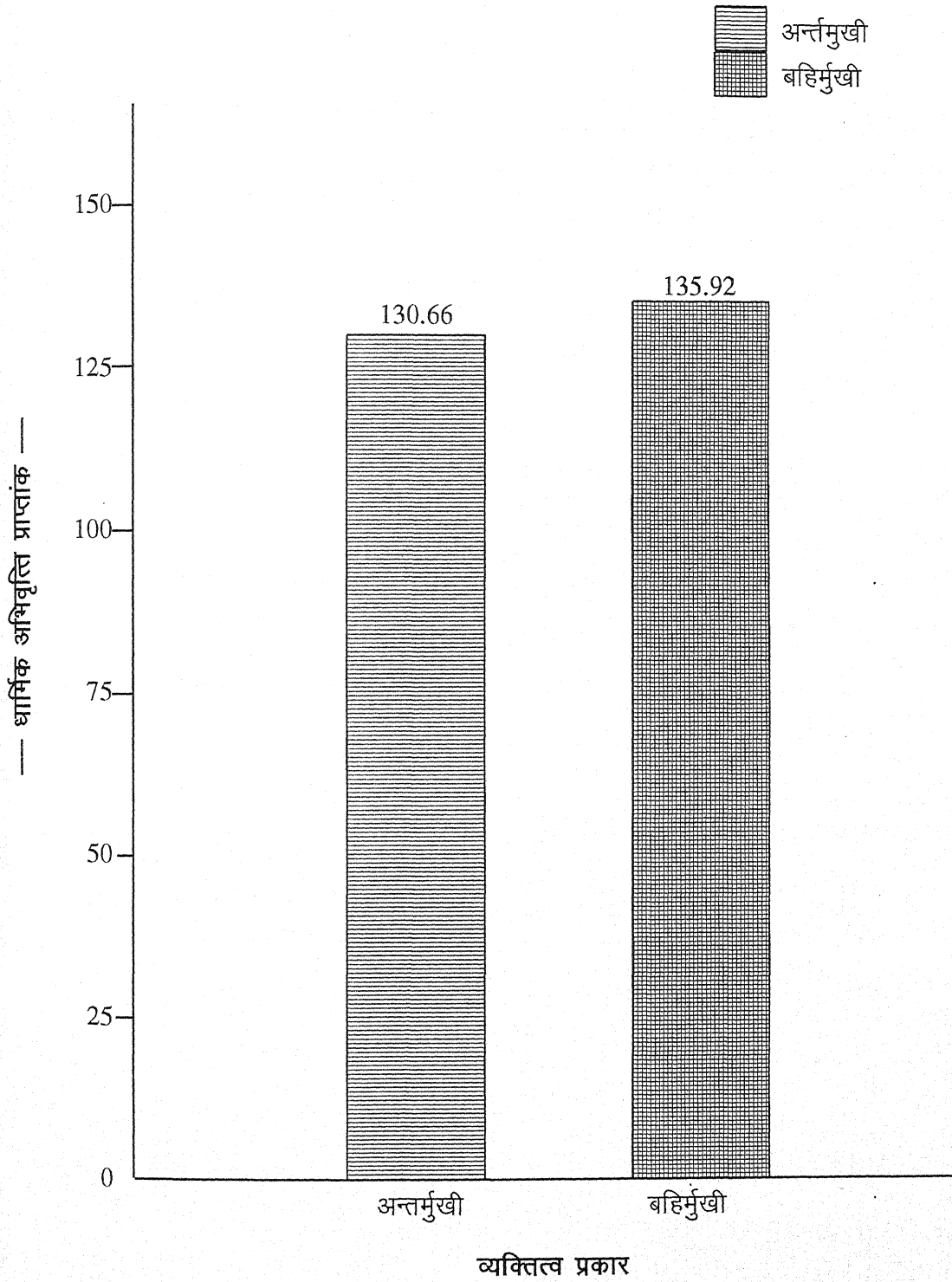
होते हैं । अन्तर्मुखी व्यक्तियों की अपेक्षा बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति ईश्वर के प्रति अधिक आस्था तथा विश्वास रखते हैं । बार चित्र–2 द्वारा इस तथ्य की पुष्टि होती है ।

दोनों व्यक्तित्व प्रकारों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई । क्रान्तिक अनुपात की मात्रा 2.04 प्राप्त हुई । 152 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.96 सेप्राप्त क्रान्तिक अनुपात की मात्रा 2.04 अधिक है, अतः अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व की धार्मिक–अभिवृत्तियों के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर है ।

अतः उक्त परिणामों के आधार पर शून्य उपकल्पना (2), " अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है ।

उपकल्पना (2.1)–

हिन्दू अन्तर्मुखी तथा हिन्दू बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिक–अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । 54 अन्तर्मुखी हिन्दू तथा 26 बहिर्मुखी हिन्दुओं की धार्मिक–आभिवृत्ति प्राप्तांको के मध्य मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई । प्राप्त परिणाम तालिका–3 में प्राप्त हुए ।

तालिका–3–

हिन्दू अन्तर्मुखी तथा हिन्दू बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात –

व्यक्तित्व प्रकार	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू अन्तर्मुखी	54	128.44	16.62	1.72
हिन्दू बहिर्मुखी	26	134.69	14.51	.05 स्तर पर सार्थक नहीं

तालिका–3 देखने से स्पष्ट होता है कि हिन्दू अन्तर्मुखी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 128.44 है, जबकि बहिर्मुखी हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का

मध्यमान 134.69 है । इससे स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी हिन्दुओं की तुलना में बाहिर्मुखी हिन्दुओं में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति होती है । दोनों मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई । तालिका-3 देखने से स्पष्ट होता है कि क्रान्तिक अनुपात 1.72 ज्ञात हुआ है, जो कि 78 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर होने के लिये आवश्यक मान 1.99 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इस आवश्यक मान से कम 1.72 प्राप्त हुआ है । इस प्रकार प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि अन्तर्मुखी तथा बाहिर्मुखी हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है । हिन्दुओं के व्यक्तित्व प्रकार का कोई प्रभाव उनकी धार्मिक-अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । अतः शून्य उपकल्पना (2.1), "हिन्दू अन्तर्मुखी तथा हिन्दू बाहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।" सही सिद्ध होती है ।

<u>उपकल्पना (2.2)-</u>

अन्तर्मुखी तथा बाहिर्मुखी मुस्लिमों के व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिक - अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । 50 अन्तर्मुखी तथा 24 बाहिर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं सार्थक अन्तर जाँच करने के उद्देश्य से क्रान्तिक- अनुपात की गणना की गई । परिणाम इसप्रकार ज्ञात हुए -

<u>तालिका-4-</u>

अन्तर्मुखी तथा बाहिर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक-अनुपात

व्यक्तित्व प्रकार	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
मुस्लिम अन्तर्मुखी	50	133.06	18.31	1.17
मुस्लिम बाहिर्मुखी	24	137.25	12.23	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका-4 देखने से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति

प्राप्तांकों का मध्यमान 133.06 है, जबकि बहिर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान 137.25 ज्ञात हुआ । अतः स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी मुस्लिमों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से बहिर्मुखी मुस्लिम अधिक धार्मिक-प्रवृत्ति के हैं । दोनों मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर जाँच करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया । तालिका-4 का निरीक्षण करने से ज्ञात होता है कि क्रान्तिक अनुपात 1.77 ज्ञात हुआ है, जो कि 72 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करता हे । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर होने के लिये आवश्यक मान 2.00 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इस आवश्यक मान से कम 1.17 प्राप्त हुआ है । इस प्रकार प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है । मुस्लिमों के व्यक्तित्व प्रकार का कोई प्रभाव उनकी धार्मिक - अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । अतः शून्य उपकल्पना (2.2), " मुस्लिम अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।" सही सिद्ध होती है ।

<u>उपकल्पना-2.3)-</u>

हिन्दू तथा मुस्लिम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति का अध्ययन भी किया गया । 54 अन्तर्मुखी हिन्दुओं तथा 50 अन्तर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जिसके परिणाम इस प्रकार ज्ञात हुए -

<u>तालिका-5</u>

हिन्दू अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक-विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात -

व्यक्तित्व प्रकार	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू अन्तर्मुखी	54	128.44	16.62	1.34
मुस्लिम अन्तर्मुखी	50	133.06	18.31	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका – 5 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि हिन्दू अन्तर्मुखी व्यक्तियों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 128.44 है, जबकि अन्तर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 133.06 ज्ञात हुआ । स्पष्ट है कि अन्तर्मुखी मुस्लिमों में धार्मिक प्रवृत्ति तुलनात्मक रूप से अधिक है, जबकि हिन्दू अन्तर्मुखी व्यक्तियों में धार्मिक अभिवृत्ति कम है । हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति के प्राप्तांकों में विचलनशीलता (16.62) कम है, जबकि अन्तर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति के प्राप्तांकों में तुलनात्मक रूप से अधिक विचलनशीलता (18.31) है । दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई । तालिका–5 देखने से स्पष्ट होता है कि क्रान्तिक अनुपात 1.34 प्राप्त हुआ, जो कि 102 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता हे । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर होने के लिये आवश्यक मान 1.98 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान आवश्यक मान से कम 1.34 प्राप्त हुआ । इस आधार पर प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है । हिन्दू एवं मुस्लिमों की अन्तर्मुखता का कोई प्रभाव उनकी धार्मिक–अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । अतः शून्य उपकल्पना (2.3), " हिन्दू अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।" सही सिद्ध होती है ।

<u>उपकल्पना–(2.4)–</u>

इसी प्रकार हिन्दू बाहिर्मुखी तथा मुस्लिम बाहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिक–अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । 26 बाहिर्मुखी हिन्दुओं तथा 24 बाहिर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं सार्थक अन्तर जाँच करने के उद्देश्य से "टी" मूल्य की गणना की गई । प्राप्त परिणाम तालिका–6 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

<u>तालिका–6</u>

बहिर्मुखी हिन्दुओं एवं मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं "टी" मूल्य–

व्यक्तित्व प्रकार	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	"टी" मूल्य
हिन्दू बहिर्मुखी	26	134.69	14.51	.67
मुस्लिम बाहिर्मुखी	24	137.25	12.23	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं ।

तालिका-6 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि हिन्दू बाहिर्मुखी व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान 134.69 ज्ञात हुआ, जबकि बाहिर्मुखी मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति मध्यमान 137.25 ज्ञात हुआ । इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दू बहिर्मुखी व्यक्तियों की अपेक्षा बाहिर्मुखी मुस्लिम अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के हैं । परन्तु दोनों समूहों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से "टी" मूल्य की गणना की गई। तालिका-6 से स्पष्ट है कि "टी" मूल्य .67 प्राप्त हुआ, जो कि 48 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 2.01 होना चाहिये, जबकि प्राप्त "टी" मूल्य इससे कहीं कम .67 प्राप्त हुआ है । इस प्रकार प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि बाहिर्मुखी हिन्दुओं एवं मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है । दोनों समूहों की धार्मिक-अभिवृत्ति समान है । अतः शून्य उपकल्पना (2.4), "हिन्दू बहिर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।" सही सिद्ध होती है ।

3- <u>हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के अन्ध-विश्वास का धार्मिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन-</u>

हिन्दू तथा मुस्लिम सम्प्रदाय के व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । अन्ध-विश्वास प्राप्तांकों के आधार पर चतुर्थांक (Q_1) तथा चतुर्थांक तीन (Q_3) की गणना की गई जिसके आधार पर उच्च एवं निम्न अन्ध-विश्वास व्यक्तियों का निर्धारण किया गया । 46 तथा उससे कम अन्ध-विश्वास प्राप्तांक के व्यक्ति को निम्न अन्धविश्वास का माना गया, जबकि 66 तथा उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को उच्च अन्ध-विश्वास का व्यक्ति माना गया।

अन्ध-विश्वास का हिन्दू तथा मुस्लिम व्यक्तियों पर तुलनात्मक अध्ययन किया । अन्ध-विश्वास प्राप्तांक के आधार पर दोनों सम्प्रदायों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक-अन्तर जानने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसके परिणाम तालिका-7 में इस प्रकार ज्ञात हुए -

तालिका-7-

हिन्दू तथा मुस्लिम सम्प्रदाय के अन्ध-विश्वास प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात -

सम्प्रदाय	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू	300	59.19	14.94	3.26 .01 स्तर पर सार्थक अन्तर
मुस्लिम	300	55.47	12.98	

तालिका-7 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि हिन्दुओं का अन्ध-विश्वास प्राप्तांक मध्यमान 59.19 है, जबकि मुस्लिमों का मध्यमान 55.47 ज्ञात हुआ है । मुस्लिमों की अपेक्षा हिन्दुओं में अधिक अन्ध-विश्वास ज्ञात होता है । दोनों सम्प्रदायों के अन्धविश्वास प्राप्तांक-मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 3.26 प्राप्त हुआ । प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 3.26 दोनों समूहों के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है । 598 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 2.58 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इससे अधिक 3.26 प्राप्त हुआ है, अतः स्पष्ट है कि हिन्दू तथा मुस्लिम सम्प्रदाय के व्यक्तियों के अन्ध-विश्वास के मध्य सार्थक अन्तर है । इस प्रकार शून्य उपकल्पना (3), "हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के अन्ध-विश्वास के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।" गलत सिद्ध होती है ।

उपकल्पना–(3.1)–

82 उच्च अन्धविश्वास ग्रस्त हिन्दुओं तथा 65 निम्न अन्ध–विश्वास ग्रस्त हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दोनों समूहों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं सार्थक अन्तर जानने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जो कि इस प्रकार ज्ञात हुई –

तालिका–8–

उच्च व निम्न अन्ध–विश्वास ग्रस्त हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात–

अन्धविश्वास स्तर	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
उच्च अन्धविश्वास ग्रस्त हिन्दू	82	132.73	14.49	2.35
निम्न अन्धविश्वास ग्रस्त हिन्दू	65	126.29	17.92	.05 स्तर पर साथक अन्तर

तालिका–8 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि उच्च अन्ध–विश्वास ग्रस्त हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक (132.73) है, जबकि तुलनात्मक रूप से निम्न अन्धविश्वासग्रस्त हिन्दुओं की धार्मिक–प्रवृत्ति कम (126.29) है । दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 2.35 प्राप्त हुई । 145 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.96 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात इससे अधिक 2.35 प्राप्त हुआ है, अतः स्पष्ट होता है कि अन्धविश्वास का सार्थक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति पर पड़ता है । हिन्दुओं में अधिक अन्ध–विश्वासी व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखते है । इस प्रकार शून्य उपकल्पना (3.1), "उच्च अन्धविश्वासी हिन्दुओं तथा निम्न अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।" गलत सिद्ध होती है ।

उपकल्पना–(3.2)–

उच्च अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों तथा निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों के मध्य धार्मिक –

अभिवृत्ति के मध्य भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया । दोनों समूहों के मध्यमान प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई ।

<u>तालिका–9</u>

उच्च एवं निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात –

मुस्लिमों का अन्धाविश्वास स्तर	कुल संख्या	धार्मिक अभिवृत्ति मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
उच्च	64	127.42	25.60	2.98
निम्न	94	138.08	17.17	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका–9 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि उच्च अन्धाविश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक प्रवृत्ति कम मात्रा में (127.42) है, जबकि तुलनात्मक रूप से निम्न अन्धाविश्वासी मुस्लिम अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (138.08) रखते हैं । उच्च अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति की विचलनशीलता काफी अधिक है (25.60) जबकि निम्न अन्धाविश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के परिणाम तुलनात्मक रूप से अधिक स्थिर है (17.17) । दोनों समूहों की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर की गणना के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया। क्रान्तिक अनुपात 2.98 ज्ञात हुआ, जो कि .01 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रदर्शित करता है। 156 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये 2.58 होना चाहिये, जबकि तालिका–9 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इस आवश्यक मान से अधिक 2.98 प्राप्त हुआ है । अतः स्पष्ट है कि उच्च अन्ध–विश्वासी तथा निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । शून्य उपकल्पना (3.2), "उच्च अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों तथा निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा। "गलत सिद्ध होती है ।

उपकल्पना-(3.3)-

उच्च अन्धविश्वासी हिन्दुओं एवं मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया । इस उद्देश्य से दोनों समूहों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच के लिये क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई ।

तालिका-10

उच्च अन्धविश्वासी हिन्दुओं एवं मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात -

धार्मिक सम्प्रदाय	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
उच्च अन्धविश्वासी हिन्दू	82	132.73	14.49	1.48
उच्च अन्धविश्वासी मुस्लिम	64	127.42	25.60	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका-10 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि उच्च अन्ध-विश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक प्रवृत्ति (127.42) की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से उच्च अन्धविश्वासी हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति (132.75) अधिक सकारात्मक है । यद्यपि उच्च अन्धविश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति की विचलनशीलता (25.60) अधिक है, जबकि हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांक अधिक स्थिर (14.49) है । दोनों समूहों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जो कि 1.48 प्राप्त हुई । प्राप्त क्रान्तिक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक अन्तर स्पष्ट नहीं करता है । 144 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.96 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 1.48 इससे कम प्राप्त हुआ है, अतः स्पष्ट है कि उच्च अन्धविश्वास का हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । शून्य उपकल्पना (3.3), "उच्च अन्धविश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य

धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" सही सिद्ध होती है ।

उपकल्पना-(3.4)-

निम्न अन्ध-विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक आभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । निम्न अन्ध-विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक आभिवृत्ति के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर की गणना के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया । प्राप्त परिणाम तालिका-11 में इस प्रकार ज्ञात हुए-

तालिका-11

निम्न अन्धविश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात -

धर्म सम्प्रदाय	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
निम्न अन्धविश्वासी हिन्दू	65	126.29	17.92	4.15
निम्न अन्धविश्वासी मुस्लिम	94	138.08 ✓	17.17	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका-11 का निरीक्षण करने से ज्ञात होता है कि निम्न अन्धविश्वासी हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति (126.29) तुलनात्मक रूप से कम सकारात्मक है, जबाके निम्न अन्ध-विश्वासी मुस्लिम अधिक धार्मिक - प्रवृत्ति के (138.08) हैं । दोनों समूहों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 4.15 प्राप्त हुई । 157 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर सार्थक अन्तर के लिये .01 स्तर पर आवश्यक मान 2.61 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इससे अधिक 4.15 प्राप्त हुआ हैं, अतः निम्न अन्ध-विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर हैं । शून्य उपकल्पना (3.4), "निम्न अन्ध-विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है ।

4-- <u>उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक-स्तर के व्यक्तियों के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन-</u>

सामाजिक-आर्थिक स्तर का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? यह जानने के उद्देश्य से 150 उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति के व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति तथा 174 निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर का निर्धारण परीक्षण मानकों के आधार पर किया गया । दोनों समूहां के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई ।

<u>तालिका-12-</u>

उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के समूहों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना -

सामाजिक-आर्थिक स्तर	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
उच्च	150	136.05	17.83	2.31
निम्न	174	131.36	18.65	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका-12 देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक (136.5) है, जबकि तुलनात्मक रूप से निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित व्यक्ति कम धार्मिक प्रवृत्ति (131.36) के होते हैं । इसका कारण यह है कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के व्यक्ति अपनी रोजी-रोटी की चिन्ता से अधिक ग्रस्त होने के कारण अपने व्यवसाय में अधिक व्यस्त होते हैं, इसके विपरीत उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के व्यक्ति सम्पन्न होते हैं और धार्मिक विषयों में अधिक भाग लेते हैं । दोनों समूहों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया जो कि 2.31 प्राप्त हुआ । 3 22 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर सार्थक अन्तर के लिये .05 स्तर पर आवश्यक मान 1.96 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान

बार चित्र – 3

उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति
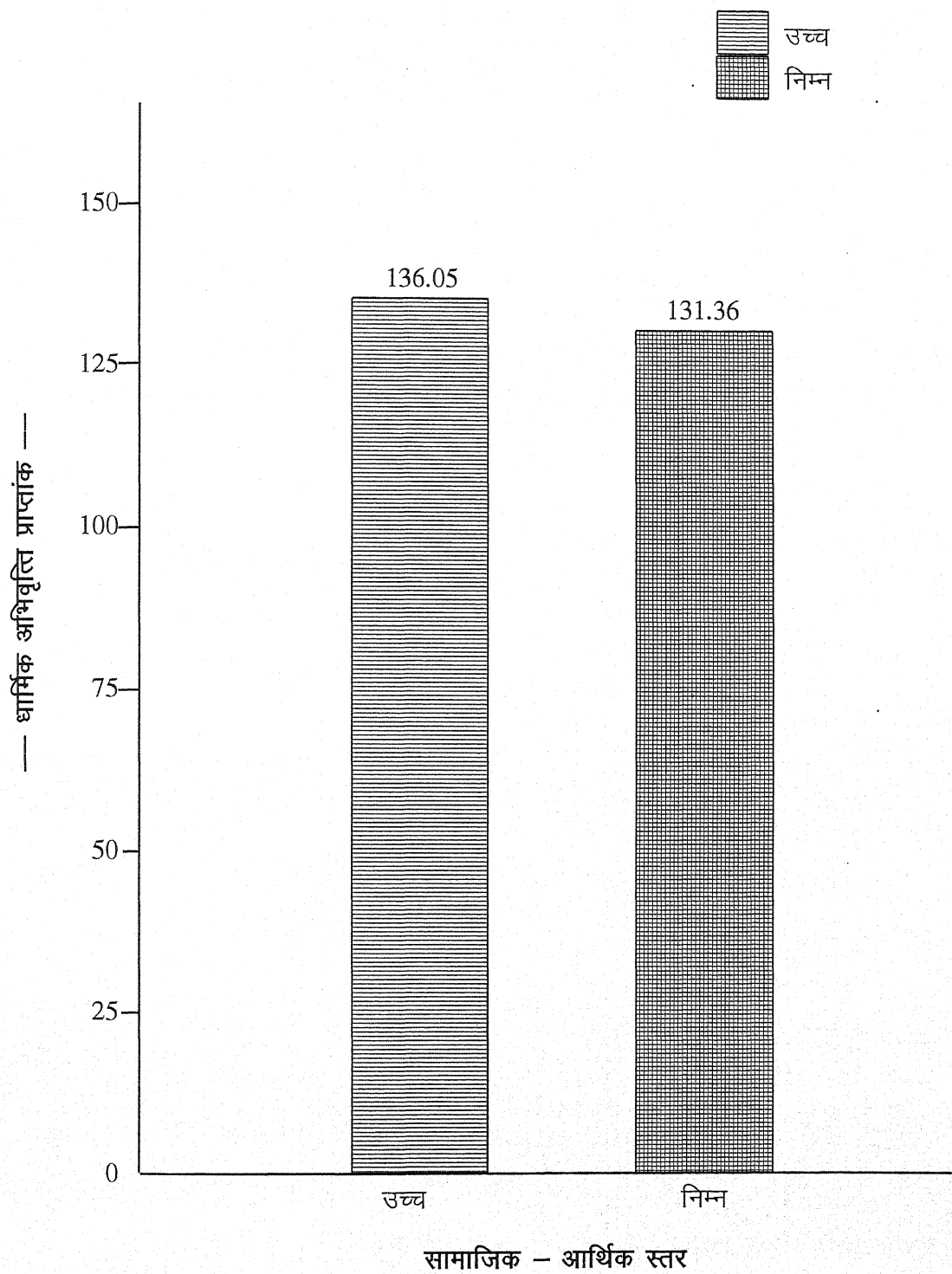
इससे अधिक 2.31 प्राप्त हुआ है, अतः स्पष्ट है कि सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव धार्मिक-अभिवृत्ति पर पड़ता है। शून्य उपकल्पना (4), "उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है।

उपकल्पना-(4.1)-

हिन्दुओं के उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । 76 उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के हिन्दुओं एवं 91 निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया ।

तालिका-13

उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात -

सामाजिक-आर्थिक स्तर	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
उच्च	76	133.67	17.25	1.85 .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं
निम्न	91	128.79	16.63	

तालिका-13 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक(133.67) है, जबकि इसके विपरीत निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति (128.79) तुलनात्मक रूप से कम है, दोनों समूहों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जो कि 1.85 ज्ञात हुआ। 165 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.98 होना चाहिये। जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 1.85 इस आवश्यक मान से कम है, अतः स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दुओं के मध्य .05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शून्य उपकल्पना (4.1), "उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के

हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।" सही सिद्ध होती है ।

उपकल्पना–(4.2)–

इसी प्रकार उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया । उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई । प्राप्त परिणाम तालिका–14 में इस प्रकार प्राप्त हुए –

तालिका–14–

उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व क्रान्तिक अनुपात –

सामाजिक आर्थिक स्तर	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
उच्च	74	138.50	18.08	1.41 .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं
निम्न	83	134.19	20.28	

तालिका–14 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च सामाजिक– आर्थिक स्तर के 74 मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति (138.50) की मात्रा अधिक है, जबकि निम्न सामाजक –आर्थिक स्तर के 83 मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति (134.19) की मात्रा तुलनात्मक रूप से कम है । अतः उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के मुस्लिम अधिक धार्मिक–प्रवृत्ति के हैं । दोनों समूहों की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर की जांच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 1.41 प्राप्त हुई । 155 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.98 होना चाहिये । जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 1.41 इस आवश्यक मान से कम है, अतः उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर .05 स्तर पर नहीं है । शून्य

उपकल्पना (4.2), उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता आभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" सही सिद्ध होती है ।

उपकल्पना-(4.3)-

उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई ।

तालिका-15

उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दुओं व मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात -

सामाजिक आर्थिक स्तर	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर	76	133.67	17.25	1.68
मुस्लिम उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर	74	138.50	18.08	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका-15 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि 74 उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति (138.50) आधेक है, जबकि 76 उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दुओं की धार्मिक-आभिवृत्ति (133.67) तुलनात्मक रूप से कम है । अतः स्पष्ट है कि हिन्दुओं की अपेक्षा उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के मुस्लिमों में अधिक धार्मिक-अभिवृत्ति होती है। दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 1.68 प्राप्त हुई । 148 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.98 होना चाहिये जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इससे कम 1.68 प्राप्त हुआ है । अतः दोनों समूहों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है । शून्य उपकल्पना (4.3), "उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के

हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" सही सिद्ध होती है ।

<u>उपकल्पना–(4.4)–</u>

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक–अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया । इस उद्देश्य से दोनों समूहों की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई । परिणाम इस प्रकार ज्ञात हुए –

<u>तालिका–16</u>

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दुओं व मुस्लिमों की धार्मिक–आभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व क्रान्तिक अनुपात–

सामाजिक आर्थिक स्तर	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर हिन्दू	91	128.79	16.63	1.91
निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर मुस्लिम	83	134.19	20.28	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका–16 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर से सम्बन्धित 83 मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति (134.19) अधिक है, जबकि 91 निम्न सामाजिक आर्थिक सतर से सम्बान्धित हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति (128.79) तुलनात्मक रूप से कम है। दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 1.91 प्राप्त हुआ । 173 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर साथक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.97 होना चाहिये । जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इसआवश्यक मान से कम 1.91 प्राप्त हुआ है । अतः निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धिक हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य .05 स्तर पर सार्थक

अन्तर नहीं है । इस प्रकार शून्य उपकल्पना (4.4), "निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" नहीं सिद्ध होती है ।

5– **धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग का प्रभाव–**

धार्मिक–अभिवृत्ति पर लिंग का प्रभाव जानने के उद्देश्य से पुरूष तथा महिलाओं की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया । दोनों समूहों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व सार्थक अन्तर जानने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई । प्राप्त परिणाम तालिका–17 में दिये जा रहे हैं –

तालिका–17

पुरूष तथा स्त्रियों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात–

लिंग	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विलचन	क्रान्तिक अनुपात
पुरूष	300	134.11	17.22	1.98
स्त्री	300	131.13	19.52	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका–17 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि पुरूष अधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखते (134.11) हैं, जबकि स्त्रियाँ कम धार्मिक प्रवृत्ति (131.13) रखती हैं। दोंनों समूहों की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 1.98 प्राप्त हुआ । 598 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.96 होना चाहिये । जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 1.98 इस आवश्यक मान से अधिक है, अतः पुरूष एवं स्त्रियों की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर हैं । शून्य उपकल्पना (5), "पुरुष तथा महिलाओं के धार्मिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है ।

उपकल्पना–(5.1)–

हिन्दू पुरूष तथा महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य तुलनात्मक अध्ययन कर

बार चित्र – 4

पुरुषों व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति
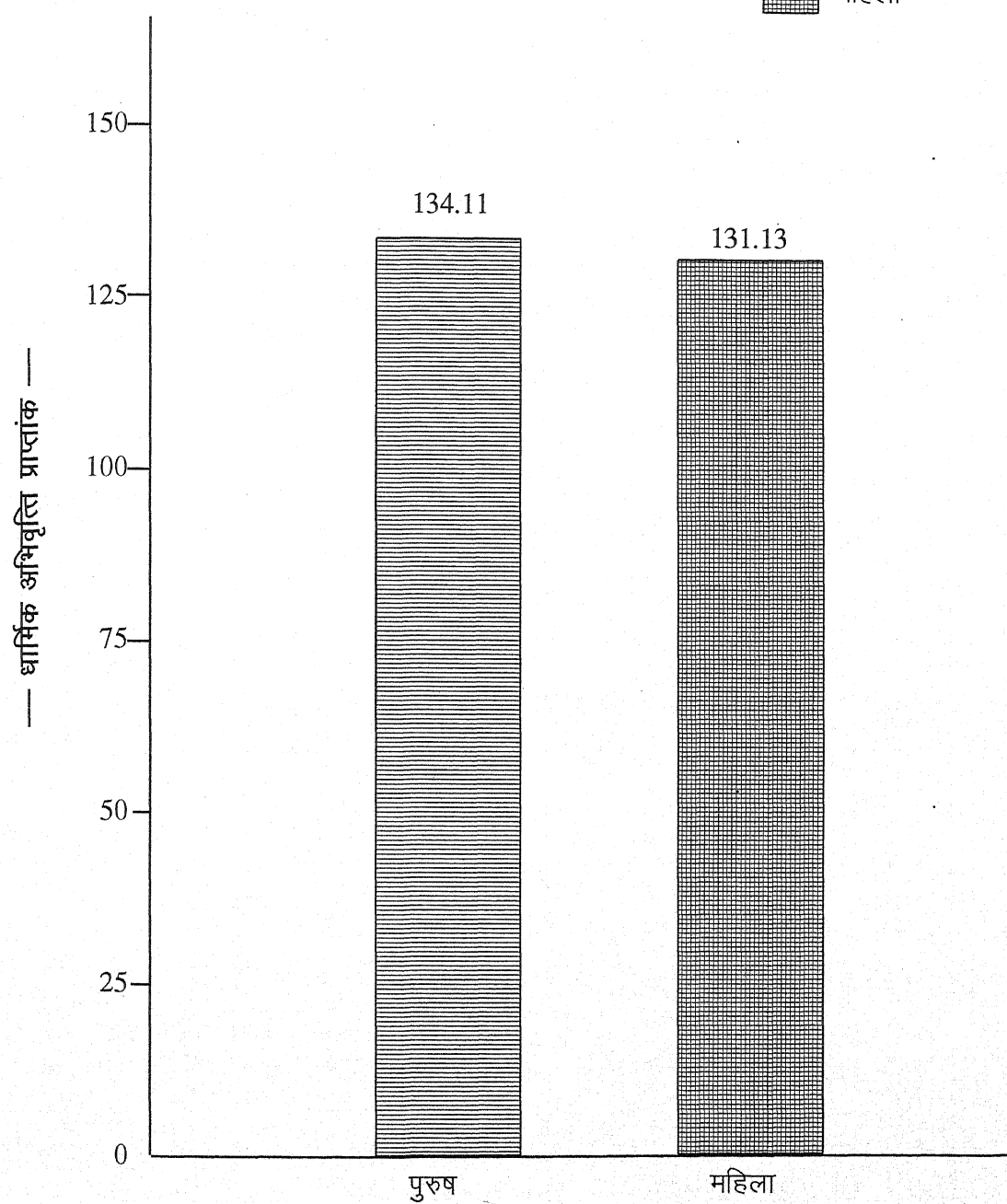
महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त हुए । 150 हिन्दू पुरूषों तथा 150 हिन्दू महिलाओं की धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई ।

तालिका-18

हिन्दू पुरुष तथा महिलाओं की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की गणना-

हिन्दू	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
पुरूष	150	128.21	16.72	
महिला	150	132.83	15.70	2.47 .05 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका-18 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि हिन्दू महिलाओं की धार्मिक-अभिवृत्ति (132.83) अधिक है, जबकि हिन्दू पुरूषों की धार्मिक अभिवृत्ति (128.21) तुलनात्मक रूप से कम है । दोनों समूहों की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर जानने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जो कि 2.47 ज्ञात हुई । 298 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर सार्थक अन्तर के लिये .05 स्तर पर आवश्यक मान 1.96 होना चाहिये। जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान इस आवश्यक मान से अधिक प्राप्त (2.47) हुआ है, अतः स्पष्ट है कि हिन्दू पुरूषों तथा महिलाओं की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर है । शून्य उपकल्पना (5.1), "हिन्दू पुरुष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।" गलत सिद्ध होती है ।

उपकल्पना-(5.2)-

मुस्लिम पुरूष तथा महिलाओं की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दोनों समूहों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणेक विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई प्राप्त परिणाम

तालिका–19 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका–19

मुस्लिम पुरुष तथा महिलाओं की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात –

मुस्लिम धार्मिक अभिवृत्ति	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
पुरुष	150	140.01 ✓	15.62	4.72
महिला	150	129.44	22.58	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर ✓

तालिका–19 का निरीक्षण करने से ज्ञात होता है कि मुस्लिम पुरुष अधिक धार्मिक अभिवृत्ति (140.01) रखते हैं, जबकि तुलनात्मक रूप से महिला मुस्लिम कम धार्मिक–अभिवृत्ति (129.44) रखतीं हैं । मुस्लिम पुरुषों के धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों में अधिक स्थिरता है 15.62), जबकि मुस्लिम महिलाओं के धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों में अत्यधिक विचलनशीलता (22.58) है । दोनों समूहों के धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्‌देश्य से क्रान्तिक अनुपात 4.72 प्राप्त हुआ । 298 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 2.59 होना चाहिये । जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 4.72 इससे अधिक प्राप्त हुआ है, अतः मुस्लिम पुरुष तथा महिलाओं की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है । शून्य उपकल्पना (5.2), "मुस्लिम पुरुष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है ।

उपकल्पना–(5.3)–

हिन्दू पुरुषों तथा मुस्लिम पुरुषों के मध्य धार्मिक–अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । हिन्दू पुरुषों तथा मुस्लिम पुरुषों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं सार्थक अन्तर की जाँच के उद्‌देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई ।

तालिका–20

हिन्दू एवं मुस्लिम पुरूषों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात –

पुरूषों की धार्मिक अभिवृत्ति	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू	150	128.21	16.72	6.31
मुस्लिम	150	140.01	15.62	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका–20 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि हिन्दू पुरूषों की धार्मिक अभिवृत्ति (128.21) अत्यधिक कम है। जबकि तुलनात्मक रूप से मुस्लिम पुरूषों की धार्मिक आभिवृत्ति (140.01) अधिक है। इससे स्पष्ट है कि मुस्लिम पुरुष अत्यधिक धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर जानने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 6.31 प्राप्त हुआ। 298 स्वतनत्रता के अंश के आधार पर .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 2.59 होना चाहिये, जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 6.31 इस आवश्यक मान से काफी अधिक है, अतः हिन्दू पुरुषों की धार्मिक अभिवृत्ति तथा मुस्लिम पुरुषों की धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर .01 स्तर पर है। शून्य उपकल्पना (5.3), "हिन्दू पुरुष तथा मुस्लिम पुरुषों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है।

उपकल्पना–(5.4)–

हिन्दू तथा मुस्लिम महिलाओं के मध्य धार्मिक – अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। दोनों समूह की महिलाओं की धार्मिक–आभवृत्ति प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं सार्थक अन्तर की जांच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई।

तालिका-21

हिन्दू तथा मुस्लिम महिलाओं के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात-

महिला	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू	150	132.83	15.70	1.51
मुस्लिम	150	129.44	22.58	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका-21 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि हिन्दू महिलायें अधिक धार्मिक-प्रवृत्ति (132.83) की हैं, जबकि मुस्लिम महिलायें कम धार्मिक प्रवृत्ति (129.44) की है। हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 1.51 प्राप्त हुआ। 298 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.98 होना चाहिये। जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 1.51 इस आवश्यक मान से कम प्राप्त हुआ है, अतः स्पष्ट है कि हिन्दू एवं मुस्लिम महिलाओं की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य .05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । शून्य उपकल्पना (5.4), "हिन्दू महिलाओं तथा मुस्लिम महिलाओं के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" सही सिद्ध होती है ।

6- **शहरी एवं ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति-**

शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से अध्ययन किया गया । साथ ही शहरी व ग्रामीण हिन्दुओं व मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया ।

300 शहरी तथा 300 ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई ।

तालिका–22

शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात –

धार्मिक–अभिवृत्ति	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
शहरी	300	133.82	19.15	1.61
ग्रामीण	300	131.41	17.66	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका–22 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि शहरी व्यक्तियों में अधिक धार्मिक–अभिवृत्ति (133.82) पाई गई । जबकि ग्रामीण व्यक्तियों में तुलनात्मक रूप से कम धार्मिक–अभिवृत्ति (131.41) पाई गई । दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर जानने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि 1.61 प्राप्त हुआ। 598 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.97 होना चाहिये जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 1.61 इस आवश्यक मान से कम प्राप्त हुआ है, अतः शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं हैं। शून्य उपकलपना(6), "शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" सही सिद्ध होती है ।

उपकल्पना–(6.1)–

शहरी हिन्दुओं तथा ग्रामीण हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया । शहरी तथा ग्रामीण हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की. गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका 23 में इस प्रकार ज्ञात हुए –

तालिका–23–

शहरी तथा ग्रामीण हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्यमान,

बार चित्र – 5

ग्रामीण व शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति
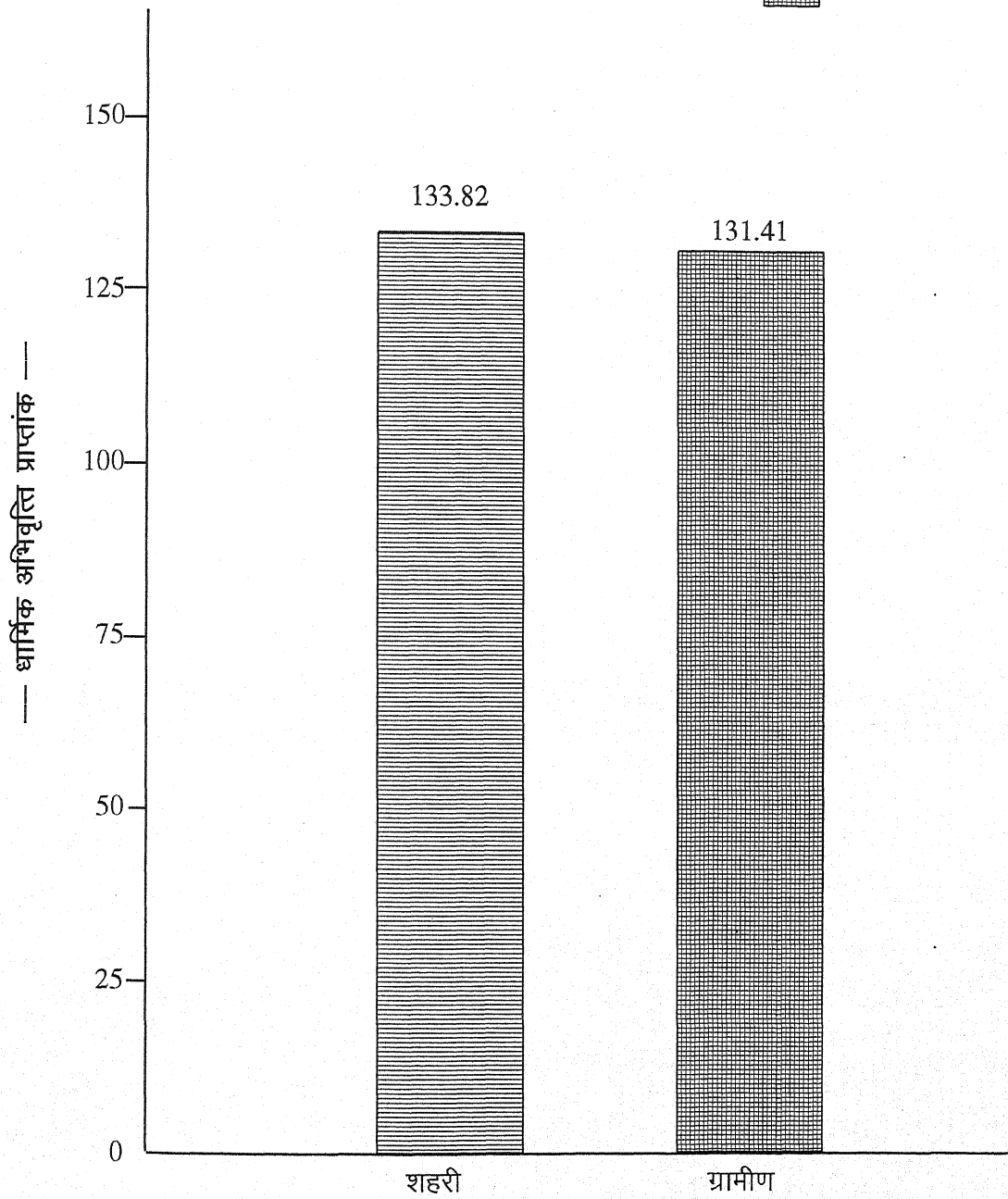
प्रामाणिक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात-

हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
शहरी	150	129.98	17.53	.56
ग्रामीण	150	131.05	15.12	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका-23 का निरीक्षण करने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति (131.05) अधिक है जबकि तुलनात्मक रूप से शहरी हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति (129.98) कम है । दोनों समूहों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई, जो कि .56 प्राप्त हुई। 298 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.98 होना चाहिये । जबकि तालिका -23 से स्पष्ट है कि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात .56 इस आवश्यक मान 1.98 से कम प्राप्त हुआ है । अतः स्पष्ट है कि शहरी व ग्रामीण हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है । शून्य उपकल्पना (6.1), "शहरी हिन्दुओं तथा ग्रामीण हिन्दुओं के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" सही सिद्ध होती है ।

उपकल्पना-6.2)-

शहरी तथा ग्रामीण मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दोनों समूहों के मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई ।

तालिका-24

शहरी तथा ग्रामीण मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान,

प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात–

मुस्लिम धार्मिक अभिवृत्ति	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
शहरी	150	137.66	19.92	2.56
ग्रामीण	150	131.77	19.87	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका–24 से स्पष्ट है कि शहरी मुस्लिम अत्याधिक धार्मिक अभिवृत्ति (137.66) रखते हैं, जबकि ग्रामीण मुस्लिम तुलनात्मक रूप से कम धार्मिक–अभिवृत्ति (131.77) रखते हैं। दोनों समूहों की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जो कि 2.56 ज्ञात हुई । 298 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.98 होना चाहिये । जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 2.56 इस आवश्यक मान से अधिक प्राप्त हुआ है, अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण तथा शहरी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर है। शून्य उपकल्पना (6.2), "शहरी मुस्लिमों तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिक–अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा । " गलतसिद्ध होती है ।

<u>उपकल्पना–(6.3)–</u>

शहरी हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य भी धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया । दोनों समूहों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों द्वारा मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई–

<u>तालिका–25</u>

शहरी हिन्दू तथा मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात –

शहरी धार्मिक अभिवृत्ति	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू	150	129.98	17.53	3.55
मुस्लिम	150	137.66	19.92	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

तालिका-25 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि शहरी मुस्लिम अधिक धार्मिक अभिवृत्ति (137.66) रखते हैं, जबकि शहरी हिन्दू तुलनात्मक रूप से कम धार्मिक प्रवृत्ति (129.98) रखते हैं। दोनों समूहों के धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। क्रान्तिक अनुपात का मान 3.55 प्राप्त हुआ। 298 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 2.59 होना चाहिये। जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 3.55 इस आवश्यक मान से अधिक है। अतः शहरी मुस्लिमों तथा हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। शून्य उपकल्पना (6.3), "शहरी हिन्दू तथा शहरी मुस्लिमों के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है।

<u>उपकल्पना-(6.4)-</u>

ग्रामीण हिन्दू तथा मुस्लिम, धार्मिक-अभिवृत्ति का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दोनों समूहों के धार्मिक-अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्यमान प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अनतर की जाँच के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। प्राप्त परिणाम तालिका-26 में इस प्रकार ज्ञात हुए -

<u>तालिका-26</u>

ग्रामीण हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान, प्राभाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात -

ग्रामीण धार्मिक अभिवृत्ति	कुल संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
हिन्दू	150	131.05	15.12	.3 5
मुस्लिम	150	131.77	19.87	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं

तालिका–26 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण मुस्लिम अधिक धार्मिक–अभिवृत्ति (131.77) रखते हैं, जबकि ग्रामीण हिन्दू तुलनात्मक रूप से कम धार्मिक अभिवृत्ति (131.5) रखते हैं । ग्रामीण मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति प्राप्तांकों में अधिक विचलनशीलता (19.87) है, जबकि ग्रामीण हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों में अधिक स्थिरता (15.12) विद्यमान है । दोनों समूहों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के उद्देश्य से क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई । प्राप्त क्रान्तिक अनुपात कीमात्रा .35 ज्ञात हुई । 298 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.98 होना चाहिये । जबकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान केवल .35 प्राप्त हुआ है । क्रान्तिक अनुपात का यह मान .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 1.98 से कम है । अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण हिन्दुओं तथा मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य .05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है । दोनों समूहों की धार्मिक–अभिवृत्ति लगभग समान ही है । ग्रामीण वातावरण के कारण धार्मिक–अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है शून्य उपकल्पना (6.4), " ग्रामीण हिन्दुओं तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा । " सही सिद्ध होती है । प्राप्त परिणामों द्वारा उक्त शून्य उपकल्पना की पुष्टि होती है ।

भाग – ब

भाग–ब के अन्तर्गत धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय, व्यक्तित्व प्रकार, अन्धविश्वास, सामाजिक आर्थिक स्तर, लिंग तथा आवास के प्रभाव का अध्ययन तथा विवेचन किया जाना है । प्राप्त परिणामों की 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण–विश्लेषण की गणना कर निम्नलिखित 15 उद्देश्यों का विवेचन किया जायेगा–

1– धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

2– धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

3– धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक–आर्थिक–स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

4– धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

5– धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन ।

6– धार्मिक–अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

7– धार्मिक–अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

8– धार्मिक–अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन ।

9– धार्मिक–अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन ।

10– धार्मिक–अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक–आर्थिक

स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

11- धार्मिक-अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन ।

12- धार्मिक-अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण के प्रभाव का अध्ययन ।

13- धार्मिक-अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन ।

14- धार्मिक-अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन ।

15- धार्मिक-अभिवृत्ति पर लिंग (पुरुष व महिला) तथा आवास-क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

उक्त उद्देश्यों की सांख्यकीय गणना तथा विवेचन हेतु उच्च तथा निम्न अन्ध-विश्वास स्तर का निर्धारण किया गया । अन्ध-विश्वास प्राप्तांकों के आधार पर चतुर्थांक एक (Q_1) तथा चतुर्थांक तीन (Q_3) की गणना की गई । चतुर्थांक एक के प्राप्त मान 46 के आधार पर निम्न अन्ध-विश्वास स्तर तथा चतुर्थांक तीन के मान 66 के आधार पर उच्च अन्ध-विश्वास स्तर का निर्धारण किया गया । 46 तथा उससे कम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को निम्न अन्धविश्वासी माना गया । जबकि 66 तथा उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को उच्च अन्ध-विश्वासी माना गया ।

सामाजिक-आर्थिक स्तर का निर्धारण परीक्षण के निर्धारित मानकों के आधार पर किया गया । शहरी व्यक्तियों के 108 तथा उससे कम प्राप्तांक निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करता है जबकि 223 तथा उससे अधिक प्राप्तांक उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करता है । ग्रामीण व्यक्तियों के 60 तथा उससे कम प्राप्तांक निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करते हैं । जबकि 110 तथा उससे अधिक अंक उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करते हैं ।

इसी प्रकार अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार का निर्धारण भी परीक्षण के मानकों के आधार पर किया गया । -10 तथा उससे कम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को अन्तर्मुखी

व्यक्तित्व का माना गया । +10 तथा उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को बहिर्मुखी व्यक्तित्व का माना गया ।

उपर्युक्त स्तरों के निर्धारण के पश्चात 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर भाग–ब के विभिन्न उद्देश्यों का अध्ययन, विश्लेषण तथा विवेचन किया गया ।

1– **धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) के प्रभाव का अध्ययन –**

हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म–सम्प्रदाय तथा अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार का धार्मिक–अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन की गणना की गई । प्राप्त परिणाम तालिका–27 में इस प्रकार ज्ञात हुए–

तालिका–27

हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन –

धर्म–सम्प्रदाय	गणना	अन्तर्मुखी	बहिर्मुखी	योग
हिन्दू	कुल संख्या	54	26	80
	मध्यमान	128.44	134.69	130.47
	प्रामाणिक विचलन	16.62	15.51	16.53
मुस्लिम	कुल संख्या	50	24	74
	मध्यमान	133.06	137.25	134.42
	प्रामाणिक विचलन	18.31	12.22	16.69
योग	कुल संख्या	104	50	154
	मध्यमान	130.66	135.92	132.37
	प्रामाणिक विचलन	17.60	13.52	16.57

बार चित्र – 6

धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) का प्रभाव
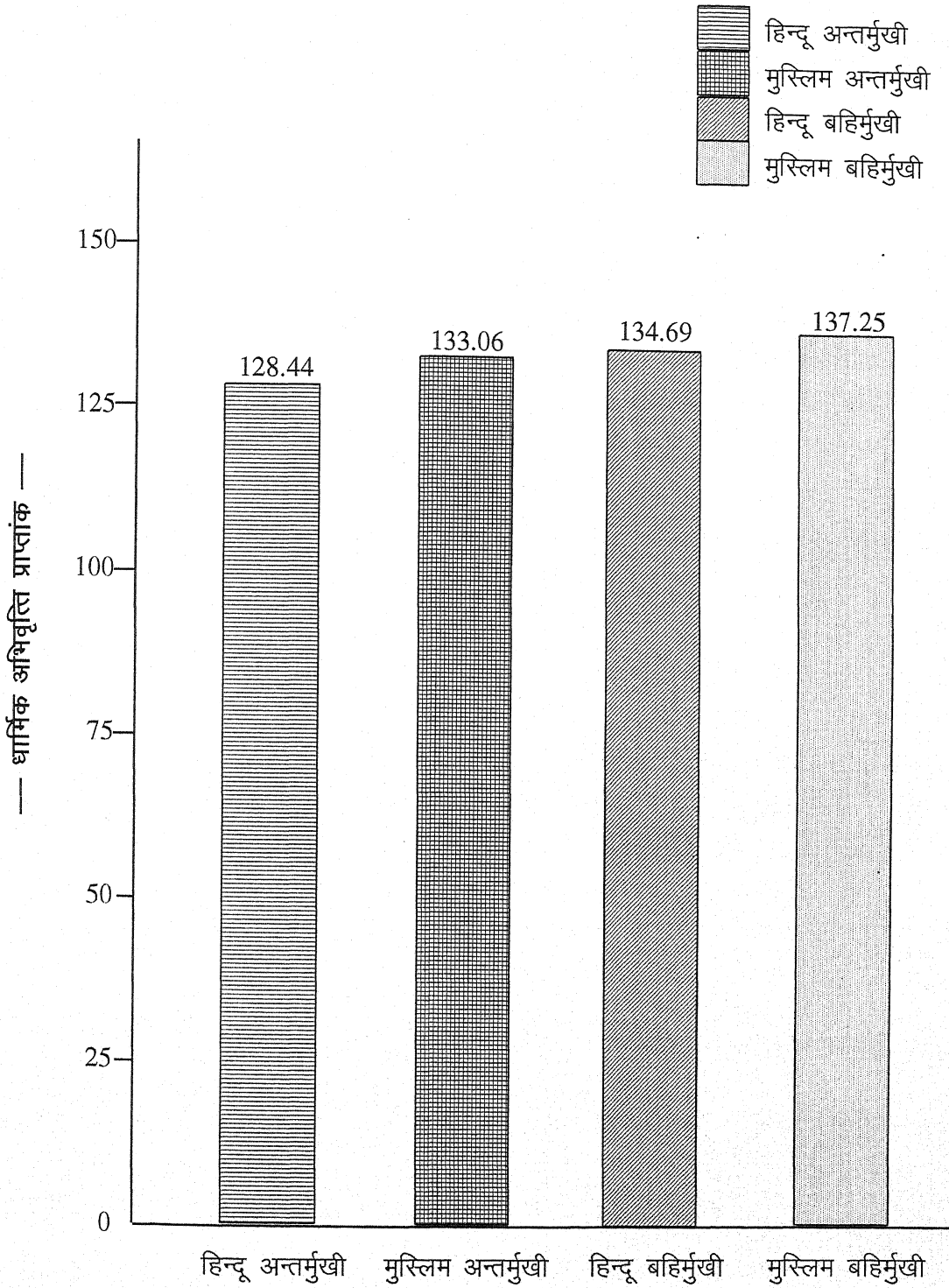
तालिका 27 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति (134.42) अधिक है, जबकि हिन्दुओं की धार्मिक-अभिवृत्ति (130.47) तुलनात्मक रूप से कम है । इसी प्रकार बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति (135.92) अधिक है, जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तियों की धार्मिक-अभिवृत्ति (130.66) तुलनात्मक रूप से कम है । सर्वाधिक धार्मिक अभिवृत्ति मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तियों (137.25) की है । इसके विपरीत सर्वाधिक कम धार्मिक-प्रवृत्ति अन्तर्मुखी हिन्दुओं (128.44) की है । जैसा कि बार चित्र-6 द्वारा स्पष्ट होता है ।

धार्मिक-अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार केप्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण किया गया । परिणाम तालिका-28 में प्रदर्शित है -

<u>तालिका-28</u>

धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म-सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण (2×2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश-

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ (हिन्दू व मुस्लिम)	434.91	1	434.91	1.60	> .05
ब (व्यक्तित्व प्रकार)	919.41	1	919.41	3.38	> .05
अ × ब	35.43	1	35.43	.13	> .05
समूहान्तर्गत	40748.19	150	271.65	.05 → 3.91	

तालिका-28 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि धर्म सम्प्रदाय के रूप में हिन्दू व मुस्लिम का कोई सार्थक प्रभाव धार्मिक-अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । इसी प्रकार व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व) का भी प्रभाव सार्थक रूप से धार्मिक-अभिवृत्ति पर

नहीं पड़ता है । हिन्दू व मुस्लिम धर्म-सम्प्रदाय तथा व्यक्तित्व प्रकार का अन्त:क्रियात्मक प्रभाव भी धार्मिक-अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये एफ अनुपात 3.91 अथवा उससे अधिक होना चाहिये । जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इससे कम प्राप्त हुआ है, अत: प्रस्तुत परिणाम से शून्य उपकल्पना (7), " धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।" सही सिद्ध होती है ।

2- धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म-सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन -

हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म-सम्प्रदाय तथा उच्च व निम्न अन्ध-विश्वास का धार्मिक-अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक-विचलन की गणना की गई । प्राप्त परिणाम तालिका-29 में इस प्रकार ज्ञात हुए -

तालिका-29

हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा उच्च व निम्न अन्ध-विश्वास की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन -

धर्म सम्प्रदाय	गणना	उच्च अन्ध विश्वास	निम्न अन्ध विश्वास	योग
हिन्दू	कुल संख्या	82	65	147
	मध्यमान	132.73	126.29	129.88
	प्रामाणिक विचलन	14.49	17.92	16.41
मुस्लिम	कुल संख्या	64	94	158
	मध्यमान	127.42	138.08	133.76
	प्रामाणिक विचलन	25.60	17.17	21.64
योग	कुल संख्या	146	159	305
	मध्यमान	130.40	133.26	131.89
	प्रामाणिक विचलन	20.30	18.41	19.39

बार चित्र – 7

धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव
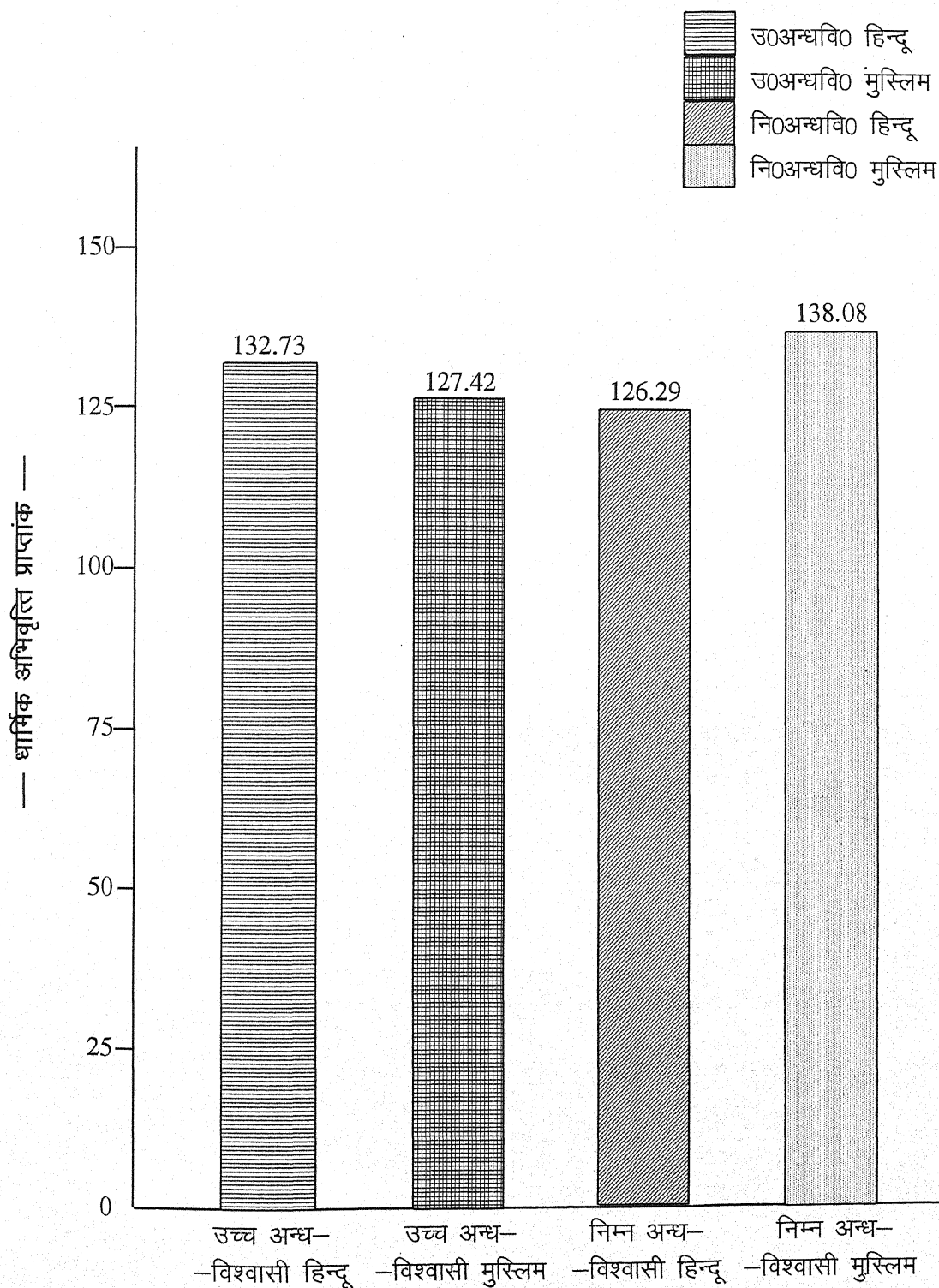
तालिका–29 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि उच्च अन्ध–विश्वास स्तर रखने वाले हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति (132.73) अधिक है, जबकि निम्न अन्ध–विश्वास का स्तर रखने वाले हिन्दुओं की धार्मिक–अभिवृत्ति (126.29) तुलनात्मक रूप से कम है । अर्थात् अन्ध–विश्वास से मुक्त हिन्दू धार्मिक–अभिवृत्ति कम रखते हैं । इसके विपरीत निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों में अधिक धार्मिक–अभिवृत्ति (138.08) पाई गई जबकि उच्च अन्धविश्वासी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति (127.42) तुलनात्मक रूप से कम पाई गई । मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय के व्यक्तियों में धार्मिक–अभिवृत्ति (133.76) अधिक पाई गई, जबकि हिन्दुओं में धार्मिक प्रवृत्ति (129.88) कम पाई गई । बार चित्र–7 द्वारा स्पष्ट होता है ।

धार्मिक–अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म–सम्प्रदाय तथा उच्च व निम्न अन्ध – विश्वास स्तर के प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई । परिणाम तालिका-30 में इस प्रकार प्राप्त हुए –

<u>तालिका–30</u>

धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश–

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ) हिन्दू व मुस्लिम	779.51	1	779.51	2.18	> .05
ब) अन्ध विश्वास) स्तर	330.68	1	330.68	.92	> .05
अ × ब	5432.80	1	5432.80	15.17	< .01
समूहान्तर्गत	107768.47	301	358.03	.05 → 3.875 .01 → 6.73	

तालिका–30 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि धर्म सम्प्रदाय के रूप में हिन्दू व मुस्लिम का कोई सार्थक प्रभाव धार्मिक–अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । इसी प्रकार उच्च व निम्न अन्ध–विश्वास स्तर का भी .05 स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । हिन्दू व मुस्लिम धर्म–सम्प्रदाय तथा अन्धविश्वास स्तर का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक–अभिवृत्ति को .01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है । .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये एफ अनुपात का मान 6.73 अथवा उससे अधिक होना चाहिये । जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इससे अधिक 15.17 प्राप्त हुआ है, अतः धर्म–सम्प्रदाय तथा अन्ध–विश्वास का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक–अभिवृत्ति को प्रभावित करता है । अतः उक्त परिणाम के आधार पर शून्य उपकल्पना (8), " धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।" गलत सिद्ध होती है ।

3– <u>धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन–</u>

धर्म सम्प्रदाय के रूप में हिन्दू व मुस्लिम व्यक्तियों तथा उच्च व निम्न स्तर की सामाजिक आर्थिक स्थिति का धार्मिक–अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया गया । इस उद्देश्य से हिन्दू व मुस्लिमों तथा उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के व्यक्तियों की धार्मिक–अभिवृत्ति प्राप्तांकों के मध्यमान व प्रामाणिक विचलन की गणना की गई । प्राप्त परिणाम तालिका–31 में इस प्रकार ज्ञात हुए –

<u>तालिका–31</u>

हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन –

धर्म सम्प्रदाय	गणना	उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर	निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर	योग
हिन्दू	कुल संख्या	76	91	167
	मध्यमान	133.67	128.79	131.01
	प्रामाणिक विचलन	17.25	16.63	17.09
मुस्लिम	कुल संख्या	74	83	157
	मध्यमान	138.50	134.19	136.22
	प्रामाणिक विचलन	18.08	20.28	19.39
योग	कुल संख्या	150	174	324
	मध्यमान	136.05	131.36	133.53
	प्रामाणिक विचलन	17.83	18.65	18.42

तालिका–31 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (136.05) रखते हैं, इसके विपरीत निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के व्यक्तियों में धार्मिक–अभिवृत्ति (131.36) कम प्राप्त हुई । स्पष्ट है कि धन–धान्य से सम्पन्न व्यक्ति ईश्वर के प्रति अधिक आस्था रखते हैं, जबकि दिन भर परिश्रम कर अपना जीवन यापन करने वाले गरीब व्यक्ति कम धार्मिक–प्रवृत्ति रखते हैं । उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के मुस्लिमों में सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति (138.50) पाई जाती है। साथ ही हिन्दुओं की अपेक्षा मुस्लिमों में अधिक धार्मिक अभिवृत्ति दृष्टिगत होती है । बार चित्र–8

बार चित्र – 8

धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव
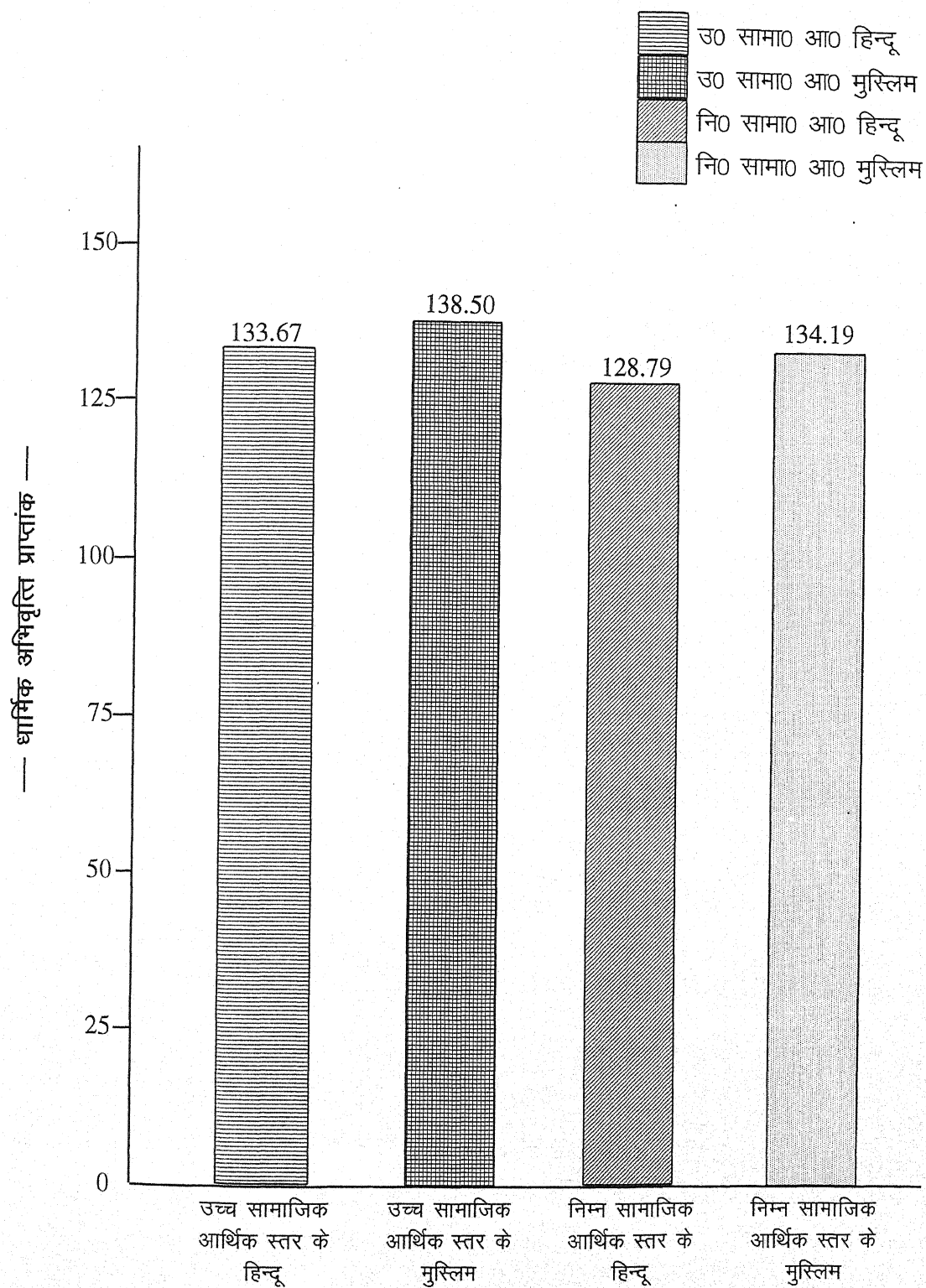
द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

धार्मिक-अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म-सम्प्रदाय तथा उच्च व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई । परिणाम तालिका-32 में इस प्रकार ज्ञात हुए -

तालिका-32

धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण परिणाम सारांश -

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
(अ) हिन्दू व मुस्लिम	2106.14	1	2106.14	6.34	< .05
ब) सामाजिक आर्थिक-स्तर)	1699.68	1	1699.68	5.12	< .05
अ × ब	7.29	1	7.29	.02	> .05
समूहान्तर्गत	106141.23	320	331.69	.05	→ 3.875

तालिका-32 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि धर्म सम्प्रदाय के रूप में हिन्दू व मुस्लिम धर्म का प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है । .05 स्तर पर सार्थक प्रभाव के लिये आवश्यक एफ अनुपात 3.875 होना चाहिये जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इससे अधिक 6.34 प्राप्त हुआ है । इसी प्रकार सामाजिक आर्थिक स्तर भी धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता हे । एफ अनुपात 5.12 से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक स्थिति उसकी धार्मिक-अभिवृत्ति को प्रभावित करती है । हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को सार्थक रूप से .05 स्तर पर प्रभावित (एफ अनुपात .02) नहीं

करता है । अतः उक्त परिणामों द्वारा स्पष्ट होता है कि शून्य उपकल्पना (9), "धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।" गलत सिद्ध होती है ।

4- <u>धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना -</u>

हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा पुरूष व महिलाओं का धार्मिक-अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन की गणना की गई -

<u>तालिका-33</u>

हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा लिंग (पुरूष व महिला) की धार्मिक-अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन -

धर्म सम्प्रदाय	गणना	पुरूष	महिला	योग
हिन्दू	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	128.21	132.83	130.52
	प्रामाणिक विचलन	16.72	15.70	16.38
मुस्लिम	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	140.01	129.44	134.72
	प्रामाणिकविचलन	15.62	22.58	20.12
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	134.11	131.13	132.62
	प्रामाणिक विचलन	17.22	19.52	18.46

बार चित्र – 9

धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा लिंग (पुरुष व महिला) का प्रभाव
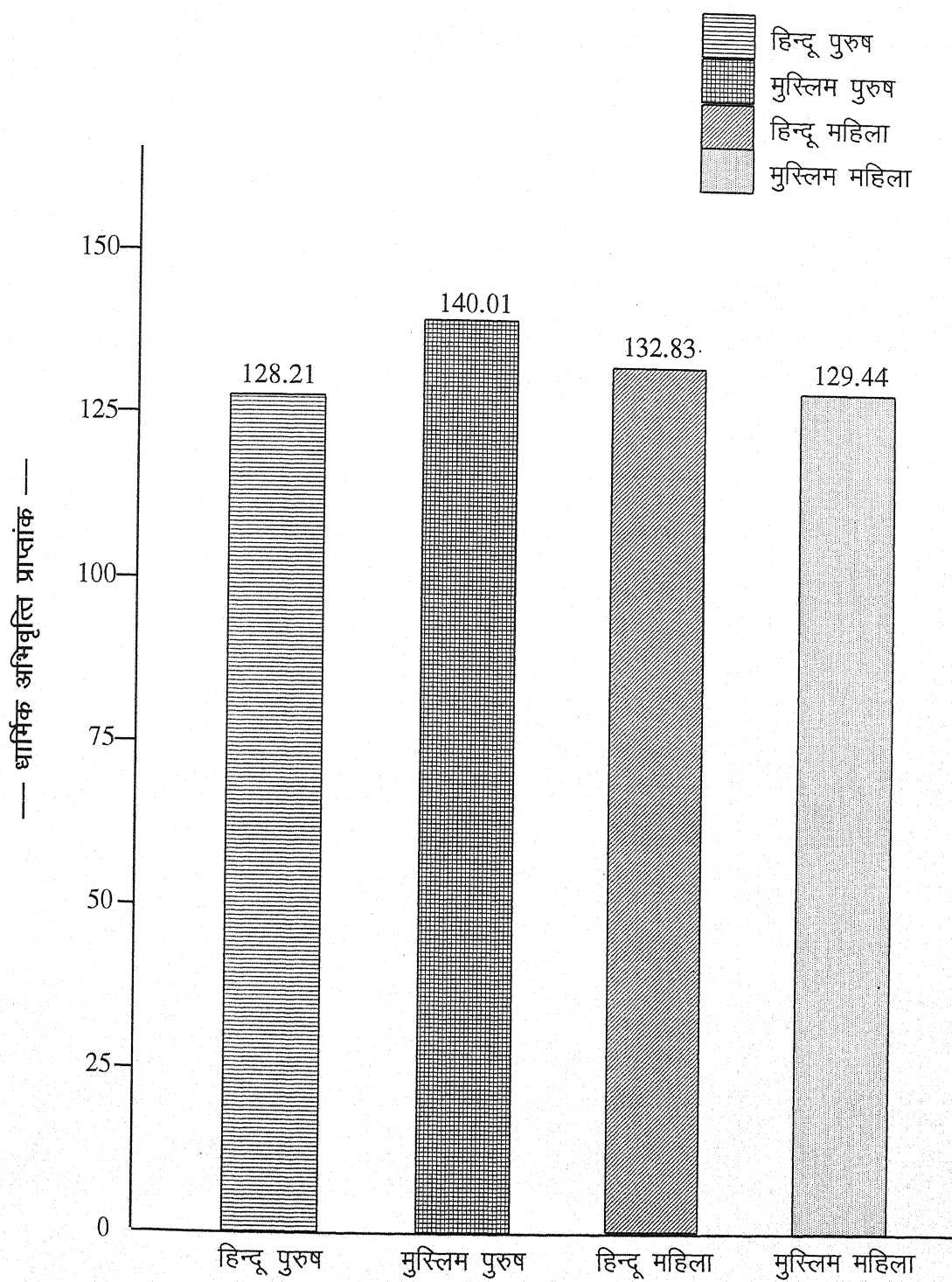
तालिका–33 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति (131.13) की अपेक्षा पुरूषों की धार्मिक अभिवृत्ति (134.11) अधिक है । हिन्दू पुरुष कम धार्मिक प्रवृत्ति (128.21) रखते हैं, जबकि तुलनात्मक रूप से हिन्दू महिलायें अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (132.83) रखती हैं । इसके विपरीत मुस्लिम पुरूषों की धार्मिक प्रवृत्ति (140.01) अधिक है, जबकि तुलनात्मक रूप से मुस्लिम महिलाओं की धार्मिक प्रवृत्ति (129.44) काफी कम मात्रा में होती है । हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति (130.52) की अपेक्षा मुस्लिमों की धार्मिक–अभिवृत्ति (134.72) अधिक मात्रा में पाई जाती हे । बार चित्र–9 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म–सम्प्रदाय तथा लिंग (पुरुष व महिला) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधारपर प्रसरण विश्लेषण किया गया जिसके परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए ।

<u>तालिका–34</u>

धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश –

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ(हिन्दू व मुस्लिम)	2655	1	2655	8.24	< .01
ब(पुरुष व महिला)	1326	1	1326	4.11	< .05
अ × ब	8664	1	8664	26.89	< .01
समूहान्तर्गत	192010	596	322.16	.05 → 3.85 .01 → 6.68	

तालिका–34 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि धर्म सम्प्रदाय के रूप में हिन्दू व मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ता है । .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक एफ अनुपात का मान 6.68 होना चाहिये , जबकि प्राप्त एफ अनुपात का इस आवश्यक मान से अधिक 8.24 प्राप्त हुआ है । अतः स्पष्ट है कि धर्म सम्प्रदाय धार्मिक अभिवृत्ति को .01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है । धार्मिक अभिवृत्ति को लिंग भी .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है। प्राप्त एफ अनुपात 4.11, .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 3.85 से अधिक है, अतः पुरूषों तथा महिलाओं की धार्मिक–अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अन्तर .05 स्तर पर है । धर्म सम्प्रदाय तथा लिंग का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति का .01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है । प्राप्त एफ अनुपात 26.89 स्पष्ट करता है कि धार्मिक अभिवृत्ति सार्थक रूप से धर्म सम्प्रदाय तथा लिंग से प्रभावित होती है । अतः शून्य उपकल्पना (10), "धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है ।

5– धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन –

धर्म सम्प्रदाय तथा आवास क्षेत्र के रूप में शहरी व ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया । इस उद्देश्य से मध्यमान तथा प्रामाणिक-विचलन की गणना की गई –

तालिका–35

हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन –

धर्म सम्प्रदाय	गणना	ग्रामीण	शहरी	योग
हिन्दू	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	131.05	129.98	130.51
	प्रामाणिक विचलन	15.12	17.53	16.37
मुस्लिम	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	131.77	137.66	134.71
	प्रामाणिक विचलन	19.87	19.92	20.11
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	131.41	133.82	132.62
	प्रामाणिक विचलन	17.66	19.15	18.45

तालिका–35 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि मुस्लिमों में अधिक धार्मिक–प्रवृत्ति (134.71) होती है, जबकि तुलनात्मक रूप से हिन्दुओं में कम धार्मिक प्रवृत्ति (130.51) पाई जाती है । इसी प्रकार शहरी व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (133.82) रखते हैं, जबकि ग्रामीण कम धार्मिक प्रवृत्ति (131.41) रखते हैं । ग्रामीण हिन्दुओं की धार्मिक अभिवृत्ति (131.05) की अपेक्षा शहरी हिन्दुओं में धार्मिक अभिवृत्ति (129.98) कम है । इसके विपरीत ग्रामीण मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति की अपेक्षा (131.77), शहरी मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति (137.66) अधिक उच्च पाई गई । इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों की धार्मिक अभिवृत्ति लगभग समान है, किन्तु शहरी हिन्दू कम धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, जबकि शहरी मुस्लिम अधिक धार्मिक अभिवृत्ति रखते हैं । बार चित्र–10 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

बार चित्र – 10

धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा
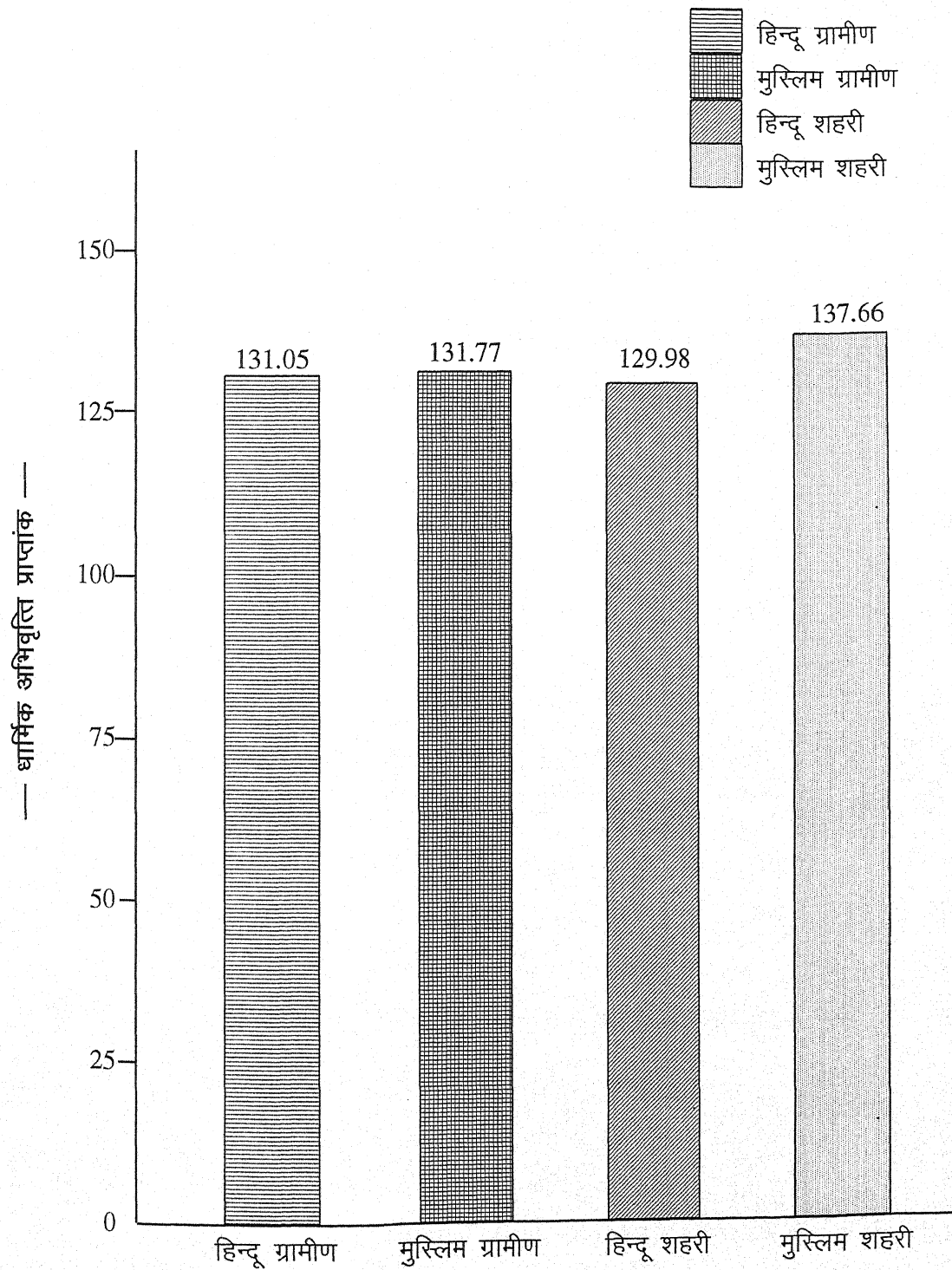
आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव

धार्मिक अभिवृत्ति पर हिन्दू व मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई । परिणाम तालिका–36 में इस प्रकार प्राप्त हुए–

<u>तालिका–36</u>

धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहर) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण, परिणाम सारांश–

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यगान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ(हिन्दू व मुस्लिम)	2650	1	2650	7.93	< .01
ब(ग्रामीण व शहरी)	876	1	876	2.62	> .05
अ × ब	1820	1	1820	5.45	< .05
समूहान्तर्गत	199162	596	334.16	.05 ⟶ 3.85 .01 ⟶ 6.68	

तालिका–36 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि धर्म सम्प्रदाय के रूप में हिन्दू व मुस्लिमों की धार्मिक अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक एफ अनुपात का मान 6.68 होना चाहिये, जबकि प्राप्त एफ अनुपात इस आवश्यक मान से अधिक 7.93 प्राप्त हुआ है अतः कहा जा सकता है कि धर्म सम्प्रदाय धार्मिक अभिवृत्ति को .01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है । ग्रामीण तथा शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 3.85 होना चाहिये जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इस आवश्यक मान से कम 2.62 प्राप्त हुआ है, अतः आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । धर्म सम्प्रदाय तथा आवास क्षेत्र का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है । एफ अनुपात 5.45 का मान .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रकट

करता है । अतः शून्य उपकल्पना (11), "धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।" गलत सिद्ध होती है ।

6– **धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन–**

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा उच्च व निम्न अन्धविश्वासी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन की गणना की गई ।

तालिका–37

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

व्यक्तित्व प्रकार	गणना	उच्च अन्ध विश्वास	निम्न अन्ध–विश्वास	योग
अन्तर्मुखी	कुल संख्या	25	34	59
	मध्यमान	131.92	129.35	130.44
	प्रामाणिक विचलन	22.56	17.05	19.61
बहिर्मुखी	कुल संख्या	9	9	18
	मध्यमान	137.89	142.55	140.22
	प्रामाणिक विचलन	11.84	8.37	10.51
योग	कुल संख्या	34	43	77
	मध्यमान	133.50	132.11	132.72
	प्रामाणिक विचलन	20.45	16.53	18.37

परिणाम तालिका–37 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी

बार चित्र – 11

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव
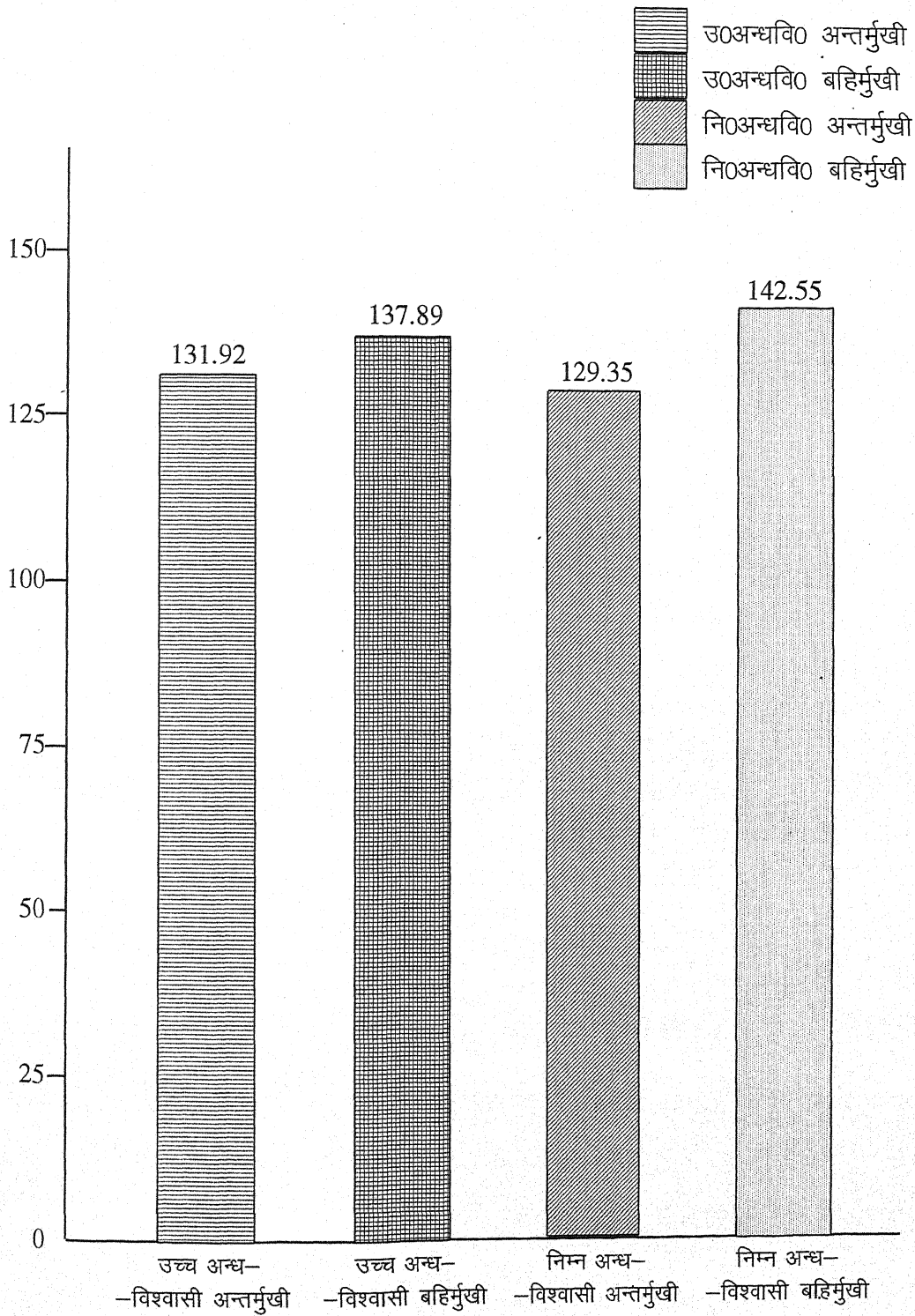
व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (130.44) कम है, जबकि तुलनात्मक रूप से बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति अधिक धार्मिक अभिवृत्ति (140.22) रखते हैं । उच्च अन्ध-विश्वासी व्यक्ति धार्मिक अभिवृत्ति (133.50) अधिक उच्च स्तर की रखते हैं, जबकि निम्न अन्ध-विश्वासी निम्न स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति (132.11) रखते हैं । निम्न अन्ध विश्वासी बहिर्मुखी व्यक्तियों में धार्मिक प्रवृत्ति (142.55) सर्वाधिक पाई गई जबकि निम्न अन्ध-विश्वासी अन्तर्मुखी व्यक्तियों में सर्वाधिक कम धार्मिक प्रवृत्ति (129.35) पाई गई । बार चित्र-11 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है।

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प

<u>तालिका-38</u>

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्ध विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण परिणाम सारांश -

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ(व्यक्तित्व प्रकार)	1260.48	1	1260.48	3.76	> .05
ब(अन्ध विश्वास)	14.94	1	14.94	.04	> .05
अ × ब	13.07	1	13.07	.04	> .05
समूहान्तर्गत	24452.71	73	334.97	.05 → 3.97	

के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई । तालिका-38 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक प्रभाव के लिये आवश्यक मान 3.97 होना चाहिये । जबकि प्राप्त एफ अनुपात इस आवश्यक मान से कम 3.76 तथा .04 प्राप्त हुआ है , अतः धार्मिक अभिवृत्ति को व्यक्तित्व प्रकार तथा

अन्धविश्वास स्तर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं । व्यक्तित्व प्रकार तथा अन्धविश्वास स्तर का अन्त:क्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । प्राप्त एफ अनुपात का मान .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है, अतः शून्य उपकल्पना (12), " धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।" सही सिद्ध होती है ।

7- **धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन-**

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? यह अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन की गणना की गई ।

तालिका-39

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन-

व्यवितत्व प्रकार	गणना	उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर	निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर	योग
अन्तर्मुखी	कुल संख्या	22	37	59
	मध्यमान	128.77	129.84	129.44
	प्रामाणिक विचलन	19.61	13.29	15.95
बहिर्मुखी	कुल संख्या	15	13	28
	मध्यमान	137.00	138.00	137.46
	प्रामाणिक विचलन	16.79	14.95	15.96
योग	कुल संख्या	37	50	87
	मध्यमान	132.10	131.96	132.02
	प्रामाणिक विचलन	18.95	14.20	16.38

बार चित्र – 12

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव
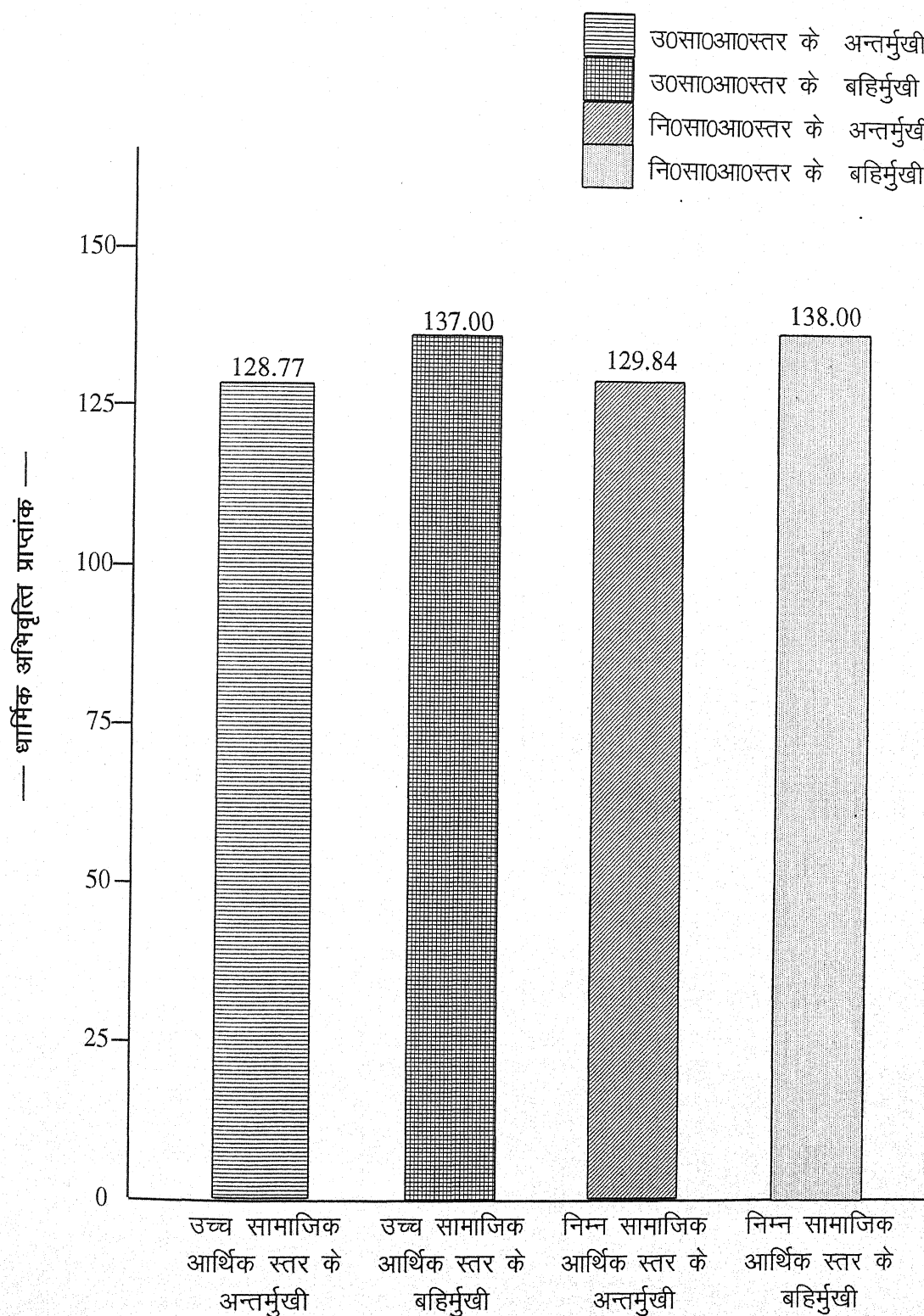
तालिका–39 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (132.10) अधिक सकारात्मक है जबकि तुलनात्मक रूप से निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (131.96) कम सकारात्मक पाई गई । अन्तर्मुखी व्यक्तियों में कम धार्मिक प्रवृत्ति (129.44), जबकि बहिर्मुखी व्यक्तियों में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (137.46) पाई गई । बार चित्र–12 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई । तालिका- 40 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार सार्थक रूप से .05 स्तर पर धार्मिक

<u>तालिका–40</u>

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश–

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ) व्यक्तित्व प्रकार)	1243.09	1	1243.09	4.66	< .05
ब) सामाजिक आर्थिक स्तर)	19.83	1	19.83	.07	> .05
अ × ब	0.12	1	0.12	–	> .05
समूहान्तर्गत	22136.89	83	266.71	.05	→ 3.96

अभिवृत्ति को प्रभावित करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 3.96 होना चाहिये, जबकि प्राप्त एफ अनुपात 4.66 इस आवश्यक मान से अधिक प्राप्त हुआ । अतः धार्मिक अभिवृत्ति अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार से प्रभावित होती है । इसके विपरीत सामाजिक आर्थिक स्थिति का धार्मिक अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव .05 स्तर पर नहीं

पड़ता है (एफ अनुपात .07) । इसी प्रकार व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप में .05 स्तर पर धार्मिक अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । उक्त परिणाम के आधार पर शून्य उपकल्पना (13), "धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च-व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।" गलत सिद्ध होती है ।

8– **धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार(अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन–**

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा लिंग (पुरूष व महिला) का धार्मिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान व प्रामाणिक विचलन की गणना की गई । तालिका–41 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति कम धार्मिक प्रवृत्ति (130.66) के हैं, जबकि बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (135.92) के हैं । पुरूषों की धार्मिक प्रवृत्ति (132.81) अधिक है, जबकि महिलाओं की

तालिका–41

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा पुरूषों व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

व्यक्तित्व प्रकार	गणना	पुरूष	महिला	योग
अन्तर्मुखी	कुल संख्या	66	38	104
	मध्यमान	132.29	127.84	130.66
	प्रामाणिक विचलन	15.76	20.10	17.60
बहिर्मुखी	कुल संख्या	20	30	50
	मध्यमान	134.55	136.83	153.92
	प्रामाणिक विचलन	14.37	12.84	13.52
योग	कुल संख्या	86	68	154
	मध्यमान	132.81	131.80	132.36
	प्रामाणिक विचलन	15.48	17.84	16.57

धार्मिक प्रवृत्ति (131.80) कम है । बहिर्मुखी महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति सर्वाधिक

बार चित्र – 13

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरुष व महिला) का प्रभाव
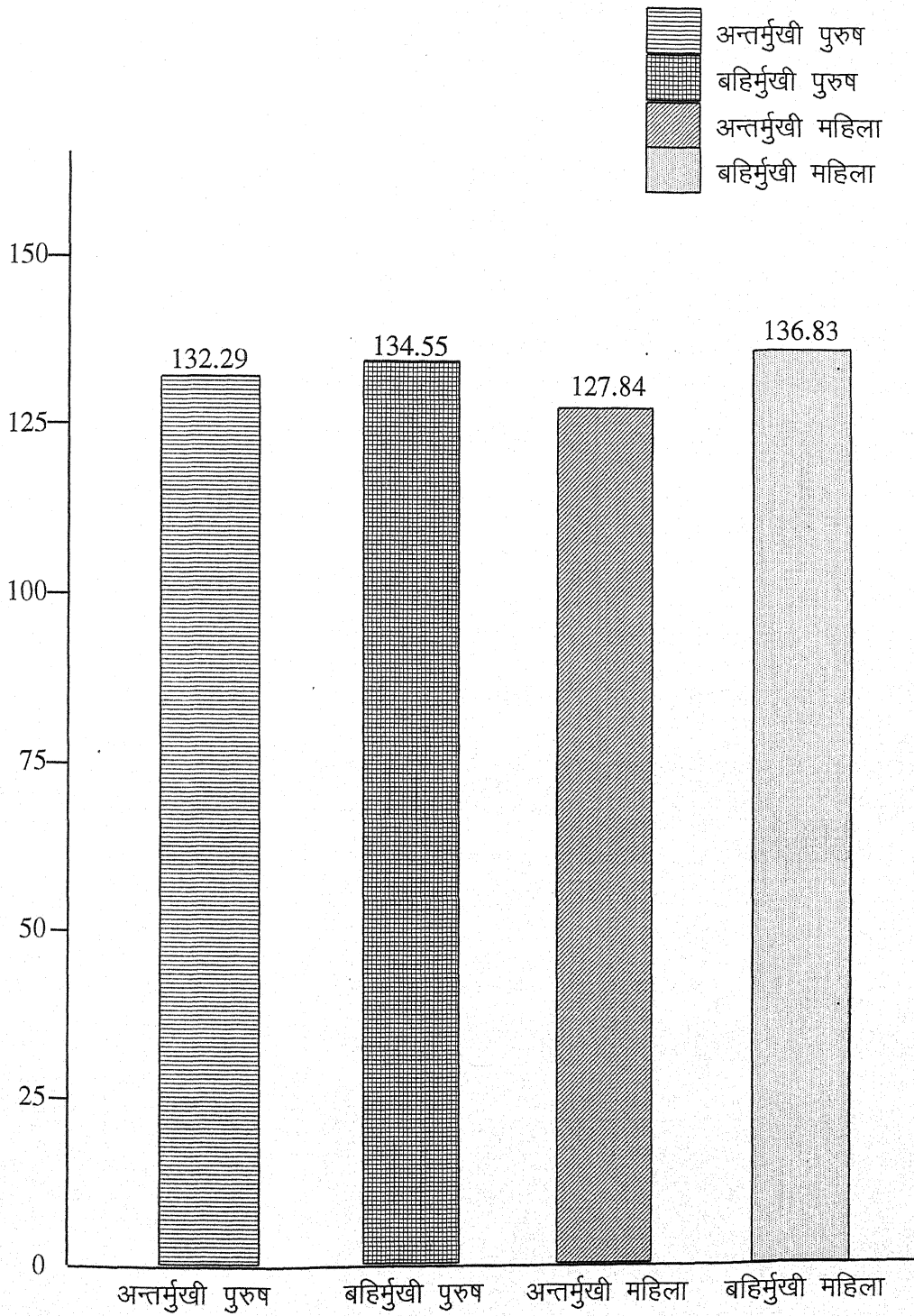
(136.83) है, जबकि अन्तर्मुखी महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति (127.84) सर्वाधिक कम है। बार चित्र-13 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई । तालिका-42 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार सार्थक रूप से .01 स्तर पर धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित करता है । .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 6.81 होना चाहिये, जबकि प्राप्त एफ अनुपात इस आवश्यक मान से अधिक 7.88 प्राप्त हुआ है । इसके विपरीत लिंग का धार्मिक अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव .05 स्तर पर नहीं पड़ता है (एफ अनुपात .14) इसी प्रकार व्यवितत्व प्रकार तथा लिंग (पुरुष व महिला) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप में .05 स्तर पर धार्मिक अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है। अतः परिणामों के आधार पर शून्य उपकल्पना (14), "धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्वप्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरुष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है ।

<u>तालिका-42</u>

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण परिणाम सारांश-

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
(अ) व्यक्तित्व प्रकार	2145.05	1	2145.05	7.88	$<.01$
(ब) लिंग	37.73	1	37.73	.14	$>.05$
अ × ब	-767.88	1	- 767.88	-	$>.05$
समूहान्तर्गत	40843.70	150	272.29	.01 → .05 →	6.81 3.91

9– **धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन–**

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा शहर व ग्रामीण आवास क्षेत्र का धार्मिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान व प्रामाणिक विचलन की गणना की गई । तालिका–43 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (132.87) अधिक है, जबकि ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति तुलनात्मक रूप से (131.82) कम है । इसी प्रकार बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (135.92)के हैं,जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति कम धार्मिक प्रवृत्ति (130.66) रखते हैं । शहरी बहिर्मुखी व्यक्ति सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति (137.86) रखते हैं, जबकि शहरी अन्तर्मुखी व्यक्ति सर्वाधिक कम धार्मिक प्रवृत्ति (130.04) रखते हैं । उक्त परिणामों की पुष्टि बार चित्र–14 द्वारा होती है ।

<u>तालिका–43</u>

अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

व्यक्तित्व प्रकार	गणना	ग्रामीण	शहरी	योग
अन्तर्मुखी	कुल संख्या	53	51	104
	मध्यमान	131.26	130.04	130.66
	प्रामाणिक विचलन	14.78	20.10	17.60
बहिर्मुखी	कुल संख्या	21	29	50
	मध्यमान	133.24	137.86	135.92
	प्रामाणिक विचलन	12.23	14.07	13.52
योग	कुल संख्या	74	80	154
	मध्यमान	131.82	132.87	132.36
	प्रामाणिक विचलन	14.13	18.53	33.18

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण

बार चित्र – 14

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव
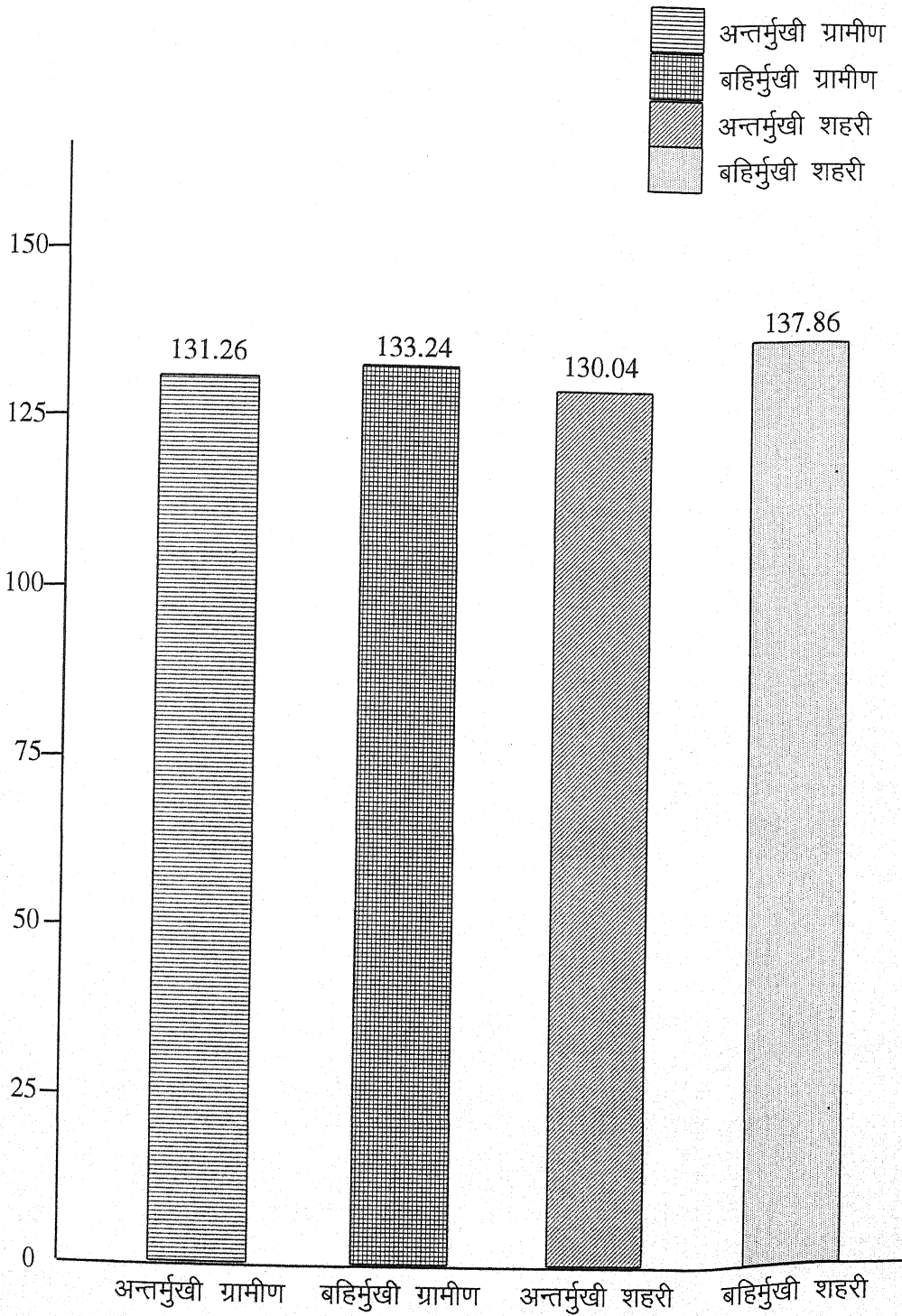
व शहरी) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई । तालिका-44 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार के रूप में अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व का कोई सार्थक प्रभाव .05 स्तर पर नहीं पड़ता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक एफ अनुपात का मान 3.91 होना चाहिये , जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इस आवश्यक मान से कम 2.91 प्राप्त हुआ है , अतः व्यक्तित्व प्रकार धार्मिक अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । इसी प्रकार आवास क्षेत्र के रूप में ग्रामीण व शहरी व्यक्तियों का धार्मिक अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है (एफ अनुपात .35) । व्यक्तित्व प्रकार तथा आवास क्षेत्र का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप में .05 स्तर पर धार्मिक अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । अतः परिणामों के आधार पर शून्य उपकल्पना (15), "धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।" सही सिद्ध होती है ।

तालिका–44

धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास-क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण परिणाम सारांश –

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ(व्यक्तित्व प्रकार)	796.65	1	796.65	2.91	> .05
ब(आवास क्षेत्र)	95.89	1	95.89	.35	> .05
अ × ब	282.90	1	282.90	1.03	> .05
समूहान्तर्गत	41083.47	150	273.89	.05 ⟶ 3.91	

10– **धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन–**

उच्च व निम्न अन्धविश्वासी तथा उच्च व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर का धार्मिक-अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान व प्रामाणिक विचलन की गणना की गई । तालिका-45 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर

से सम्बन्धित व्यक्तियों की धार्मिक–अभिवृत्ति (135.63) अधिक है, जबकि निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (130.51) निम्न स्तर की है। इसी प्रकार निम्न अन्धविश्वासी व्यक्तियों में धार्मिक प्रवृत्ति अधिक है (133.85) जबकि इसके विपरीत उच्च अन्धविश्वासी व्यक्तियों में कम धार्मिक प्रवृत्ति (131.85) है। सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित निम्न अन्धविश्वासी व्यक्तियों (136.69) की है, जबकि

<u>तालिका–45</u>

उच्च अन्धविश्वास व निम्न अन्ध विश्वास तथा उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन ।

अन्ध विश्वास	गणना	उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर	निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर	योग
उच्च	कुल संख्या	40	37	77
	मध्यमान	134.6	128.89	131.85
	प्रामाणिक विचलन	15.91	23.03	19.86
निम्न	कुल संख्या	39	51	90
	मध्यमान	136.69	131.68	133.85
	प्रामाणिक विचलन	19.23	19.44	19.51
योग	कुल संख्या	79	88	167
	मध्यमान	135.63	130.51	132.93
	प्रामाणिक विचलन	17.66	21.05	19.69

सर्वाधिक कम धार्मिक प्रवृत्ति (128.89) उच्च अन्ध विश्वासी निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित व्यक्तियों में पाई गई । उक्त परिणामों की पुष्टि बार चित्र–15 द्वारा होती है ।

बार चित्र – 15

धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का प्रभाव
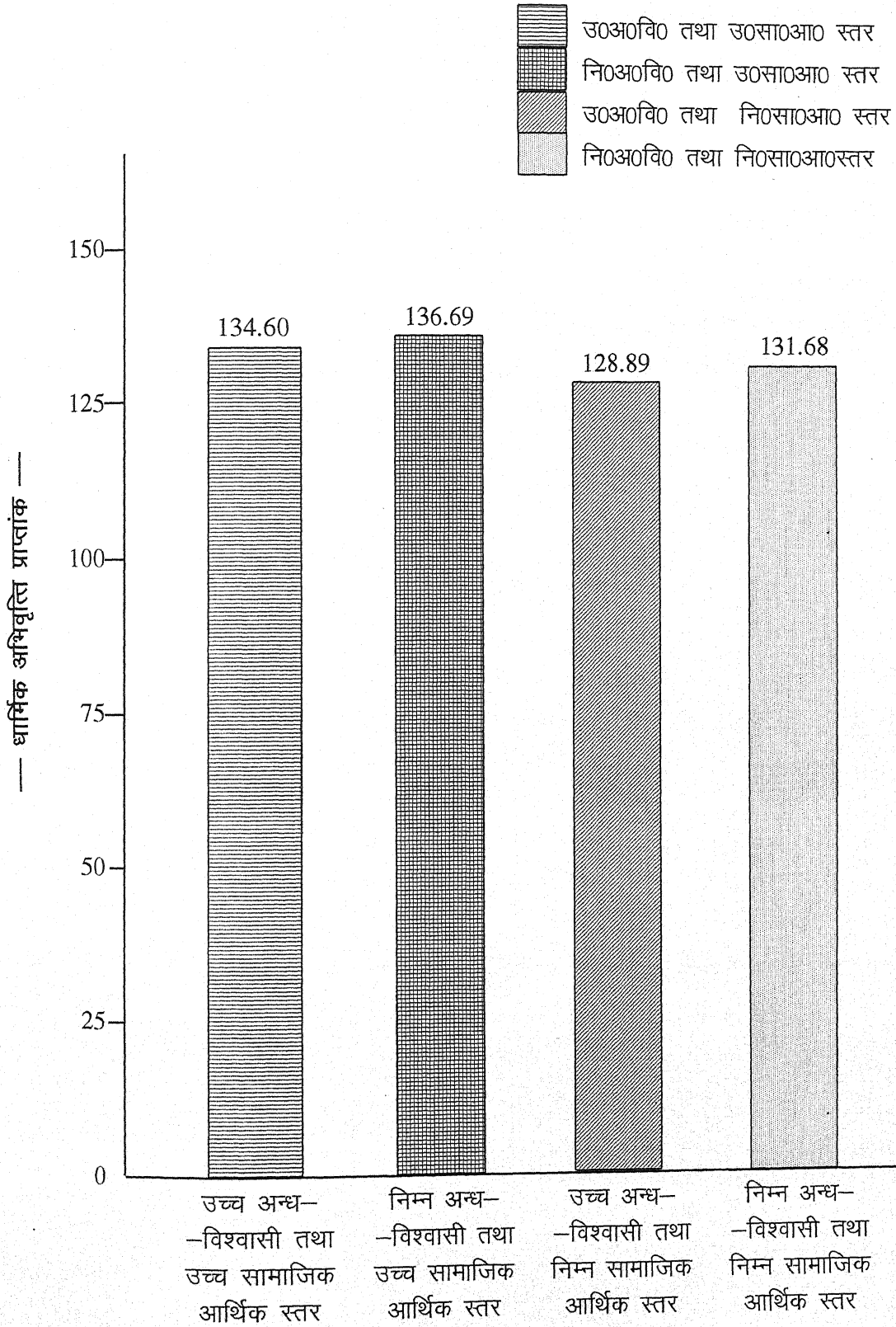
धार्मिक अभिवृत्ति पर उच्च व निम्न अन्ध-विश्वास तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई । तालिका-46 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि धार्मिक अभिवृत्ति पर उच्च व निम्न अन्धविश्वास का कोई सार्थक प्रभाव .05 स्तर पर नहीं पड़ता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक एफ अनुपात का मान 3.91 होना चाहिये, जबकि प्राप्त एफ अनुपात इस आवश्यक मान से कम .63 प्राप्त हुआ है, अतः धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार सामाजिक आर्थिक स्तर का भी धार्मिक-अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव .05 स्तर पर नहीं पड़ता (एफ अनुपात 3.03) है । अन्ध विश्वास स्तर तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव भी सार्थक रूप से धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर प्रभावित (एफ अनुपात .01) नहीं करता है । अतः उक्त परिणामों के आधार पर शून्य उपकल्पना (16), "धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" सही सिद्ध होती है ।

तालिका-46

धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण परिणाम सारांश –

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ) अन्धविश्वास स्तर)	244.81	1	244.81	.63	> .05
ब) सामाजिक आर्थिक स्तर	1181.36	1	1181.36	3.03	> .05
अ × ब	5.16	1	5.16	.01	> .05
समूहान्तर्गत	63458.46	163	389.31	.05 ⟶ 3.91	

11– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन–

उच्च व निम्न अन्धविश्वास तथा लिंग (पुरुष व महिला) का धार्मिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान व प्रामाणिक विचलन की गणना की गई। तालिका–47 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि पुरुषों की धार्मिक प्रवृत्ति (132.94) अधिक है, जबकि महिलाओं की धार्मिक प्रवृत्ति (130.72) तुलनात्मक रूप से कम है। इसी प्रकार निम्न अन्धविश्वासी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (133.26) अधिक है, जबकि उच्च अन्धविश्वासी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (130.38) तुलनात्मक रूप से कम है।

तालिका–47

उच्च व निम्न अन्धविश्वास– पुरुषों व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विलचन–

अन्ध विश्वास	गणना	पुरुष	महिला	योग
उच्च	कुल संख्या	56	92	148
	मध्यमान	134.34	127.98	130.38
	प्रामाणिक विचलन	14.40	22.64	20.16
निम्न	कुल संख्या	103	56	159
	मध्यमान	132.19	135.23	133.26
	प्रामाणिक विचलन	19.54	15.96	18.41
योग	कुल संख्या	159	148	307
	मध्यमान	132.94	130.72	131.87
	प्रामाणिक विचलन	17.93	20.67	19.33

सर्वाधिक कम धार्मिक प्रवृत्ति (127.98) उच्च अन्धविश्वासी महिलाओं में है जबकि सर्वाधिक

बार चित्र – 16

धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरुष व महिला) का प्रभाव
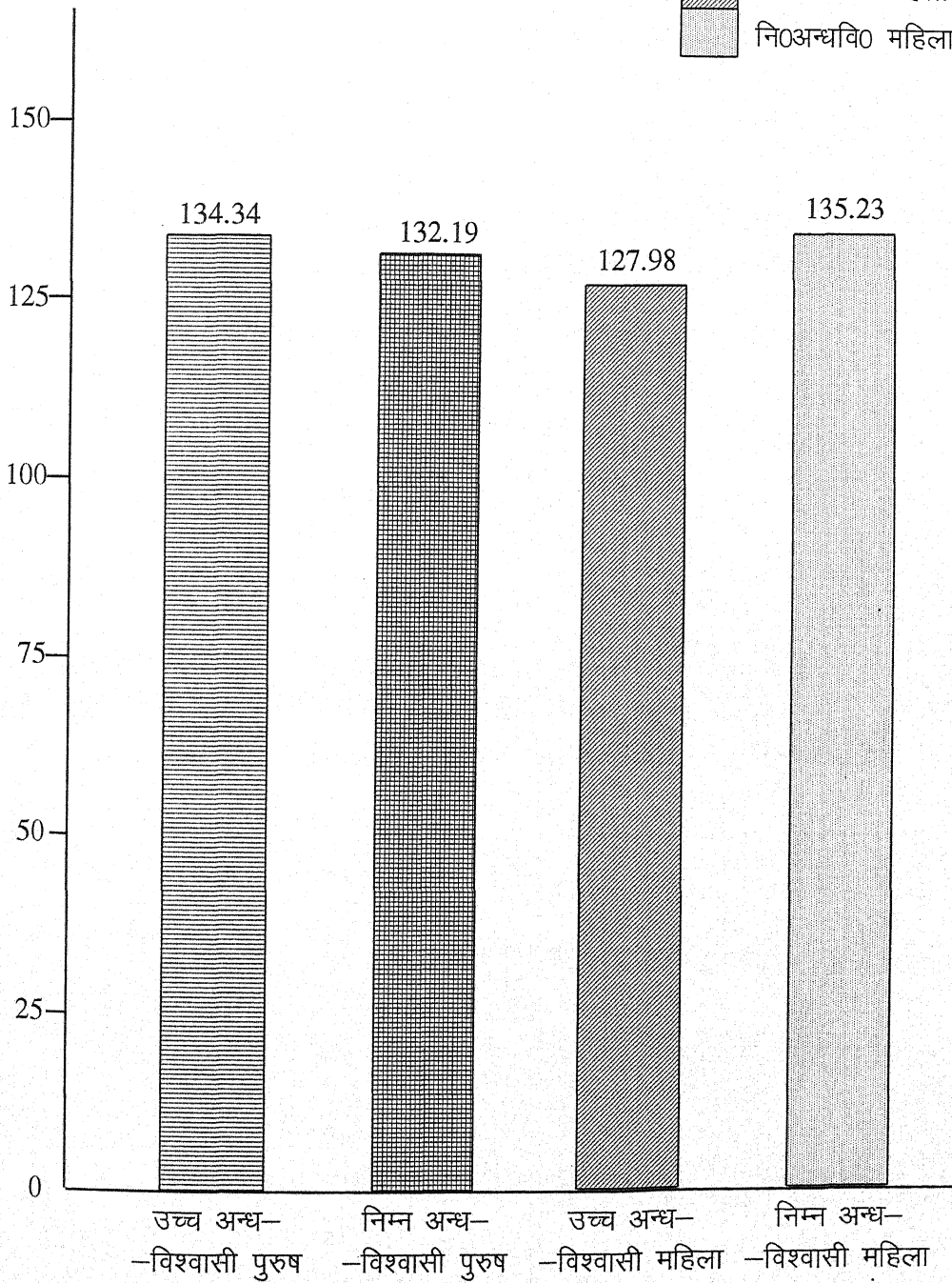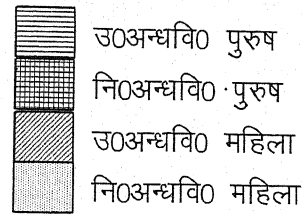
धार्मिक प्रवृत्ति निम्न अन्धविश्वासी महिलाओं (135.23) में दृष्टिगत होती है । बार चित्र-16 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर तथा लिंग (पुरूष व महिला) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई । तालिका-48 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है किउच्च व निम्न अन्ध-विश्वास धार्मिक अभिवृत्ति को सार्थक रूप से .05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक एफ अनुपात का मान 3.875 होना चाहिये जबकि प्राप्त एफ अनुपात 1.24 इस आवश्यक मान से कम है अतः अन्धविश्वास का कोई सार्थक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति पर नहीं पड़ता है । इसी प्रकार धार्मिक अभिवृत्ति

<u>तालिका-48</u>

उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर तथा लिंग (पुरूष व महिला) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण परिणाम सारांश-

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ(अन्धविश्वास)	462.00	1	462.00	1.24	$>.05$
ब(लिंग)	195.78	1	195.78	.52	$>.05$
अ × ब	1569.63	1	1569.63	4.23	$<.05$
समूहान्तर्गत	112366.6	303	370.84	.05 ⟶ 3.875	

को सार्थक रूप से .05 स्तर पर लिंग प्रभावित (एफ अनुपात .52) नहीं करता है । किन्तु अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक रूप से .05 स्तर पर धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित करता है । प्राप्त एफ अनुपात 4.23 का मान .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 3.875 से अधिक है अतः अन्धविश्वास तथा लिंग का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप

से प्रभावित करता है । शून्य उपकल्पना (17), "धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है ।

12— धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन—

उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर तथा शहरी व ग्रामीण आवास क्षेत्र का धार्मिक अभिवृत्ति के साथ सम्बन्ध का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन की गणना की गई । तालिका—49 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च अन्धविश्वास स्तर से संबंधित

तालिका—49

उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर तथा ग्रामीण व शहरी आवास क्षेत्र की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन—

अन्ध विश्वास स्तर	गणना	ग्रामीण	शहरी	योग
उच्च	कुल संख्या	92	56	148
	मध्यमान	130.34	130.50	130.40
	प्रामाणिक विचलन	18.67	22.42	20.17
निम्न	कुल संख्या	76	83	159
	मध्यमान	130.80	135.52	133.26
	प्रामाणिक विचलन	18.85	17.71	18.41
योग	कुल संख्या	168	139	307
	मध्यमान	130.54	133.49	131.88
	प्रामाणिक विचलन	18.67	19.89	19.30

व्यक्तियों की धार्मिक प्रवृत्ति (130.40) कम है, जबकि निम्न अन्धविश्वास स्तर से सम्बन्धित

बार चित्र – 17

धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव
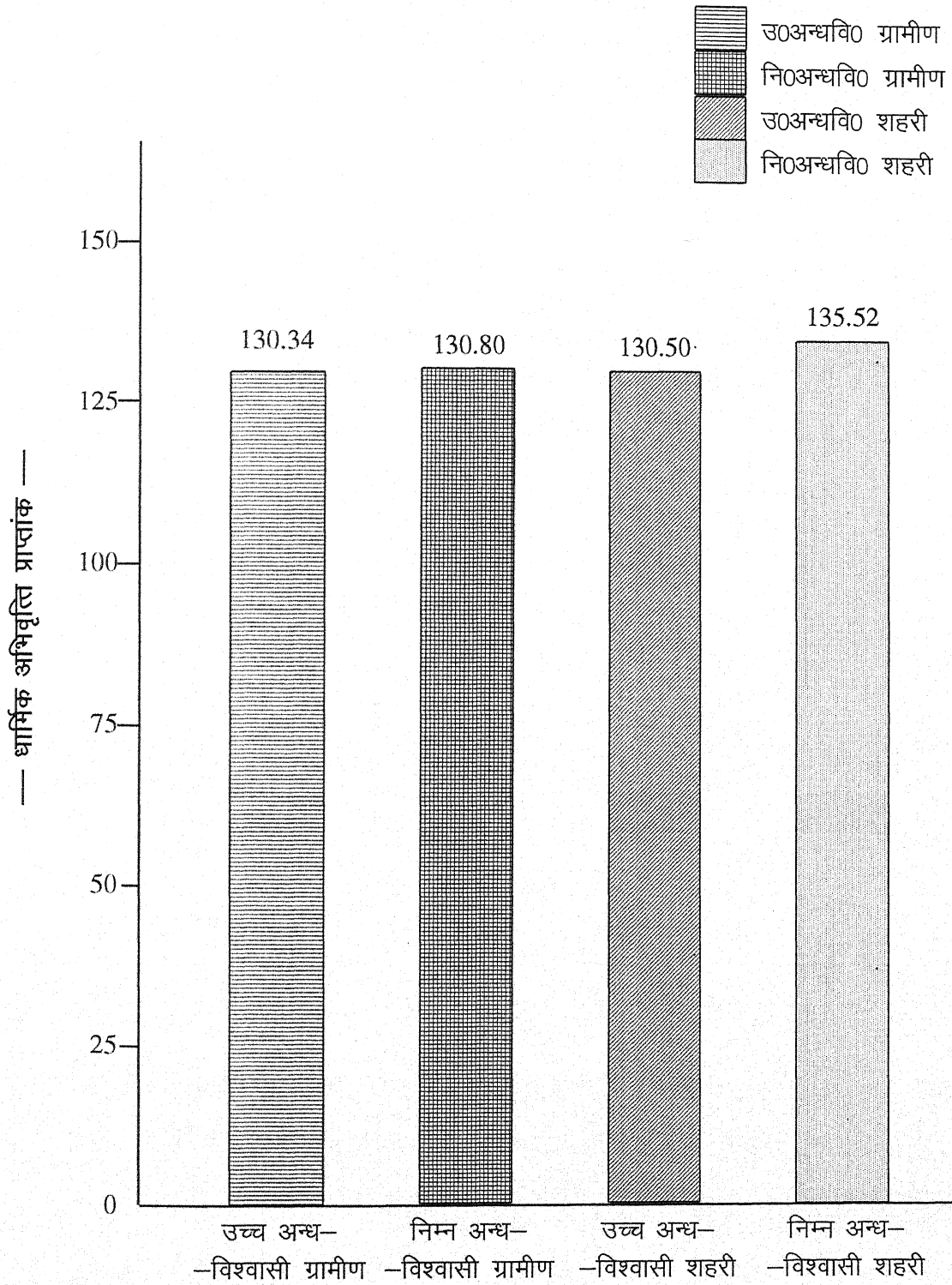
व्यक्तियों की धार्मिक प्रवृत्ति (133.26) अधिक है । ग्रामीण व्यक्ति कम धार्मिक प्रवृत्ति (130.54) के हैं, जबकि शहरी व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (133.49) के हैं। निम्न अन्धविश्वास स्तर से सम्बन्धित शहरी व्यक्तियों में सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति (135.52) पाई जाती हैं । बार चित्र-17 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

उच्च व निम्न अन्धविश्वास स्तर तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई । तालिका-50 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि धार्मिक अभिवृत्ति को

<u>तालिका-50</u>

धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण, परिणाम सारांश-

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ) अन्धविश्वास स्तर)	556.84	1	556.84	1.49	$>.05$
ब) (आवास क्षेत्र)	441.57	1	441.57	1.18	$>.05$
अ × ब	385.86	1	385.86	1.03	$>.05$
समूहान्तर्गत	113293.31	303	373.90	.05 ⟶ 3.875	

अन्धविश्वास सार्थक रूप से .05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये एफ अनुपात का मान 3.875 होना चाहिये, जबकि प्राप्त एफ अनुपात 1.49 इस आवश्यक मान से कम प्राप्त हुआ है, अतः अन्धविश्वास स्तर धार्मिक-अभिवृत्ति को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । इसी प्रकार ग्रामीण व शहरी आवास क्षेत्र धार्मिक अभिवृत्ति को सार्थक रूप से .05 स्तर पर प्रभावित (एफ अनुपात 1.18) नहीं करता है। अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से (एफ अनुपात 1.03) प्रभावित नहीं करता है ।

उक्त परिणाम से स्पष्ट है कि शून्य उपकल्पना (18), "धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।" सत्य सिद्ध होती है ।

13– **धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन–**

उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा पुरुषों व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन की गणना की गई ।

तालिका–51

उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा लिंग (पुरुष व महिला) की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

सामाजिक आर्थिक स्तर	गणना	पुरुष	महिला	योग
उच्च	कुल संख्या	59	91	150
	मध्यमान	136.02	136.07	136.05
	प्रामाणिक विचलन	18.11	17.65	17.83
निम्न	कुल संख्या	113	61	174
	मध्यमान	134.39	125.77	131.36
	प्रामाणिक विचलन	16.47	21.04	18.66
योग	कुल संख्या	172	152	324
	मध्यमान	134.95	131.93	133.53
	प्रामाणिक विचलन	17.07	19.74	18.43

परिणाम तालिका–51 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि पुरुषों की धार्मिक प्रवृत्ति

बार चित्र – 18

धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरुष व महिला) का प्रभाव
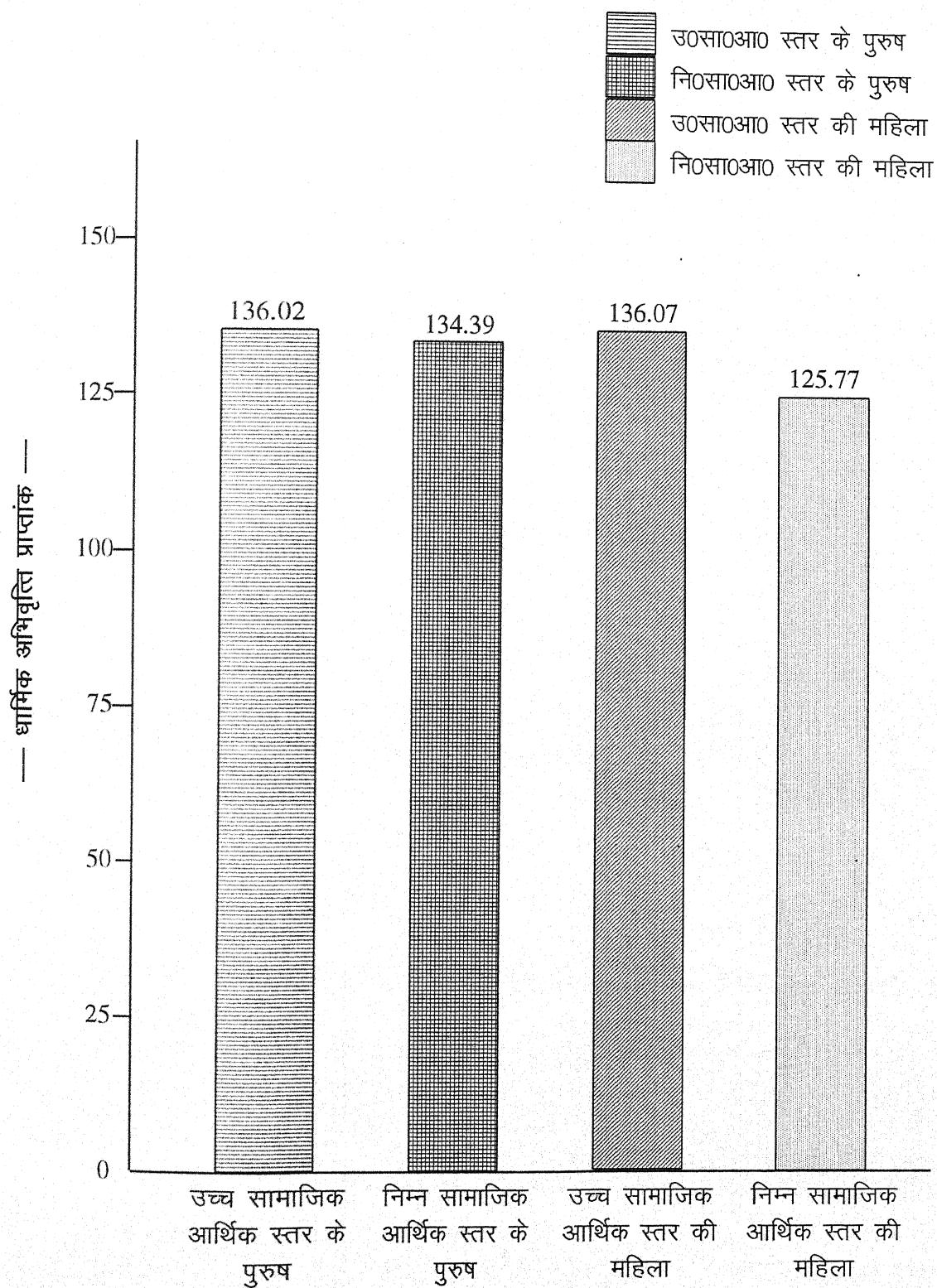
(134.95) अधिक हैं, जबकि महिलाओं की धार्मिक प्रवृत्ति (131.93) तुलनात्मक रूप से कमहै। इसी प्रकार उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित व्यक्तियों की धार्मिक प्रवृत्ति (136.05) अधिक है, जबकि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित व्यक्तियों की धार्मिक प्रवृत्ति (131.36) तुलनात्मक रूप से कम है । बार चित्र–18 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर तथा लिंग (पुरूष व महिला) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई ।

<u>तालिका–52</u>

धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के सार्थकप्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश–

प्रसरण के स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ) सामाजिक आर्थिक स्तर)	2676.06	1	2676.06	8.12	< .01
ब) लिंग)	1380.95	1	1380.95	4.19	< .05
अ× ब	1414.39	1	1414.39	4.29	< .05
समूहान्तर्गत	105339.08	320	329.18	.05 → 3.875 .01 → 6.73	

तालिका–52 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि सामाजिक आर्थिक स्तर सार्थक रूप से धार्मिक अभिवृत्ति को .01 स्तर पर प्रभावित करता है । .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक एफ अनुपात का मान 6.73 होना आवश्यक है, जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इससे अधिक 8.12 प्राप्त हुआ है, अतः उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर धार्मिक अभिवृत्ति को सार्थक रूप में .01 स्तर पर प्रभावित करता है। इसी प्रकार लिंग (पुरूष व

महिला) भी धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है । प्राप्त एफ अनुपात 4.19 सार्थक प्रभाव के लिये आवश्यक एफ अनुपात 3.875 (.05 स्तर पर) से अधिक है, अतः लिंग द्वारा धार्मिक अभिवृत्ति प्रभावित होती है । सामाजिक आर्थिक स्तर तथा लिंग का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर (एफ अनुपात 4.29) सार्थक रूप से प्रभावित करता है ।

उक्त परिणामों के आधार पर शून्य उपकल्पना (19), "धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्थिति (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" गलत सिद्ध होती है ।

14– **धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर(उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन–**

उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शहरी व ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक

तालिका–53

उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

सामाजिक आर्थिक स्तर	गणना	ग्रामीण	शहरी	योग
उच्च	कुल संख्या	44	106	150
	मध्यमान	134.57	136.67	136.05
	प्रामाणिक विचलन	17.42	17.96	17.83
निम्न	कुल संख्या	118	56	174
	मध्यमान	130.24	133.73	131.36
	प्रामाणिक विचलन	19.15	17.34	18.66
योग	कुल संख्या	162	162	324
	मध्यमान	131.41	135.65	133.53
	प्रामाणिक विचलन	18.79	17.80	18.43

बार चित्र – 19

धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव
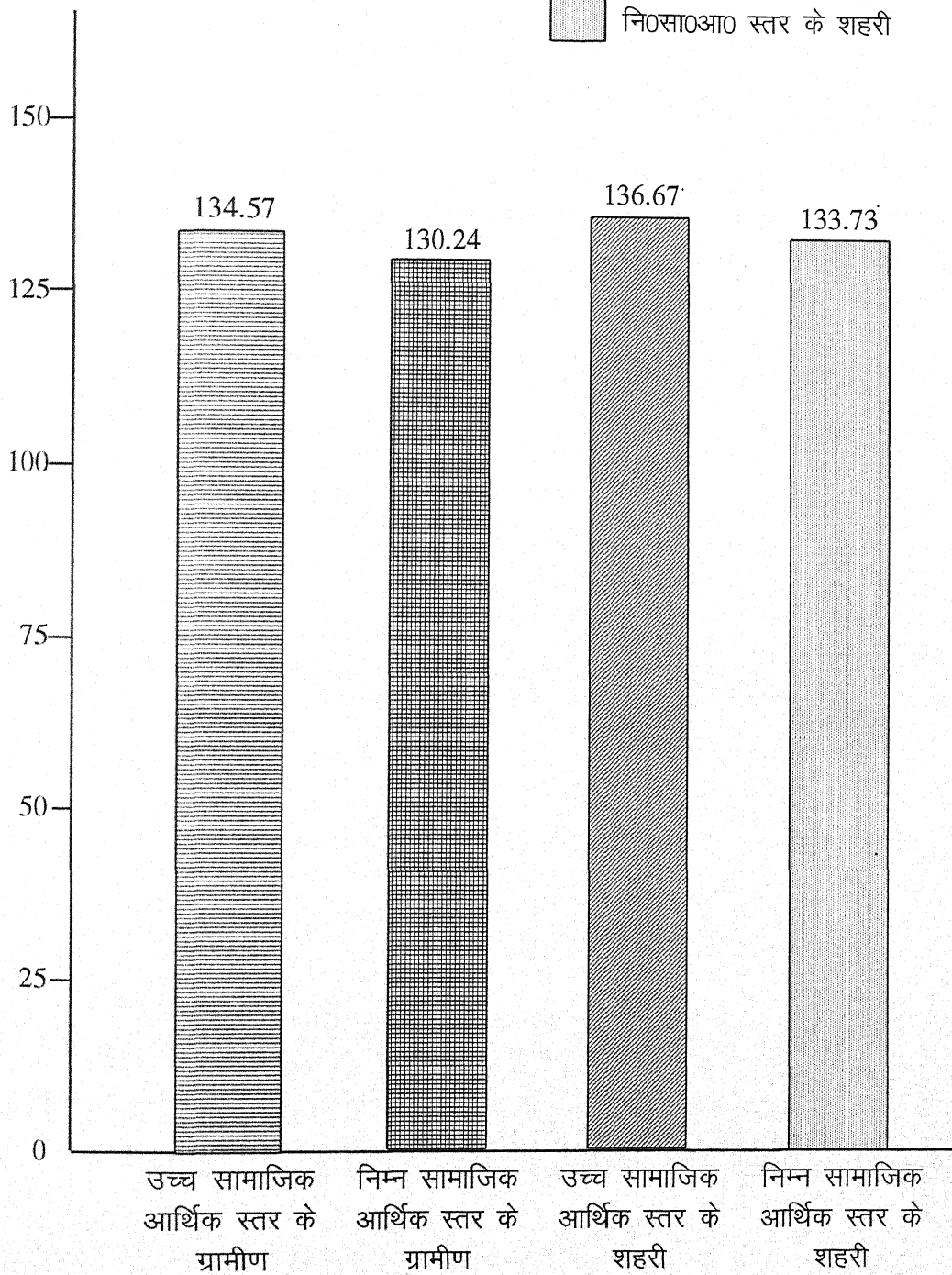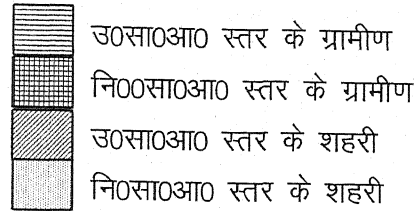
अभिवृत्ति का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान व प्रामाणिक विचलन की गणना की गई –

तालिका–53 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (135.65) अधिक है, जबकि ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति (131.41) कम है । उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति (136.05) के हैं जबकि निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित व्यक्ति कम धार्मिक प्रवृत्ति (131.36) के हैं। सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति (136.67) उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित शहरी व्यक्तियों की पाई गई । बार चित्र–19 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण की गणना की गई ।

तालिका–54

धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण–विश्लेषण परिणाम सारांश–

प्रसरण का स्रोत	**वर्गों का योग**	**स्वतन्त्रता के अंश**	**मध्यमान वर्ग**	**एफ अनुपात**	**प्रायिकता**
अ) सामाजिक आर्थिक स्तर	903.52	1	903.52	2.68	>.05
ब) आवास क्षेत्र)	534.18	1	534.18	1.58	>.05
अ × ब	32.84	1	32.84	.097	>.05
समूहान्तर्गत	107683.08	320	336.51	.05 ⟶	3.875

तालिका–54 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि सामाजिक आर्थिक स्तर सार्थक रूप से .05 स्तर पर धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करता है। प्राप्त एफ अनुपात 2.68 सार्थकप्रभाव के लिये (.05 स्तर पर) आवश्यक एफ अनुपात 3.875 से कम है ।

इसी प्रकार आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) भी धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित (एफ अनुपात 1.58) नहीं करता है । सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का अन्त: क्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर (एफ अनुपात .097) सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है ।

अत: शून्य उपकल्पना (20), "धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।" सही सिद्ध होती है।

15– **धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन–**

पुरूषों व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया; जिनका आवास क्षेत्र

तालिका–55

लिंग (पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र ग्रामीण व शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का मध्यमान व प्रामाणिक विचलन–

लिंग	गणना	ग्रामीण	शहरी	योग
पुरूष	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	133.75	134.42	134.08
	प्रामाणिक विचलन	17.23	17.19	17.21
महिला	कुल संख्या	150	150	300
	मध्यमान	129.08	133.19	131.13
	प्रामाणिक विचलन	17.78	20.92	19.68
योग	कुल संख्या	300	300	600
	मध्यमान	131.41	133.80	132.60
	प्रामाणिक विचलन	17.66	19.15	18.54

बार चित्र – 20

धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरुष व महिला)
तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का प्रभाव
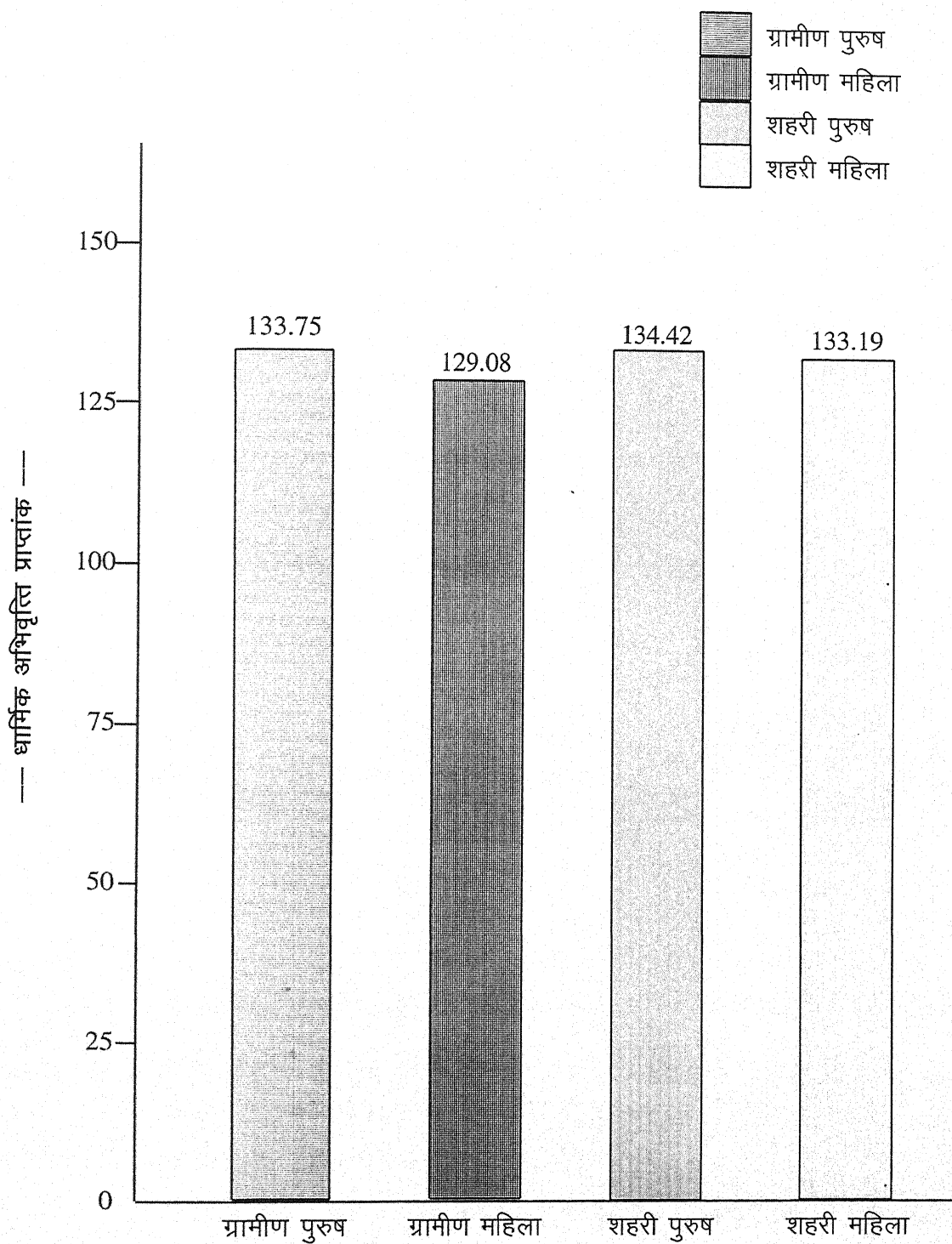
ग्रामीण व शहरी था । इस उद्देश्य से मध्यमान व प्रामाणिक विचलन की गणना की गई –

तालिका–55 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि शहरी व्यक्ति अधिक धार्मिक अभिवृत्ति (133.80) रखते हैं, जबकि ग्रामीण व्यक्ति कम धार्मिक अभिवृत्ति (131.41) रखते हैं। इसी प्रकार महिलाओं (131.13) की अपेक्षा पुरुषों की धार्मिक प्रवृत्ति (134.08) अधिक है। ग्रामीण महिलायें सर्वाधिक कम धार्मिक प्रवृत्ति (129.08) रखती हैं, जबकि शहरी पुरुष सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति (134.42) रखते हैं । बार चित्र–20 द्वारा उक्त परिणामों की पुष्टि होती है ।

धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरुष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई ।

<u>तालिका–56</u>

धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरुष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के सार्थक प्रभाव का 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण परिणाम सारांश–

प्रसरण का स्रोत	**वर्गों का योग**	**स्वतन्त्रता के अंश**	**मध्यमान वर्ग**	**एफ अनुपात**	**प्रायिकता**
अ(लिंग)	1302.68	1	1302.68	3.84	> .05
ब(आवास क्षेत्र)	859.46	1	859.46	2.53	> .05
अ × ब	444.00	1	444.00	1.31	> .05
समूहान्तर्गत	201931.35	596	338.81	.05 ——> 3.85	

तालिका–56 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि लिंग (पुरुष व महिला) सार्थक रूप से धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक एफ अनुपात 3.85 होना चाहिये जबकि प्राप्त एफ अनुपात 3.84 इस आवश्यक मान से कम है, अतः लिंग सार्थक रूप से धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करता है। इसी प्रकार आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) भी धार्मिक अभिवृत्ति (एफ अनुपात 2.53) को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । लिंग (पुरुष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर प्रभावित नहीं करता (एफ अनुपात 1.31) है ।

अतः शून्य उपकल्पना (21),"धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरुष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा"।सत्य सिद्ध होती है ।

निष्कर्ष--

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं -

1- हिन्दुओं की अपेक्षा मुस्लिमों में अधिक धार्मिक-प्रवृत्ति होती है।

2- बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखते हैं ।

3- अधिक अन्धविश्वासी हिन्दुओं में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति होती है, जबकि मुस्लिमों में निम्न अन्धविश्वासी व्यक्तियों में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति पाई गई ।

4- उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित व्यक्तियों में अधिक धार्मिक अभिवृत्ति पाई गई ।

5- हिन्दू पुरुषों की अपेक्षा हिन्दू महिलाओं में अधिक धार्मिक अभिवृत्ति पाई गई । इसके विपरीत मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा मुस्लिम पुरुषों में अधिक धार्मिक अभिवृत्ति पाई गई ।

6- ग्रामीण मुस्लिमों की अपेक्षा शहरी मुस्लिमों में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति पाई गई ।

7- धर्म-सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्धविश्वास (उच्च व निम्न) का अन्त:क्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित करता है ।

8- धार्मिक अभिवृत्ति सार्थक रूप से धर्म सम्प्रदाय तथा लिंग से प्रभावित होती है ।

9- अन्धविश्वास तथा लिंग का अन्त:क्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है ।

10- सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा लिंग का अन्त:क्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है ।

11- ग्रामीण हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों की धार्मिक अभिवृत्ति लगभग समान पाई गई जबकि शहरी हिन्दू कम धार्मिक प्रवृत्ति के पाये गये तथा शहरी मुस्लिम सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखते हैं ।

आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव–

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत "हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर बहुकारकीय प्रभाव का अध्ययन" करना था। उक्त अनुसन्धान समस्या के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तियों के आधार पर आगामी अनुसन्धान किये जा सकते हैं ।

(1) सर्वप्रथम धर्म सम्प्रदाय के रूप में ईसाई तथा सिक्ख धर्म को भी सम्मिलित करते हुए चारों धर्म, सम्प्रदायों (हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई तथा सिक्ख) की धार्मिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है । साथ ही धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले बहुकारकीय कारकों के प्रभाव का भी अध्ययन करते हुए महत्वपूर्ण अनुसन्धान निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं ।

(2) धार्मिक अभिवृत्ति पर आत्म प्रत्यय का क्या प्रभाव पड़ता है ? इस उद्देश्य से अनुसन्धान किया जा सकता है । आत्म प्रत्यय के अन्तर्गत शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, नैतिक, शैक्षिक तथा बौद्धिक आदि सभी विमाओं का धार्मिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन सम्भव है समायोजन जैसे महत्वपूर्ण परिवर्ती का धार्मिक अभिवृत्ति से सम्भावित सम्बन्ध का अध्ययन भी सम्भव है । विद्यार्थियों के गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, शैक्षिक तथा संवेगात्मक समायोजन का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इस उद्देश्य से महत्वपूर्ण अनुसन्धान किये जा सकते हैं ।

(3) धार्मिक अभिवृत्ति का विभिन्न सामाजिक प्रेरणाओं जैसे – अनुमोदन प्रेरणा, शक्ति प्रेरणा, परोपकार प्रेरणा तथा उपलब्धि प्रेरणा आदि के साथ सम्बन्ध का अध्ययन किया जाना सम्भव है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । उसकी इन सामाजिक प्रेरणाओं का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इस प्रश्न के उत्तर द्वारा महत्वपूर्ण अनुसन्धान परिणाम प्राप्त हो सकते हैं ।

प्रस्तुत अनुसन्धान की परिसीमायें –

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद में ग्रामीण एवं शहरी हिन्दू तथा मुस्लिम आबादी पर किया गया है । यदि प्रस्तुत अध्ययन अन्य जनपदों पर भी किया जाता तब ऐसी स्थिति में प्राप्त परिणाम अधिक सामान्यीकृत किये जा सकते हैं । प्रतिदर्श का चयन 25 वर्ष से 40 वर्ष की आयु वर्ग से किया गया है । यदि इसके अतिरिक्त उच्च आयु वर्ग से सम्बन्धित वृद्धों की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन भी किया जाता तो ऐसी स्थिति में आयु वर्ग का धार्मिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना सम्भव हो सकता है ।

धर्म समुदाय के रूप में हिन्दू व मुस्लिम के अतिरिक्त ईसाई व सिक्ख समुदाय के पुरुष व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान के परिणामों को अधिक महत्वपूर्ण बना सकता था ।

*****

पंचम अध्याय

संक्षिप्तीकरण

<u>संक्षिप्तीकरण–</u>

पश्चिम में वैज्ञानिक चिन्तन की जो शुरूआत गैलीलियो और न्यूटन से हुई और जिसे पूर्ण आधुनिकता तक डार्विन, मार्क्स और फ्रायड ने पहुँचाया उसकी चकाचौंध अब धुंधली पड़ने लगी है । आज सारी भौतिक समृद्धि और भौतिक सुविधा के बावजूद व्यक्ति अपने को असहाय, शून्य में तैरता पा रहा है । भौतिक संसाधनों की प्रचुरता ही उनकी सारी समस्याओं का समाधान नहीं। पश्चिम की वैज्ञानिकता का पहला हमला आस्तिकता पर हुआ । वैज्ञानिकों ने ईश्वर को नकार दिया । धर्म को ढोंग कहा गया । नये चिन्तन से तर्क को प्रधानता मिली और आस्था को मूढ़ता का पर्याय माना जाने लगा । जल्दी ही आस्थाहीन भौतिक विकास की विकृतियां सामने आई। भौतिक समृद्धि का सुख शरीर को मिलने लगा, किन्तु मन बेचैन हो गया । निराशा के इस दौर में शरीर–वैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर गया कि क्या ईश्वर के प्रति आस्था, आध्यात्मिक विश्वास, उपासना एवं भक्ति के सहारे मनुष्य अधिक सुखमय जीवन व्यतीत कर सकता है ? 1995 में डाट माउथ–हिचकाक मेडिकल सेंटर अमेरिका द्वारा एक प्रयोग किया गया जिसमें पाया गया कि जिन हृदय रोगियों का आपरेशन किया जाने वाला है वह सफल होगा या नहीं इसका पूर्वानुमान लगाने का सबसे सरल व विश्वसनीय आधार यह है कि जिस रोगी का आपरेशन होने वाला है, वह धार्मिक दृष्टि से आस्थावान है या नहीं । इस केन्द्र में ऐसा प्रयोग 232 हृदय आपरेशनों में किया गया ओर पाया गया कि आस्थाहीन वर्ग में मृत्यु–दर आस्थावानों की अपेक्षा तीन गुना अधिक रही । इसी प्रकार के अन्य अनुसन्धानों से समान परिणाम प्राप्त हुए । प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत इसी आधार पर धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है ।

<u>प्रस्तुत अनुसन्धान समस्या का चयन–</u>

धर्म मनुष्य की आन्तरिक अनुभूतियों से सम्बन्धित है । धर्म को जटिल मानसिक क्रिया कहा गया है । धर्म के तीन पहलू हैं – ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक । ज्ञानात्मक पहलू का सम्बन्ध विवेक से है जबकि भावनात्मक का भावना से सम्बन्ध है । धर्म का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिये मनोविज्ञान का सहयोग लेना आवश्यक प्रतीत होता है । मनोविज्ञान की सहायता के बिना धर्म के आन्तरिक पहलुओं का अध्ययन असम्भव है ।

धर्म का आधार मानवीय हृदय एवं भावना है । धर्म में उपासक ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है । ईश्वर को वह विभिन्न गुणों से विभूषित करता है । ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, दयालु आदि है । ईश्वर के प्रति उपासक निर्भरता की भावना का भी प्रकाशन करता

है । ईश्वर के प्रति वह प्रेम, भय, आत्मसमर्पण आदि भावनाओं का प्रदर्शन करता है । धर्म में उपासक अपनी क्रियाओं द्वारा धार्मिक अनुभूतियों का प्रकाशन करता है ।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की धर्म के प्रति आस्था होती है अथवा अनास्था भी हो सकती है, जिसे हम धार्मिक अभिवृत्ति मानते हैं । मनुष्य की धार्मिक अभिवृत्ति पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ता है । यदि कोई व्यक्ति धर्म के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति रखता है, तब ऐसी स्थिति में निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कुछ विशेष कारकों के प्रभाव के कारण उसमें नकारात्मक अभिवृत्ति निर्मित हुई है । प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य इन्हीं विशेष कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना है ।

हमारे समाज में हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय के व्यक्ति सामान्य रूप से पाये जाते हैं। दोनों ही समुदाय धार्मिक अभिवृत्ति रखते हैं । क्या दोनों समुदायों की धार्मिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर होता है ? इस प्रश्न का उत्तर खोजना प्रस्तुत अनुसन्धान का प्रमुख लक्ष्य है ।

युंग ने दो प्रकार के व्यक्तित्व– अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी बताये हैं । अर्न्तमुखी व्यक्तित्व का व्यक्ति एकान्तप्रिय, आत्मगत दृष्टिकोण वाले, संकोची तथा व्यवहारकुशल नहीं होते हैं । ऐसे व्यक्तियों की वाक्–शक्ति कम होती है और आदर्शवादी विचारों से अधिक प्रभावित होते हैं । इसके ठीक विपरीत बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले समाज प्रिय, व्यवहार–कुशल, यथार्थवादी तथा वस्तुगत दृष्टिकोण वाले होते हैं । ऐसे व्यक्ति शीघ्र निर्णय को क्रियान्वित करते हैं । वाक् शक्ति अधिक होती है और संकोची प्रवृत्ति के नहीं होते हैं । इसके अतिरिक्त ऐसे भी व्यक्ति होते हैं, जिनमें उक्त दोनों ही व्यक्तित्व की विशेषतायें पाई जातीं हैं, जिन्हें उभयमुखी कहा जाता है । प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत व्यक्तित्व के प्रकार अर्थात् अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी का धार्मिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना भी है । धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्तर्मुखता अथवा बहिर्मुखता के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य है ।

धार्मिक अभिवृत्ति को अन्धविश्वास (Superstition) प्रभावित करता है अथवा नहीं ? यह जानना भी प्रस्तुत अनुसन्धान का एक अन्य उद्देश्य है । विश्वास जहां एक शक्ति है, मनुष्य को ऊँचा उठाती है, वहीं अन्धविश्वास उस शक्ति का एक ऐसा विकृत रूप है जो उसे पतन के गर्त में गिराता है । अन्धविश्वास की बीमारी एक ऐसी घृणित बीमारी है जो शरीर पर तो अपना प्रभाव डालती है, साथ ही मन तथा बुद्धि पर भी अपना प्रभाव डालकर नष्ट कर देती

है । हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय की धार्मिक-अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास का प्रभाव किस रूप में पड़ता है, इस तथ्य का विश्लेषण भी प्रस्तुत अनुसन्धान में किया गया है ।

व्यक्ति का शैक्षिक व सामाजिक-आर्थिक स्तर भी उसकी धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित कर सकता है । समाज में ऐसे व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति अलग प्रकार की हो सकती है, जिनका शैक्षिक तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च हो और इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर रखने वाले व्यक्तियों की अभिवृत्ति भिन्न प्रकार की हो सकती है । प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत धार्मिक अभिवृत्ति पर शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया है ।

पुरूष अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं अथवा महिलायें अधिक धार्मिक प्रवृत्ति की होती हैं ? इस प्रश्न का उत्तर खोजना एक विवाद को समाप्त करना होगा । धार्मिक-अभिंवृत्ति पर लिंग का क्या प्रभाव पड़ता है ? प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा इस तथ्य का विवेचन किया गया है । पुरूष तथा महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा दोनों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करना प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्वपूर्ण उद्देश्य है ।

धार्मिक-अभिवृत्ति पर परिवेश का प्रभाव भी पड़ सकता है । उदाहरण के रूप में शहर में रहने वाले व्यक्ति का परिवेश अलग प्रकार का होता है, जबकि ग्रामीण परिवेश-भिन्न रूप से व्यक्ति के विचारों को प्रभावित करता है । प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य इस परिवेशगत प्रभाव का अध्ययन करना भी है । इसके अन्तर्गत शहरी तथा ग्रामीण लोगों की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया ।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि धार्मिक-अभिवृत्ति पर अनेक कारकों का प्रभाव पड़ सकता है । इन सभी बहुकारकीय प्रभावों का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रस्तुत अनुसन्धान की निम्नलिखित समस्या का चयन किया गया –

" हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर बहुकारकीय प्रभाव का एक अध्ययन "

बहुकारकों के रूप में समुदाय (हिन्दू एवं मुस्लिम), व्यक्तित्व के प्रकार (अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी), अन्धविश्वास, सामाजिक-आर्थिक स्तर, लिंग तथा आवास क्षेत्र (शहरी व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत किया गया है ।

<u>सम्बन्धित परिवर्तियों का विवरण–</u>

<u>धर्म–</u>

धर्म शब्द की व्युत्पत्ति "धि" नामक धातु से हुई है जिसका अर्थ है धारण करना अर्थात् जो समाज को धारण करे वह धर्म है । (ध्रियते लोकः अनेन इति धर्मः) धरति धारयति वा लोकम् इति धर्मः । सम्भवतः धर्म की इस परिभाषा का अर्थ है कि धर्म मनुष्य का वह स्वभाव है जो सम्पूर्ण मानव–समाज को परस्पर संगठित रखता है । इस दृष्टि से धर्म को सामाजिक एकता अथवा संगठन की शक्ति के रूप में देखा जा सकता है । महर्षि कणाद द्वारा रचित वैशेषिक दर्शन के अनुसार "यतोभ्युदयनिः श्रेयसिद्धिः सः धर्मः" अर्थात धर्म वह है जो मनुष्य की सर्वागीण उन्नति तथा उसके कल्याण में सहायक हो ।

मनु ने धर्म के दस लक्षणों का उल्लेख करते हुए धर्म को परिभाषित किया है – "धृतिः क्षमा दमोअस्तेयम् शौचमिद्रियनिग्रहः धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकम् धर्मलक्षणम्" अर्थात् धैर्य, क्षमा, संयम, चौरी न करना, स्वच्छता, सभी इन्द्रियों को वश में रखना, विवेकशीलता, विद्या, सत्य बोलना तथा कभी क्रोध न करना ये धर्म के दस लक्षण हैं ।

धर्म के अंग्रेजी अनुवाद "रिलिजन" के अर्थ का विश्लेषण करते हुए भी धर्म के स्वरूप को समझा जा सकता है । "रिलिजन" शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के "रिलिजेयर" नामक शब्द से हुई है , जिसका अर्थ है "बांधना" । जो मनुष्य तथा ईश्वर में सम्बन्ध स्थापित करता है और मनुष्यों को परस्पर बाँधता है या संगठित रखता है ।

धर्म को परिभाषित करना अत्यन्त कठिन कार्य है । जैसा कि जे0बी0 प्राट (J.B. Pratt)का कहना है – "यह यत्किंचित बेतुका तथ्य प्रतीत होता है कि धर्म नाम के लोक प्रचलित शब्द जो मनुष्य जाति के होठों से बार–बार निकलता है और जिससे मानव–जीवन के सबसे प्रत्यक्ष व्यापार का बोध होता है, फिर भी यह इतना जटिल है कि इसे परिभाषित करना काफी दुष्कर है ।" फिर भी धर्म की सही परिभाषा वही हो सकती है जो धर्म के सभी पहलुओं ज्ञान, भावना एवं कर्म को महत्ता प्रदान करें ।

धर्म की कोई पूर्णतः निश्चित तथा सर्वमान्य परिभाषा देना अत्यन्त कठिन है, क्योकि विभिन्न दार्शनिक भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से इसके स्वरूप की व्याख्या करते रहे हैं । उदाहरणार्थ, कुछ दार्शनिक धर्म के उस पक्ष को सर्वप्रमुख मानकर इसके अर्थ एवं स्वरूप की व्याख्या करते हैं जिसे सैद्धान्तिक या बौद्धिक पक्ष कहा जाता है, जबकि कुछ अन्य दार्शनिकों के मतानुसार धर्म

का भावनात्मक पक्ष ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । इसी प्रकार कुछ दार्शनिक इन दोनों दृष्टिकोणों को अस्वीकार करते हैं तथा धर्म के व्यावहारिक अथवा क्रियात्मक पक्ष को ही प्रमुख मानते हैं, जिसमें आचरण तथा कर्मकाण्ड या धार्मिक अनुष्ठानों को विशेष महत्व दिया जाता है । जेम्स एच0ल्यूबा ने अपनी पुस्तक "ए साइकॉलॉजिकल स्टडी आफ रिलिजन" में विभिन्न दार्शनिकों द्वारा दी गई धर्म की पचास भिन्न-भिन्न परिभाषाओं का उल्लेख किया है । इनमें से प्रत्येक परिभाषा धर्म के किसी एक विशेष अंश या पक्ष को सर्वाधिक महत्व देकर उसके स्वरूप की व्याख्या करती है । ऐसी स्थिति में हमारे लिये धर्म का कोई स्पष्ट और निश्चित अर्थ समझना बहुत कठिन हो जाता है ।

धर्म की कोई एक निश्चित एवं सर्वमान्य परिभाषा खोजने के स्थान पर डॉ0 वर्मा के अनुसार कुछ ऐसे सामान्य तत्वों को खोजने का प्रयास करना चाहिये जिन्हें धर्म के मूल तत्व कहा जा सकता है और जो किसी न किसी रूप में सभी धर्मो में पाए जाते हैं । धर्म के प्रमुख मूल तत्व इस प्रकार हैं –

(1) किसी अलौकिक या अतिमानवीय शक्ति अथवा सत्ता में विश्वास धर्म का आधारभूत अनिवार्य तत्व है ।

(2) इस अलौकिक शक्ति या सत्ता की पूजा अथवा उपासना धर्म का दूसरा मूल तत्व है ।

(3) उन समस्त व्यक्तियों, स्थानों, पुस्तकों तथा वस्तुओं को अति पवित्र मानना जिनका सम्बन्ध इस अलौकिक शक्ति से है ।

(4) मनुष्य के लिये दु:ख से मुक्ति का आश्वासन धर्म का चौथा मूल तत्व है ।

उक्त धर्म के मूलतत्व के आधार धर्म की अग्रलिखित परिभाषा दी जा सकती है –

" धर्म मानव-जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करने वाली वह व्यापक अभिवृत्ति है जो सर्वाधिक मूल्यवान, पवित्र, सर्वज्ञ तथा शक्तिशाली समझे जाने वाले आदर्श और अलौकिक उपास्य विषय के प्रति अखंड आस्था एवं पूर्ण प्रतिबद्धता के फलस्वरूप उत्पन्न होती है और जो मनुष्य के दैनिक आचरण तथा प्रार्थना, पूजा-पाठ, जप-तप आदि बाह्य कर्मकांड में अभिव्यक्त होती है ।"

धर्म की अवस्थायें –

प्रोफेसर एटकिन्सन ली (Atkinson Lee) ने धर्म की निम्नलिखित अवस्थायें बताई हैं –

(1) प्रारम्भिक धर्म (Primitive Religion)
(2) प्राकृतिक धर्म (Naturalistic Religion)
(3) मानवीय धर्म (Humanistic Religion)
(4) आध्यात्मिक धर्म (Spiritual Religion)

प्रारम्भिक धर्म असभ्य एवं अशिक्षित जनता के धार्मिक विचारों का सूचक है । प्राकृतिक धर्म में समस्त प्रकृति पूजा का विषय बन जाता है । मानवीय धर्म में मानव को देवता के रूप में चित्रित किया जाता है । मानव की पूजा का अर्थ मानवीय मूल्यों की पूजा है । आध्यात्मिक धर्म धार्मिक अवस्था का अन्तिम एवं विकसित रूप है । ईसाई एवं इस्लाम धर्म अध्यात्मवादी धर्म के उदाहरण हैं जो कि एकेश्वरवाद से पूर्ण है ।

धार्मिक–दर्शन के प्रकार–

दार्शनिक दृष्टिकोण से धर्म को निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता है –

(1) अनीश्वरवाद
(2) सर्वेश्वरवाद
(3) द्वैतवाद
(4) अनेकेश्वरवाद
(5) एकेश्वरवाद

अन्धविश्वास–

किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की प्रगति एवं समुन्नति में उसकी चिन्तन पद्धति का सबसे बड़ा योगदान होता है । प्राचीन काल की स्थिति भिन्न थी । तब बुद्धि तथा विज्ञान का इतना अधिक विकास नहीं हुआ था और न ही चिन्तन को प्रभावित करने वाले आज जैसे सुविकसित तन्त्र थे । उपलब्ध प्रकृति प्रदत्त परिस्थितियों तथा मानवी पुरूषार्थ प्रगति अथवा अवनति के कारण बनते थे । ऐसी स्थिति में सामाजिक जीवन में अनेकों कुरीतियों, बुराईयों, दुष्प्रवृत्तियों और अन्ध–परम्पराओं का साम्राज्य था । परन्तु जब से शिक्षा, विज्ञान का विकास हुआ, प्रसार हुआ,

लोग शिक्षित हुए और समाज में बुद्धि–जीवियों की संख्या में वृद्धि हुई । उसी के अनुरूप सामाजिक जीवन की अन्ध–परम्पराओं को समाप्त हो जाना चाहिये था, किन्तु सत्यता यह है कि प्रबुद्ध और बुद्धिजीवी कहे जाने वाले, तर्क और विचारशीलता की दुनियाँ में जीने वाले व्यक्ति भी किसी के छींक देने अथवा काली बिल्ली के रास्ता काटने पर ठिठक जाते हैं और आवश्यक कार्य के लिए भी जाना रोक देते हैं ।

संसार में घटित प्रत्येक घटना के पीछे कार्य–कारण सम्बन्ध होता है । वर्तमान वैज्ञानिक युग में इस कार्य–कारण सम्बन्ध की खोज कर नवीन तथ्यों को प्रकट किया जा रहा है और भविष्य में भी यह प्रयास निरन्तर चलता रहेगा । स्वाभाविक और प्राकृतिक घटनाओं के पीछे गम्भीर कारण खोजने ओर उनका सम्बन्ध अपने कार्यों की सफलता या असफलता से जोड़ने की प्रवृत्ति सामान्य श्रेणी के व्यक्तियों में पाई जाये तो इसका कारण अशिक्षा और अज्ञानता मानी जाती है, परन्तु दुःख के साथ यह सत्य स्वीकार करना पड़ रहा है कि पढ़े–लिखे शिक्षित व्यक्ति भी इससे आकंठ प्रभावित हैं । यही पढ़े–लिखे व्यक्ति प्रतिष्ठा–निर्देश के रूप में अशिक्षित व अज्ञानी व्यक्तियों को अन्ध–परम्पराओं की दलदल में धक्का लगा रहे हैं । जिन व्यक्तियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समाज की कुरीतियों, बुराइयों, अन्ध–परम्पराओं को समाप्त कराने में अपनी प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह करेंगे वे ही मानसिक विकारों से ग्रस्त हैं । यही कारण है कि आज भी ये अन्ध–परम्परायें अन्ध–विश्वास के रूप में हमारी मनो–भूमि पर शासन कर रही हैं और वे इतनी प्रभावक हैं कि उन्होंने हमारे विचारों और भावों से भी गहरे धरातल पर संस्कार के रूप में जम गई है । इन संस्कारों को यथार्थ के धरातल पर संशोधित तथा परिमार्जित करने की आवश्यकता है । अन्ध–विश्वास को जीवन और समाज के हर क्षेत्र से निरस्त कर स्वस्थ मान्यताओं, आदर्श परम्पराओं को प्रतिष्ठित करने की नितान्त आवश्यकता है ।

मनुष्य अपने विश्वासों की ही छाया है । जैसा मनुष्य का विश्वास होगा वैसे ही उसके संस्कार बनते जायेंगे । उन्हीं के आधार पर वह अन्धेरे रास्तों पर चलने को तैयार हो जायेगा । आत्म–विश्वास, ईश्वर के प्रति विश्वास, आदर्शों के प्रति आस्था जहां अपनी सत्तामूलक शक्ति से लोगों को लाभान्वित करती है वहीं यह विश्वास की शक्ति भी उसके मूल में रहती है ।

विश्वास जहाँ एक शक्ति है, मनुष्य को ऊँचा उठाती है, वहीं अन्ध–विश्वास उस शक्ति का ऐसा विकृत रूप है जो उसे पतन के गर्त में गिराता है । हमारे समाज में इस शक्ति का विकृत रूप एक महामारी के रूप में फैल गया है । अन्धविश्वास की बीमारी एक ऐसी घृणित

बीमारी है जो शरीर पर तो अपना प्रभाव डालती है, साथ ही मन, बुद्धि और आत्मा तक को अपना ग्रास बना कर उसे जड़ बना देती है । यही कारण है कि व्यक्ति अन्ध–विश्वासों के कारण प्रत्यक्षतः हानि उठाकर भी दोषी अन्ध–विश्वासों को नहीं समझते । अन्ध–विश्वासों को धर्म के भय के कारण नहीं छोड़ पाते हैं । उन्हें किसी नये अनिष्ट की आशंका होने लगती है । उल्टा यह तर्क देने लगते हैं कि इन विधि–विधानों को मानने से यह हानि हो गई, अब अगर इनका पालन नहीं करेंगे तब पता नहीं आगे क्या हानि होगी ।

जिस प्रकार भौतिक जगत में सफाई व स्वच्छता की आवश्यकता है, उसी प्रकार मस्तिष्क की दुष्प्रवृत्तियाँ, कुसंस्कारों तथा अन्ध–विश्वासों की सफाई व स्वच्छता भी आवश्यक है । यह स्वच्छता ही पवित्र चिन्तन–मनन विकसित करती है । स्वभाव से आलसी मनुष्य हर बात को तर्क की कसौटी पर नहीं कसता और न विवेकपूर्वक तथ्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। जो कुछ भी आसपास हो रहा है उसी को उचित मानकर अपना लेना बुद्धिमानी नहीं है । यह प्रवृत्ति एक अन्धी परम्परा को जन्म देती है, जिसके कारण समाज में बुराइयाँ और दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ती चली जाती हैं ।

इस प्रकार अनेक कुरीतियाँ अपने समाज को जर्जर बना रही हैं । किसी भी समाज अथवा देश की प्रगति में स्वस्थ रीति–रिवाजों एवं सत्परम्पराओं का विशेष योगदान होता है। परम्परागत प्रचलन भी कितने ही व्यक्तियों एवं समाज की प्रगति में सहायक सिद्ध होते हैं । ऐसे विवेकपूर्ण, उपयोगी रीति–रिवाजों, स्वस्थ परम्पराओं का अनुकरण उपयोगी है । किन्तु साथ ही उन परम्पराओं, रीति–रिवाजों, अन्ध–विश्वासों की भी कमी नहीं है जो प्रचलन के रूप में लम्बे समय से चले आ रहे हैं । जिन्हें विवेक की कसौटी पर कसने पर वर्तमान में उनकी कोई उपयोगिता तथा औचित्य दृष्टिगत नहीं होता है । अन्ध–विश्वासों, कुरीतियों, कुपरम्पराओं का जितना बोलबाला अपने देश में है उतना अन्य किसी भी दूसरे देश में नही है । इसके कारण देश और समाज की प्रगति बाधक हो रही है ।

<u>व्यक्तित्व–</u>

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के Personality शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। Personality शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के Persona शब्द से हुई है जिसका अर्थ वेशभूषा अथवा मुखौटा है, जिसे नाटक के पात्र पहनते हैं । नाटकों में कार्य करते समय अभिनेता एक प्रकार के मुखौटे या नकाब का प्रयोग करते हैं जिससे उनका वास्तविक रूप

छिपा रहे और जिस व्यक्तित्व को वह अभिव्यक्त करना चाहते हैं वह दर्शकों के सामने आये ।

स्टेग्नर एवं कारवास्की (1952) ने व्यक्तित्व को तीन रूपों में परिभाषित करने का प्रयास किया है । प्रथम, उद्दीपक के रूप में एक व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है । यह प्रभाव कभी अधिक होता है कभी कम, कभी धनात्मक होता है तो कभी ऋणात्मक । इसके अतिरिक्त एक ही उद्दीपक का प्रभाव विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है । द्वितीय प्रतिक्रिया के रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपना भिन्न व्यक्तित्व रखता है । वह अपने विशिष्ट रूप में उद्दीपक के प्रभाव को अभिव्यक्त करता है । तृतीय, व्यक्तिगत गुणों के समुच्चय के रूप में व्यक्तित्व होता है। व्यक्ति की अभिवृतियाँ, आकांक्षायें, बुद्धि तथा प्रेरणा आदि सभी ऐसे तत्व हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति प्रतिक्रियायें करता है। वुडवर्थ के उद्दीपक-प्राणी-अनुक्रिया (S - O - R) सूत्र पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि उद्दीपक एवं प्रतिक्रिया के मध्य व्यक्ति की बुद्धि, प्रेरणा, उद्दीपक के संबंध में उसका पूर्व अनुभव तथा परिस्थिति -विशेष के प्रति उसकी मनोवृत्ति इत्यादि मध्यवर्ती परिवर्ती होते हैं, जो उसकी प्रतिक्रिया को प्रभावित करते हैं ।

ओलपोर्ट ने व्यक्तित्व को व्यक्ति की मनोदैहिक प्रणालियों का आन्तरिक गत्यात्मक संगठन बताया है, जिसके द्वारा उसका वातावरण के साथ एक अनोखा समायोजन निर्धारित होता है ।

उक्त परिभाषा द्वारा व्यक्तित्व की निम्नलिखित तीन विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है -

(1) व्यक्तित्व का स्वरूप गत्यात्मक होता है ।

(2) व्यक्तित्व मनोदैहिक विशेषताओं का संगठन है ।

(3) व्यक्तित्व के निर्माण अथवा विकास में वातावरण का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है ।

<u>व्यक्तित्व के प्रकार</u> (Types of Personality)

हिप्पोक्रेटीज के अनुसार व्यक्तित्व निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं -

1- मन्द - धीमे तथा निर्बल व्यक्तित्व वाले

2– उदासीन – निराशावादी

3– क्रोधी – शीघ्र क्रोधित होने वाले

4– आशावादी – आशा के साथ शीघ्र कार्य करने वाले

क्रेश्मर ने शारीरिक रचना के आधार पर व्यक्तित्व को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है –

1– पिकनिक – छोटे और मोटे शरीर वाले

2– ऐस्थैनिक – लम्बे और पतले शरीर वाले

3– ऐथलैटिक – हड्डी तथा मांसपेशियों के सम्बन्ध में शक्तिशाली तथा चौड़े कन्धे वाले

4– डिसप्लास्टिक – बेडौल शरीर वाले ।

शेल्डन ने भी शारीरिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है –

1– गोल शरीर वाले – कोमल तथा गोल शरीर वाले होते हैं ।

2– हृष्ट–पुष्ट शरीर वाले – शक्तिवान तथा हृष्ट पुष्ट शरीर वाले होते हैं ।

3– शक्तिहीन शरीर वाले – ऐसे व्यक्ति शक्तिहीन, लम्बे, पतले तथा अविकसित मांसपेशियों वाले होते हैं ।

मॉर्गन तथा गिलीलेंड के अनुसार स्वभाव के अनुसार व्यक्तित्व को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है –

1– प्रफुल्ल – खुश–मिजाज तथा आशावादी

2– उदास – उदास तथा निराशावादी

3– चिड़चिड़े – गर्म–मिजाज, झगड़ालू तथा चिड़चिड़े व्यक्तित्व वाले ।

4– अस्थिर – अस्थिर तथा असन्तुलित व्यक्तित्व वाले ।

युंग ने 1923 में व्यक्तित्व के सामाजिक रूपों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्गीकरण किया । यह वर्गीकरण इस प्रकार है –

1– **<u>बहिर्मुखी</u>** (Extrovert)

बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति समाज एवं सामाजिक वातावरण में अधिक रूचि रखने के कारण अत्यधिक सामाजिक होते हैं । प्रत्येक सामाजिक उत्सव में भाग लेना, समूहों का नेतृत्व करना तथा अपने स्वभाव के व्यक्तियों से मित्रता स्थापित करना उनके व्यक्तित्व का एक आवश्यक अंग बन जाता है । ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति संतुष्ट, उदार एवं सदैव दूसरों की सहायता करने

के लिये तत्पर रहते हैं । वे किसी भी प्रकार का निर्णय लेने में अत्यधिक तत्परता दिखाते हैं और उसे कार्यान्वित करने में भी काफी शीघ्रता करते हैं । इनका व्यक्तित्व बाह् परिस्थितियों द्वारा अधिक और आन्तरिक भावना द्वारा कम निर्धारित होता है । नेता, व्यवसायी, राजनीतिज्ञ तथा अभिनेता आदि इसी समूह में आते हैं ।

2– <u>अन्तर्मुखी</u> (Introvert)

अन्तर्मुखी व्यक्ति की विशेषतायें बहिर्मुखी व्यक्ति की विशेषताओं से सर्वथा भिन्न होती हैं। यह आत्म–केन्द्रित होते हैं तथा इन्हें न तो समाज में रूचि रहती है और न ही वे मित्रों के साथ समय व्यतीत करना ही पसन्द करते हैं । फलस्वरूप सामाजिक उत्सव ऐसे व्यक्तियों के लिये अधिक महत्व नहीं रखते । ऐसे व्यक्ति प्रकृति में अधिक रूचि रखते हैं । वे व्यवहार कुशल न होने के कारण प्रायः उदास रहने वाले तथा अत्यधिक संवेगात्मक एवं दिवा–स्वप्न में विचरण करने वाले होते हैं । वैज्ञानिक, दार्शनिक तथा अत्यधिक धार्मिक व्यक्ति इस वर्ग में आते हैं ।

नेमैन तथा याकोरजिंस्की ने बहिर्मुखी तथा अन्तर्मुखी परीक्षण के आधार पर वक्र–रेखा का निर्माण किया और बताया कि वक्र–रेखा के एक सिरे पर बहिर्मुखी तथा दूसरे पर अन्तर्मुखी व्यक्तित्व बहुत कम संख्या में पाये जाते हैं । अधिकतर व्यक्ति वक्र–रेखा के बीच में आते हैं, जिनमें दोनों ही तरह की विशेषतायें देखी जा सकती हैं । मध्यम श्रेणी के ऐसे व्यक्तियों को उभयमुखी (Ambivert) कहा जा सकता है। इस प्रकार के व्यक्तित्व एक समय में बहिर्मुखी हैं तो दूसरे समय में ऐसे व्यक्ति अन्तर्मुखी रूप में मिलते हैं ।

<u>सामाजिक आर्थिक स्थिति–</u>

सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत व्यवहार का अध्ययन करने के लिये सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन आवश्यक होता है । माता–पिता की आर्थिक स्थिति बालक के व्यवहार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है । सन्तोषजनक आर्थिक–सामाजिक स्थिति बालकों को सही दिशा में विकसित करने में सहायक होती हैं । सुख सुविधाओं, शक्ति, अवसरों, पदार्थों एवं भोग वस्तुओं के अभाव में व्यक्ति के व्यवहार, उसके सोचने के ढंग तथा मनोवृत्तियों में महत्वपूर्ण अन्तर आ सकता है । इसका कारण उसकी शैक्षिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति ही है । उपयुक्त सामाजिक–आर्थिक स्तर के अभाव में कुपोषण, अस्वास्थ्यकर जीवन दशायें,

स्थान की कमी, विद्यालयों में निम्न स्तर की शैक्षिक सुविधा, रोजगार के अवसरों की कमी, माता–पिता की देखभाल एवं स्नेह में कमी इत्यादि कारक व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं ।

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य–

प्रस्तुत अनुसन्धान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2– अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2.1. हिन्दू अन्तर्मुखी तथा हिन्दू बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2.2. मुस्लिम अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2.3. हिन्दू अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

2.4. हिन्दू बहिर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3– हिन्दू तथा मुस्लिम के मध्य अन्ध–विश्वास का अध्ययन करना ।

3.1. उच्च अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा निम्न अन्धविश्वासी हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3.2. उच्च अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों तथा निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3.3. उच्च अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

3.4. निम्न अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना

4– उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक–स्तर के व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4.1. उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4.2. उच्च तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4.3. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

4.4. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्त का अध्ययन करना ।

5– पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5.1. हिन्दू पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5.2. मुस्लिम पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5.3. हिन्दू पुरूष तथा मुस्लिम पुरूषों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

5.4. हिन्दू महिला तथा मुस्लिम महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6– शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6.1. शहरी हिन्दू तथा ग्रामीण हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6.2. शहरी मुस्लिम तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6.3. शहरी हिन्दू तथा शहरी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

6.4. ग्रामीण हिन्दू तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता–अभिवृत्ति का अध्ययन करना

7– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

8– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

9– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

10– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

11– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

12– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

13– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

14– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

15– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

16– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

17– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

18– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

19– धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

20– धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

21– धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन करना ।

<u>प्रस्तुत अनुसन्धान की उपकल्पना–</u>

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य के आधार पर निम्नलिखित शून्य उपकल्पनायें निर्मित की गई –

1– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2– अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

2.1. हिन्दू अन्तर्मुखी तथा हिन्दू बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

2.2. मुस्लिम अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

2.3. हिन्दू अन्तर्मुखी तथा मुस्लिम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता–अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

2.4. हिन्दू बहिर्मुखी तथा मुस्लिम बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता–अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के अन्ध–विश्वास के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3.1. उच्च अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा निम्न अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3.2. उच्च अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों तथा निम्न अन्ध–विश्वासी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3.3. उच्च अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

3.4. निम्न अन्धविश्वासी हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4- उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक -स्तर के व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4.1. उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4.2. उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4.3. उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

4.4. निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के हिन्दू तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5- पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5.1. हिन्दू पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5.2. मुस्लिम पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5.3. हिन्दू पुरुष तथा मुस्लिम पुरूषों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

5.4. हिन्दू महिला तथा मुस्लिम महिलाओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6- शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6.1. शहरी हिन्दू तथा ग्रामीण हिन्दुओं के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6.2. शहरी मुस्लिम तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6.3. शहरी हिन्दू तथा शहरी मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

6.4. ग्रामीण हिन्दू तथा ग्रामीण मुस्लिमों के मध्य धार्मिकता–अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।

7– धार्मिकता अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

8– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

9– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक–आर्थिक–स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

10– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

11– धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

12– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

13– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

14– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

15– धार्मिक अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास –क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

16– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

17– धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

18- धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

19- धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

20- धार्मिक अभिवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

21- धार्मिक अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

उक्त शून्य उपकल्पनाओं की जाँच प्रस्तुत अनुसन्धान में क्रान्तिक् अनुपात तथा प्रसरण-विश्लेषण गणना द्वारा की गई है ।

अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प-

1- **जनसंख्या-**

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर-प्रदेश के गोरखपुर जनपद में ग्रामीण एवं शहरी हिन्दू व मुस्लिम आबादी पर किया गया ।

2- **प्रतिदर्श-**

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत प्रतिदर्श के रूप में 300 पुरूष तथा 300 स्त्रियों को चुना गया। प्रतिदर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा गोरखपुर जनपद से किया गया । प्रतिदर्श का चयन 25 वर्ष से 40 वर्ष की आयु-वर्ग से किया गया । कुल प्रतिदर्श 600 में से 300 हिन्दू तथा 300 मुस्लिम सम्प्रदाय की स्त्रियों तथा पुरूषों को सम्मिलित किया गया । इसी प्रकार 300 शहरी तथा 300 ग्रामीण स्त्रियों तथा पुरूषों का चयन किया गया ।

3- **अनुसन्धान अभिकल्प-**

प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य धार्मिक अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम), व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी), अन्ध-विश्वास, लिंग, सामाजिक आर्थिक स्तर, आवास क्षेत्र (ग्रामीण तथा शहरी) के प्रभाव का अध्ययन करना है । धार्मिक अभिवृत्ति पर उक्त सभी परिवर्तियों का प्रभाव पहले ही पड़ चुका है अथवा घटित हो चुका है । धार्मिक अभिवृत्ति के आधार पर उक्त परिवर्तियों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है, अतः प्रस्तुत अनुसन्धान

घटनोत्तर अनुसन्धान (Ex-Post -Facto Research) प्रकार का है। स्वतन्त्र परिवर्ती पहले ही प्रभाव डाल चुके हैं, अनुसन्धानकर्ता ने आश्रित परिवर्ती अर्थात् धार्मिक अभिवृत्ति के आधार पर निरीक्षण कार्य प्रारम्भ किया है ।

प्रस्तुत अनुसन्धान में स्वतन्त्र तथा आश्रित परिवर्ती इस प्रकार हैं –

स्वतन्त्र परिवर्ती – धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) अन्ध–विश्वास (उच्च व निम्न) सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) लिंग (पुरूष व महिला) आवास क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी)

आश्रित परिवर्ती – धार्मिक–अभिवृत्ति

4– प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का विवरण–

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया –

1– धार्मिकता अभिवृत्ति मापनी – डॉ0 एल0आई0 भूषण

2– अन्ध–विश्वास मापनी – डॉ0 एल0एन0 दुबे तथा बी0एम0 दीक्षित

3– अर्न्तमुखी – बहिर्मुखी परीक्षण – डॉ0 जयप्रकाश

4– सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी – डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ

5– प्रशासन प्रक्रिया –

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्यों के अनुरूप विभिन्न परीक्षणों का प्रशासन किया गया । प्रस्तुत अनुसन्धान कुल 600 व्यक्तियों पर किया गया । 600 व्यक्तियों में से 300 पुरूष तथा 300 महिलाओं का चयन किया गया । कुल 300 पुरूषों में से 150 ग्रामीण पुरुष तथा 150 शहरी पुरूष का चयन किया गया। इसी प्रकार 300 महिलाओं में से 150 ग्रामीण महिलायें तथा 150 शहरी महिलाओं का प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया । 150 शहरी पुरूषों में से 75 हिन्दू चुने गये जबकि 75 मुस्लिम सम्प्रदाय से चुने गये । 150 ग्रामीण पुरूषों में से 75 हिन्दू सम्प्रदाय के थे जबकि 75 मुस्लिम सम्प्रदाय के थे । 150 ग्रामीण महिलाओं में से 75 महिलायें हिन्दू धर्म से सम्बद्ध थीं जबकि 75 महिलायें मुस्लिम सम्प्रदाय से सम्बद्ध थीं । 150 शहरी महिलाओं में 75 महिलायें शहरी हिन्दू धर्म की चुनी गई जबकि 75 महिलायें शहरी मुस्लिम सम्प्रदाय की चुनी गई ।

6– **प्रयुक्त साँख्यकीय विधियाँ–**

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्‌देश्यों के अनुरूप उचित सांख्यकीय विधियों का प्रयोग किया गया है । मध्यमान, प्रामाणिक विचलन और दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिये "टी" मान की गणना की गई है, प्रसरण – विश्लेषण की गणना द्वारा " F " अनुपात ज्ञात किया गया है । आंकड़ों को बार–चित्र द्वारा भी प्रस्तुत किया गया है ।

प्रदत्त–विश्लेषण–

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्‌देश्यों के आधार पर प्रदत्त–विश्लेषण तथा विवेचन निम्नलिखित दो भागों में प्रस्तुत किया गया है –

भाग– "अ"–

हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक-अभिवृत्ति, व्यक्तित्व–प्रकार, अन्ध–विश्वास, सामाजिक–आर्थिक स्तर, लिंग तथा आवासीय क्षेत्र (ग्रामीण–शहरी) के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर का अध्ययन, विश्लेषण तथा विवेचन किया गया ।

भाग– "ब"–

धार्मिक–अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम), व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी), अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न), सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न), लिंग (पुरूष व महिला) , आवास–क्षेत्र (ग्रामीण व शहरी) के प्रभाव का अध्ययन करना तथा प्रदत्त–विश्लेषण व विवेचन ।

भाग – "अ"

प्रस्तुत भाग–"अ" के अन्तर्गत निम्नलिखित 6 उद्‌देश्यों से सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन किया गया है –

1– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के मध्य धार्मिक–अभिवृत्ति का अध्ययन ।

2– अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन ।

3– हिन्दुओं तथा मुस्लिमों के अन्ध–विश्वास स्तर का अध्ययन ।

4– उच्च तथा निम्न–सामाजिक आर्थिक स्तर के व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता अभिवृत्ति का अध्ययन ।

5- पुरूष तथा महिलाओं के मध्य धार्मिकता-अभिवृत्ति का अध्ययन ।

6- शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों के मध्य धार्मिकता-अभिवृत्ति का अध्ययन ।

भाग - ब

भाग-ब के अन्तर्गत धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म सम्प्रदाय, व्यक्तित्व प्रकार, अन्धविश्वास, सामाजिक आर्थिक स्तर, लिंग तथा आवास के प्रभाव का अध्ययन तथा विवेचन किया गया है । प्राप्त परिणामों की 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना कर निम्नलिखित 15 उद्देश्यों का विवेचन किया गया -

1- धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म-सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) के प्रभाव का अध्ययन ।

2- धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म-सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

3- धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म-सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा सामाजिक-आर्थिक-स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

4- धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म-सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन ।

5- धार्मिक-अभिवृत्ति पर धर्म-सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन ।

6- धार्मिक-अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा अन्ध-विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

7- धार्मिक-अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

8- धार्मिक-अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा लिंग (पुरुष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन ।

9- धार्मिक-अभिवृत्ति पर व्यक्तित्व प्रकार (अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन ।

10– धार्मिक–अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) के प्रभाव का अध्ययन ।

11– धार्मिक–अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन ।

12– धार्मिक–अभिवृत्ति पर अन्ध–विश्वास स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन ।

13– धार्मिक–अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा लिंग (पुरूष व महिला) के प्रभाव का अध्ययन ।

14– धार्मिक–अभिवृत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्तर (उच्च व निम्न) तथा आवास क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन ।

15– धार्मिक–अभिवृत्ति पर लिंग (पुरूष व महिला) तथा आवास–क्षेत्र (शहर व ग्रामीण) के प्रभाव का अध्ययन किया गया है ।

उक्त उद्देश्यों की सांख्यकीय गणना तथा विवेचन हेतु उच्च तथा निम्न अन्धविश्वास स्तर का निर्धारण किया गया । अन्ध–विश्वास प्राप्तांकों के आधार पर चतुर्थांक एक (Q_1) तथा चतुर्थांक तीन (Q_3) की गणना की गई । चतुर्थांक एक के प्राप्त मान 46 के आधार पर निम्न अन्धविश्वास स्तर तथा चतुर्थांक तीन के मान 66 के आधार पर उच्च अन्ध–विश्वास स्तर का निर्धारण किया गया । 46 तथा उससे कम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को निम्न अन्धविश्वासी माना गया । जबकि 66 तथा उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को उच्च अन्ध–विश्वासी माना गया ।

सामाजिक–आर्थिक स्तर का निर्धारण परीक्षण के निर्धारित मानकों के आधार पर किया गया । शहरी व्यक्तियों के 108 तथा उससे कम प्राप्तांक निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करते हैं । जबकि 223 तथा उससे अधिक प्राप्तांक उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करते हैं । ग्रामीण व्यक्तियों के 60 तथा उससे कम प्राप्तांक निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करते हैं । जबकि 110 तथा उससे अधिक अंक उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर को प्रदर्शित करते हैं ।

इसी प्रकार अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकार का निर्धारण भी परीक्षण के मानकों के आधार पर किया गया । –10 तथा उससे कम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को अन्तर्मुखी

व्यक्तित्व का माना गया । +10 तथा उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले व्यक्ति को बहिर्मुखी व्यक्तित्व का माना गया ।

उपर्युक्त स्तरों के निर्धारण के पश्चात 2×2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर भाग–ब के विभिन्न उद्देश्यों का अध्ययन, विश्लेषण तथा विवेचन किया गया है ।

निष्कर्ष–

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं –

1– हिन्दुओं की अपेक्षा मुस्लिमों में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति होती है ।

2– बहिर्मुखी व्यक्तित्व के व्यक्ति अधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखते हैं ।

3– अधिक अन्ध–विश्वासी हिन्दुओं में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति होती है, जबकि मुस्लिमों में निम्न अन्ध–विश्वासी व्यक्तियों में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति पाई गई ।

4– उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित व्यक्तियों में अधिक धार्मिक अभिवृत्ति पाई गई ।

5– हिन्दू पुरुषों की अपेक्षा हिन्दू महिलाओं में अधिक धार्मिक अभिवृत्ति पाई गई । इसके विपरीत मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा मुस्लिम पुरुषों में अधिक धार्मिक अभिवृत्ति पाई गई

6– ग्रामीण मुस्लिमों की अपेक्षा शहरी मुस्लिमों में अधिक धार्मिक प्रवृत्ति पाई गई ।

7– धर्म–सम्प्रदाय (हिन्दू व मुस्लिम) तथा अन्धविश्वास (उच्च व निम्न) का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित करता है ।

8– धार्मिक अभिवृत्ति सार्थक रूप से धर्म सम्प्रदाय तथा लिंग से प्रभावित होती है ।

9– अन्धविश्वास तथा लिंग का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है ।

10– सामाजिक आर्थिक स्तर तथा लिंग का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव धार्मिक अभिवृत्ति को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है ।

11- ग्रामीण हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों की धार्मिक अभिवृत्ति लगभग समान पाई गई जबकि शहरी हिन्दू कम धार्मिक प्रवृत्ति के पाये गये तथा शहरी मुस्लिम सर्वाधिक धार्मिक प्रवृत्ति रखते हैं ।

आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव–

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत "हिन्दू एवं मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर बहुकारकीय प्रभाव का अध्ययन" करना था । उक्त अनुसन्धान समस्या के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तियों के आधार पर आगामी अनुसन्धान किये जा सकते हैं ।

(1) सर्वप्रथम धर्म सम्प्रदाय के रूप में ईसाई तथा सिक्ख धर्म को भी सम्मिलित करते हुए चारों धर्म सम्प्रदायों (हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई तथा सिक्ख) की धार्मिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है । सांथ ही धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले बहुकारकीय कारकों के प्रभाव का भी अध्ययन करते हुए महत्वपूर्ण अनुसन्धान निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं ।

(2) धार्मिक अभिवृत्ति पर आत्म प्रत्यय का क्या प्रभाव पड़ता है ? इस उद्देश्य से अनुसन्धान किया जा सकता है । आत्म प्रत्यय के अन्तर्गत शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, नैतिक, शैक्षिक तथा बोद्धिक आदि सभी विमाओं का धार्मिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन सम्भव है । समायोजन जैसे महत्वपूर्ण परिवर्ती का धार्मिक अभिवृत्ति से सम्भावित सम्बन्ध का अध्ययन भी सम्भव हे । विद्यार्थियों के गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, शैक्षिक तथा संवेगात्मक समायोजन का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इस उद्देश्य से महत्वपूर्ण अनुसन्धान किये जा सकते हैं ।

(3) धार्मिक अभिवृत्ति का विभिन्न सामाजिक प्रेरणाओं जैसे – अनुमोदन प्रेरणा, शक्ति प्रेरणा, परोपकार प्रेरणा तथा उपलब्धि प्रेरणा आदि के साथ सम्बन्ध का अध्ययन किया जाना सम्भव है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । उसकी इन सामाजिक प्रेरणाओं का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इस प्रश्न के उत्तर द्वारा महत्वपूर्ण अनुसन्धान परिणाम प्राप्त हो सकते हैं ।

प्रस्तुत अनुसन्धान की परिसीमायें –

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद में ग्रामीण एवं शहरी हिन्दू तथा मुस्लिम

आबादी पर किया गया है । यदि प्रस्तुत अध्ययन अन्य जनपदों पर भी किया जाता तब ऐसी स्थिति में प्राप्त परिणाम अधिक सामान्यीकृत किये जा सकते हैं । प्रतिदर्श का चयन 25 वर्ष से 40 वर्ष की आयु वर्ग से किया गया है । यदि इसके अतिरिक्त उच्च आयु वर्ग से सम्बन्धित वृद्धों की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन भी किया जाता तो ऐसी स्थिति में आयु वर्ग का धार्मिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना सम्भव हो सकता है ।

धर्म समुदाय के रूप में हिन्दू व मुस्लिम के अतिरिक्त ईसाई व सिक्ख समुदाय के पुरुष व महिलाओं की धार्मिक अभिवृत्ति का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान के परिणामों को अधिक महत्वपूर्ण बना सकता था ।

<u>प्रस्तुत अनुसन्धान का महत्व–</u>

धर्म एक जटिल मानसिक क्रिया है, जिसका सम्बन्ध मनुष्य की आन्तरिक अनुभूतियों से होता है । प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा धर्म के ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक पहलू को जानने का प्रयास किया गया है । प्रत्येक व्यक्ति धर्म के प्रति सकारात्मक अथवा नकारात्मक अभिवृत्ति रखता है, जिससे उसकी जीवन–शैली प्रभावित होती है । व्यक्ति की यह धर्म के प्रति अभिवृत्ति कई कारकों से प्रभावित होती है । प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा उन विशेष कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है जो कि धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं । इस प्रकार अनुसन्धान द्वारा प्राप्त परिणाम प्रस्तुत अनुसन्धान के महत्व को प्रदर्शित करते हैं ।

हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म सम्प्रदाय के व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन कर प्राप्त परिणाम दोनों सम्प्रदायों को समझने में सहायक होंगे । हिन्दुओं और मुसलमानों की धार्मिकता, भारतीय समाज के लिये अत्यधिक आवश्यक है । धार्मिक–अभिवृत्ति का ज्ञान हिन्दू–मुसलमानों के आपसी सम्बन्धों की विवेचना करने में सहायक सिद्ध होगा । धर्म के प्रति मनोग्रस्तता के परिणामस्वरूप साम्प्रदायिकता का विकास हुआ है ।

प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत व्यक्तित्व तथा धार्मिक अभिवृत्ति का भी अध्ययन किया गया है । व्यक्तित्व के प्रकार अर्थात् अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा किया गया है । अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति अधिक धार्मिक होते हैं अथवा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति अधिक धार्मिक होते हैं ? इस महत्वपूर्ण व रोचक प्रश्न का अध्ययन तथा विश्लेषण प्रस्तुत अनुसन्धान के अन्तर्गत किया गया है । इससे स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत अनुसन्धान अत्यधिक महत्वपूर्ण है ।

प्रस्तुत अनुसन्धान इसलिये भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि अन्धविश्वास तथा धार्मिक अभिवृत्ति के पारस्परिक सम्बन्धों पर अनुसन्धान महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करता है । अन्ध–विश्वास की बीमारी एक ऐसी घृणित बीमारी है जो शरीर पर तो अपना प्रभाव डालती हैं, साथ ही मन तथा बुद्धि पर भी अपना प्रभाव डालकर नष्ट कर देती है । हिन्दू तथा मुस्लिम समुदाय की धार्मिक अभिवृत्ति पर अन्धविश्वास का प्रभाव किस रूप में पड़ता है, इस तथ्य का विश्लेषण प्रस्तुत अनुसन्धान करता है ।

व्यक्ति का सामाजिक–आर्थिक स्तर भी उसकी धार्मिक अभिवृत्ति को प्रभावित कर सकता है। समाज में ऐसे व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति अलग प्रकार की हो सकती है, जिनका सामाजिक–आर्थिक स्तर अत्यधिक उच्च है और इसके विपरीत निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर रखने वाले व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति भिन्न प्रकार की हो सकती है । इस प्रकार प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा यह जानना सम्भव है, कि सामाजिक–आर्थिक स्तर का धार्मिक अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

धार्मिक–अभिवृत्ति पर लिंग का क्या प्रभाव पड़ता है, इस तथ्य का विश्लेषण प्रस्तुत अनुसन्धान के महत्व में वृद्धि करता है । पुरूष अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं अथवा महिलायें अधिक धार्मिक प्रवृत्ति की होतीं है, इस तथ्य का विवेचन करना अनुसन्धान का प्रमुख उद्देश्य है। धार्मिक अभिवृत्ति पर परिवेश का भी प्रभाव पड़ सकता है । शहरी व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति तथा ग्रामीण व्यक्तियों की धार्मिक अभिवृत्ति में भिन्नता हो सकती है । इस परिवेशगत प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत अनुसन्धान द्वारा किया गया है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट है कि प्रस्तुत अनुसन्धान अत्यधिक महत्वपूर्ण है । इसके द्वारा महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त हुये हैं, साथ ही धर्म जैसे जटिल विषय को समझना सम्भव हो सका है ।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

BIBLIOGRAPHY

Allan (1997) ' Evolution of Idea of God.' London, 1897.

Arvind (1947) ' Divine Life 'Calcutta, 1947.

Ayanger, Sri Niwas(1909) Outlines of Indian Philosophy, Varanasi, 1909.

Bhushan, L.I.(1990) Religiosity Scale National Psychological Corporation, Agra-4.

Bragdon, C.(1933) An Introduction to Yoga, London, 1933.

Bramm, N.K.(1932) The Philosophy of Hindu Sadhana, Calcutta, 1932.

Brocha, M. and H. Singh (1969) An Examination of religious faith and sense of unto-uchability amongst girls of 12 to 16 years. Psychological Researches 1969, 4(1&2), 11-17.

Chakraverti, S.C.(1935) The Philosophy of the Upanishads, Calcutta, 1935.

Chatterjee, L.(1986) Development of religious identity and prejudice in Hindu School students. Unpublished Doctoral Dissertation, Ranchi University, Ranchi.

Das, A.C.(1921) Rigvedic India, Calcutta, 1921.

Dasgupta, S.N.(1930) A study of the yoga philosophy, Calcutta, 1930.

Dasgupta,S.N.(1932-61) History of Indian Philosophy (Five Volumes)Cambridge University Press 1932-61.

Dasgupta, (1920) The study of Patanjalli Calcutta, 1920.

Dube, L.N. and B.M. Dixit (1991) Superstition Scale, National Psychological Corporation Agra-4.

Dutt, N.K. (1965) Attitudes of University students toward religion, Journal of Psychological Researches, 1965, 9(3), 127-130.

Einstein, Albert and D.J. Bronstein (1954) Science and Religion in approaches to the Philosophy of Religion, USA,1954.

Enayatullah (1981) Religious affiliation and attitudes of students in an Indian University. Unpublished doctoral dissertation, Ranchi University, Ranchi.

Ferguson, G.A.(1981) Statistical Analysis in Psychology and Education, 4th Edition, Mc Graw Hill, New York.

Freeman, F.S.(1965) Theory and Practice of Psychological Testing 3rd Edition, Oxford and I B H.

Garrett, H.E.(1989) Statistics in Psychology and Education, IInd Edition, Kalyani Publishers, Ludhiana.

Ghate (1926) The Vedant, Poona, 1926.

Ghosh, J.(1934) A study of the Yoga Calcutta,1934.

Hassan, M.K.(1975) A study of caste image, caste attitutde and religiosity in high caste and scheduled caste college students. Journal of Social Research, 1975,19(1), 56-63.

Hassan, M.K. and A. Khalique (1981) Religiosity and its correlates in college students. Journal of Psychological Researches, 1981, 25(3),(129-136).

Hasnain, N. and G.S. Adhikari (1982) A Study of religiosity among professional trainees. Perspectives in Psychological Researches,1982,5(i)44-45.

Helode, R.D. and R.V. Dable (1980) Religiosity as a function of sex and type of Education. Scientia Paedagogiea Experimentalis, 1980,17(2), 157-167.

Hick, John (1978) Evil and the God of Love. 2nd Edition, Mc Millan and Company, New York.

Hick, John (1976) Death and Internal Life, Collins, London.

Hick, John (1989) An Interpretation of Religion. New Haven, Yale University Press, London.

Hiriyanna (1932) Outlines of Indian Philosophy London.

Hiriyanna (1950) Essentials of Indian Philosophy London, 1950.

Joseph, J.(1990) A study of the religiosity of the aged, Mind, 1990, 16(i), 1-6.

Karan,N.L. and H.N. Panjiar (1987) Religiosity as the function of caste, sex, age and habitation : A study of the people of Mithila, Indian Psychological Review, 1987,32(2), 1-4.

Khalique, A.,M.K. Jabbi and L. Chatterjee (1984). Development of religious identity and ethnocentrism in Indian children: A pilot study. Psychological studies, 29(2), 18-21.

Khan, H.R.(1978) Development of religious identity and prejudice in children. Unpublished doctoral dissertation, Magadh University, Ranchi.

Khan, S.R. (1988) A study of communal sterotypes amongst the Hindus and Muslims. Advances in Psychology, 1988,3(2), 93-99.

Khan,S.R. and N. Arora (1989) A comparative study of areas of self-disclosure among Hindu and Muslim students. Advances in Psychology, 1989,4(2), 129-132.

Kulandaivel, K. and P.K. Jacob (1964) The attitude of pupils towards religion in some high schools of Kottayam district. Journal of Educational Research and Extension, 1964, i(1),

Kulshreshtha, S.P. (1980) Socio-economic Status Scale, National Psychological Corporation Agra.

Kuppuswamy, B and P.C. Eapen (1968) The attitude of teachers towards moral and religious instructions in schools. Journal of Educational Research and Extension, 1968, 5(1), 9-16.

macquarrie, John (1963) Twentieth Century Religions Thought, London, 1963.

Mark, S.C. (1935) A Buddhist Bibliography, London, 1935.

Megovaran, W.M.(1923) A Mannual of Buddhist Philosophy London, 1923.

Mishra, Umesh (1926) Conception of Matter according to Nyaya-Vaisheshic, Allahabad, 1926.

Ojha, R.S. (1966) Attitude of college students towards certain social problems. Doctoral Dissertation in Psychology. Bihar University, 1966.

Panchbhai, S.C.(1966) Religion and race as determinants of reference Group- A study in

stereotypes of three Indian tribes. Indian Journal of Psychology, 41(1), 1-6.

Pandey, Anirudha (1976) Values of rural and urban Indian children through their uses of common objects. Perceptual and Motor skills, 1976, 43, 830.

Pandey, Anirudha (1977) A comparative study of values between intellectually bright and average high school Indian adolescents. Indian Psychological Review, 1977, 15(2), 35-37.

Patt, J.B. (1916) India and its faith. London,1916.

Plauck, Max (1933) Where is Science Going ? London, 1933.

Prakash, Jai (1981) The Neyman Kohibstedt Diagnostic - Test, Agra Psychological Research Cell, Agra.

Prasad, J. (1928) Introduction to Indian Philosophy, Allahabad, 1928.

Radha Krishnan, S. (1951) Indian Philosophy, Part 1 & 2 New York, 1951.

Raghvendrachar, H.N. (1941) The Dwait Philosophy and its place in the Vedant, Mysore, 1941.

Rajamanickam, M.A. (1966) Psychological study of religious and related attitudes of the students and professional groups in South India, Doctoral Dissertation in Psychology, Annamalai University, 1966.

Ranadey (1926) Constructive Survey of Upanishadi Philosophy, Poona, 1926.

Runse, D.(1942) Dictionary of Philosophy. New York, 1942.

Sarkar, B.K. (1937) Introduction to Indian Positivism. Allahabad, 1937.

Selsum (1945) What is Philosophy?Calcutta,1920.

Shah, M.A. and M. Varshney (1982) A comparative study of the attitude of married and unmarried women towards religion, equality of women and birth control in relation to their adjustment. Asian Journal of Psychology and Education,1982, 9(1), 15-20.

Sharma, Nagraj "The reason of Realism in Indian Philosophy, Madras.

Tandon, B.K.(1967) A study of attitude towards religion of Higher Secondary School students in Uttar Pradesh towns, Doctoral Dissertation in Psychology, Agra University,1967.

Tiwari, G.B. Mathur and K. Morbhatt (1980) Religiosity as function of age and sex. Asian Psychology and Education,1980, 6(2), 36-40.

Verma, O.P. and S.N. Upadhyay(1984)Religiosity and Social distance, Indian Psychological Review, 1984, 26 (3), 29-34.

Wilson, H.H.(1899) Hindu Religion,Calcutta , 1899.

Yunus, M.(1983) A study of beliefs and customs in relation to animal bites, personal hygiene and installation of sanitary latrines in some villages of Aligarh. U.P.Indian Medical Gazette, 1983, 62(4), 139-144.

* * * * * *

आत्रेय, शान्ति प्रकाश (1961) भारतीय तर्कशास्त्र, वाराणसी, 1961.

ईश्वरकृष्ण (1941) सांख्यकारिका, वाराणसी, 1941.

उदयनाचार्य (1939) आत्मतत्व विवेक, वाराणसी, 1939.

उपाध्याय, गंगा प्रसाद (1944) आस्तिकवाद, प्रयाग, 1944.

उपाध्याय, भरत सिंह (1956) बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन, भाग 1 व 2, कलकत्ता, 1956.

उपाध्याय, बलदेव (1942) भारतीय दर्शन, वाराणसी 1942.

उमास्वाति (1966) तत्वार्थाधिगम, पूना, 1966.

उदयनाचार्य (1890) न्याय कुसुमाञ्जलि, कलकत्ता, 1890.

एडवन, इरविन (1957) दर्शन के उपयोग, प्रयाग, 1957.

गैरोल, वाचस्पति (1983) भारतीय दर्शन, लोक भारतीय प्रकाशन 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-1.

गुणरत्नसूरि (1905) षड्दर्शन समुच्चय, कलकत्ता, 1905.

गोयन्का, सत्यनारायण (1995) निर्मल धारा धर्म की, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली - 1.

गौड़, रामदास (1920) वैज्ञानिक अद्धैतवाद, वाराणसी 1920.

चट्टोपाध्याय, सतीश चन्द्र तथा धीरेन्द्र मोहन दत्त (1954) भारतीय दर्शन, पटना, 1954.

जैन, जगदीश चन्द्र (1954) भारतीय तत्व चिन्तन, नई दिल्ली ।

जैन, रतनलाल (1948) आत्म रहस्य, नई दिल्ली, 1948.

जोशी, लक्ष्मण शास्त्री (1948) हिन्दू धर्म समीक्षा, बम्बई, 1948.

दशोरा, नंदलाल (1991) अध्यात्मः विज्ञान और धर्म, रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन), हरिद्वार ।

दीवानचन्द्र (1956) तत्वज्ञान, लखनऊ 1956.

देवराज (1945) पूर्वी और पश्चिमी दर्शन, नई दिल्ली ।

देवराज (1941) भारतीय दर्शन शास्त्र का इतिहास, इलाहाबाद ।

ब्रेन (1956) ईश्वर दर्शन, सारण (बिहार), 1956.

भगवानदास (1940) दर्शन का प्रयोजन, प्रयाग 1940.

मसीह, या (1990) तुलनात्मक धर्म-दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी ।

मालवीय, मदन मोहन (1944) ईश्वर, गोरखपुर ।

मिश्र, वाचस्पति (1917) सांख्यतत्वकौमुदी, वाराणसी ।

रामानुजाचार्य (1904)	वेदान्त प्रदीप, वाराणसी, 1904.
वसुबन्धु (1958)	अभिधर्मकोश (अनु0 आचार्य नरेन्द्रदेव) प्रयाग, 1958.
वर्मा, वेद प्रकाश (1986)	"समकालीन विश्लेषणात्मक धर्म दर्शन:" हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, माडल टाउन, दिल्ली–9 .
वर्मा, वेद प्रकाश (1995)	धर्मदर्शन की मूल समस्याएँ: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, ई.ए./6, माडल टाउन, दिल्ली – 9
शंकराचार्य (1912)	आत्मबोध, लखनऊ, 1912 .
शंकराचार्य (1940)	सर्वदर्शन सिद्धान्त संग्रह, प्रयाग 1940.
शर्मा, रामअवतार (1936)	भारतीय दर्शन, लखनऊ, 1957.
शर्मा, सुखदेव सिंह (1973)	धर्मदर्शन, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, सम्मेलन भवन, पटना – 3.
शास्त्री, उदयवीर	" सांख्यदर्शन का इतिहास " ज्वालापुर ।
सदानन्द (1910)	दर्शन सार संग्रह, ग्वालियर ।
सरस्वती, कृष्णानन्द (1959)	आत्मानुभूति, होशियारपुर.
सरस्वती, आनन्द स्वामी (1953)	तत्वज्ञान, दिल्ली .
सरस्वती, दर्शनानन्द (1937)	वेदान्त दर्शन, बरेली, 1937.
सांकृत्यायन, राहुल (1947)	दर्शन दिग्दर्शन, इलाहाबाद, 1947.
सांकृत्यायन, राहुल (1936)	दीर्घ निकाय, सारनाथ, 1936.
सांकृत्यायन, राहुल (1944)	बौद्ध दर्शन, इलाहाबाद, 1944.
सांकृत्यायन, राहुल (1947)	वैज्ञानिक भौतिकवाद, प्रयाग.
सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद (1994)	धर्म–दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी.
हरिहरानन्द (1954)	पातञ्जल योगदर्शन, (लखनऊ) .
हिक, जॉन (1994)	धर्म दर्शन, अनुवादक, राजेश कुमार सिंह (दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रेंटिस हाल आफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली – 1.
त्रिवेदी, राम गोविन्द (1937)	ईश्वर सिद्धि, सुलतानगंज.
त्रिवेदी, राम गोविन्द (1923)	दर्शन परिचय, कलकत्ता, 1923.

* * * * *

परिशिष्ट

परिशिष्ट – अ

(i)- हिन्दू शहरी पुरूषों की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक N= 75

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
1–	138	94	–2	226
2–	115	53	+12	235
3–	172	52	+2	232
4–	123	81	+8	96
5–	143	54	0	134
6–	132	48	–12	156
7–	142	64	–2	148
8–	122	42	–12	168
9–	143	44	–12	175
10–	125	48	+2	150
11–	132	47	+6	240
12–	129	46	0	98
13–	120	55	0	174
14–	149	60	–2	92
15–	144	50	–2	184
16–	107	52	–10	196
17–	122	42	–4	188
18–	137	42	–2	102
19–	130	54	–8	241
20–	94	77	–2	182
21–	96	42	+4	10[illegible]
22–	101	52	–16	94
23–	151	46	–6	88
24–	130	49	+6	210
25–	123	56	0	196

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
26–	108	45	–16	184
27–	119	41	–6	180
28–	127	51	–12	164
29–	139	79	–12	172
30–	153	60	+8	192
31–	144	49	+12	228
32–	121	73	–8	233
33–	135	49	–4	81
34–	142	63	–18	244
35–	139	64	–2	243
36–	161	87	–10	99
37–	119	53	+4	232
38–	96	54	–6	182
39–	103	50	–2	184
40–	114	49	+2	192
41–	78	53	–4	182
42–	131	76	+6	229
43–	136	57	–4	194
44–	123	49	+6	182
45–	135	77	–4	96
46–	124	70	–4	157
47–	131	84	–14	182
48–	119	46	+4	231
49–	143	86	0	237
50–	110	65	–10	228

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
51–	152	79	+14	233
52–	123	43	+6	210
53–	124	51	+12	208
54–	150	46	–2	242
55–	145	55	0	203
56–	135	86	–14	194
57–	131	50	–2	101
58–	123	67	–2	215
59–	135	57	–2	104
60–	130	49	–10	91
61–	128	56	+4	89
62–	122	57	+16	204
63–	113	45	+6	194
64–	150	73	–2	238
65–	126	57	–28	234
66–	138	44	–10	81
67–	113	44	–18	236
68–	141	49	–4	194
69–	109	58	–8	87
70–	124	68	–6	210
71–	92	46	+6	85
72–	117	55	–2	175
73–	118	67	0	106
74–	134	51	–10	99
75–	78	43	–11	239

(ii)- हिन्दू शहरी महिलाओं की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक N = 75

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक-आर्थिक स्तर
1-	140	63	-2	228
2-	131	63	+4	220
3-	90	47	+2	224
4-	112	71	0	228
5-	149	93	-4	226
6-	100	73	0	241
7-	146	45	0	150
8-	124	57	-24	156
9-	83	60	+8	168
10-	146	47	+4	224
11-	128	59	+10	103
12-	170	59	+4	238
13-	118	55	+6	106
14-	136	50	-10	226
15-	124	79	-2	210
16-	113	58	-8	242
17-	103	44	-12	96
18-	147	57	+14	234
19-	143	44	+2	210
20-	150	57	0	198
21-	150	65	+10	242
22-	143	65	+6	223
23-	117	48	-4	226
24-	145	69	-4	192
25-	126	86	+2	228

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
26–	132	82	+2	92
27–	145	45	+10	218
28–	149	46	−4	229
29–	142	45	+10	98
30–	154	52	+2	218
31–	151	49	+2	237
32–	101	54	−12	196
33–	137	57	0	239
34–	119	47	−8	156
35–	144	59	−4	159
36–	113	83	+2	144
37–	142	62	−8	242
38–	139	42	−4	244
39–	149	48	−12	156
40–	131	63	+8	144
41–	137	48	+4	134
42–	109	67	0	102
43–	155	45	−8	210
44–	146	59	+2	196
45–	140	57	+8	182
46–	141	49	+2	244
47–	138	75	+18	154
48–	129	72	+6	166
49–	103	43	−2	174
50–	130	48	+2	224

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
51–	137	51	+2	238
52–	147	52	+14	235
53–	142	49	−14	232
54–	131	51	−10	228
55–	140	52	+10	178
56–	145	53	−8	96
57–	152	84	0	188
58–	107	63	−10	231
59–	97	47	+2	72
60–	125	51	+2	244
61–	141	57	+4	88
62–	134	57	0	144
63–	122	85	+4	245
64–	118	48	−4	205
65–	131	44	−4	210
66–	117	79	−2	228
67–	138	70	+2	198
68–	146	67	−2	191
69–	149	44	0	234
70–	130	44	+8	242
71–	154	47	−6	228
72–	134	96	0	244
73–	134	74	−2	238
74–	143	54	+8	230
75–	152	67	+10	241

(iii)- हिन्दू ग्रामीण पुरुषों की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक N = 75

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
1-	137	71	−14	59
2-	141	46	−10	55
3-	117	53	+6	58
4-	128	59	−8	57
5-	113	47	−2	54
6-	145	79	−12	56
7-	81	42	0	58
8-	133	53	+8	59
9-	102	42	−6	100
10-	120	64	0	56
11-	137	58	0	58
12-	128	51	+10	102
13-	103	45	+2	55
14-	132	53	−10	59
15-	123	80	−6	55
16-	122	84	0	88
17-	126	47	−4	57
18-	135	96	+8	115
19-	125	78	+2	75
20-	162	61	−10	85
21-	138	46	−8	58
22-	140	63	+8	54
23-	150	73	0	56
24-	135	87	−2	58
25-	143	65	−8	55

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
26–	111	45	+4	57
27–	126	62	−10	56
28–	125	79	+4	90
29–	135	43	−8	55
30–	166	74	+8	54
31–	130	65	+4	102
32–	134	43	−8	105
33–	138	55	−16	59
34–	140	59	−10	95
35–	129	68	−14	120
36–	135	43	+ 2	54
37–	135	53	+4	56
38–	125	57	−4	85
39–	119	43	+4	55
40–	149	52	+2	57
41–	138	42	+4	88
42–	133	70	−10	59
43–	113	45	−10	56
44–	130	78	−8	58
45–	131	44	−10	57
46–	99	43	−12	118
47–	125	43	−2	56
48–	123	44	−14	59
49–	111	62	+8	85
50–	149	49	−8	58

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
51–	135	65	–6	56
52–	96	48	+16	55
53–	109	47	+4	58
54–	129	45	+4	90
55–	143	88	0	121
56–	136	75	–6	52
57–	141	44	+2	102
58–	127	48	–4	58
59–	115	76	–16	105
60–	138	61	–8	92
61–	137	60	+14	57
62–	129	61	+4	56
63–	154	78	0	115
64–	136	51	+12	58
65–	148	53	–16	103
66–	114	48	–2	118
67–	127	45	–18	56
68–	136	48	0	120
69–	143	50	–10	101
70–	130	68	0	58
71–	87	43	–8	56
72–	148	99	–6	96
73–	103	43	+4	82
74"–	130	46	0	118
75–	154	60	0	55

(iv)- हिन्दू ग्रामीण महिलाओं की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक—आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक N = 75

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक—आर्थिक स्तर
1-	135	62	-14	58
2-	106	51	-10	75
3-	145	101	-10	88
4-	120	68	-14	55
5-	128	74	+6	90
6-	130	66	0	59
7-	127	68	+2	102
8-	140	45	-2	120
9-	138	47	+6	89
10-	120	42	+2	65
11-	127	71	0	77
12-	118	90	+16	100
13-	108	52	+4	87
14-	133	72	+6	94
15-	137	56	+6	56
16-	99	73	+8	54
17-	124	73	-6	98
18-	138	38	-8	88
19-	133	44	-4	115
20-	118	94	-18	56
21-	109	46	-2	118
22-	136	70	+2	104
23-	134	81	+2	94
24-	133	52	+8	96
25-	130	86	+4	102

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
26–	136	55	+8	85
27–	113	52	+8	76
28–	136	76	+4	80
29–	148	87	–2	86
30–	122	94	–2	122
31–	143	55	+6	59
32–	125	85	+4	91
33–	125	75	–2	104
34–	146	73	+8	95
35–	111	53	–10	55
36–	143	93	+16	58
37–	145	57	–6	103
38–	169	67	+2	120
39–	141	48	+6	105
40–	137	44	+4	94
41–	139	46	+4	58
42–	133	46	–8	92
43–	131	48	–10	59
44–	122	84	–4	115
45–	130	46	–20	85
46–	148	5	+10	72
47–	122	51	+12	68
48–	107	108	0	74
49–	153	64	–4	58
50–	127	59	0	84

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
51–	125	65	−4	103
52–	139	45	+18	88
53–	167	57	−4	59
54–	153	55	+6	112
55–	142	43	−2	94
56–	133	44	−16	88
57–	123	64	−2	90
58–	151	89	+4	119
59–	136	82	−4	124
60–	139	90	+4	121
61–	135	59	+8	102
62–	130	61	+6	118
63–	154	52	−4	92
64–	135	51	+4	100
65–	160	49	−2	105
66–	152	52	+12	102
67–	139	89	−2	117
68–	117	63	−8	87
69–	162	73	−12	94
70–	135	44	0	58
71–	130	49	+16	56
72–	128	72	+6	105
73–	123	61	−2	85
74–	113	82	0	59
75–	108	48	+2	90

(v)- मुस्लिम शहरी पुरूषों की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक N = 75

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
1-	153	49	-6	230
2-	148	49	+2	228
3-	138	50	+10	210
4-	151	62	-4	231
5-	155	46	+2	96
6-	140	16	-2	100
7-	138	46	-14	204
8-	157	45	0	240
9-	113	45	-2	156
10-	147	44	0	168
11-	158	46	-2	178
12-	141	78	-2	102
13-	147	46	-10	178
14-	138	46	-10	238
15-	131	64	-8	196
16-	162	49	-8	203
17-	119	65	+4	186
18-	150	63	-2	225
19-	130	42	-6	241
20-	129	44	-10	239
21-	133	56	-4	156
22-	149	56	-8	176
23-	153	42	-4	224
24-	150	71	0	98
25-	160	43	+10	97

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
26–	112	48	–8	120
27–	140	49	–12	95
28–	156	47	+8	135
29–	150	59	–4	165
30–	131	43	+10	176
31–	151	52	0	194
32–	150	53	+2	125
33–	150	53	+10	228
34–	146	53	–4	99
35–	153	46	+2	103
36–	149	49	–8	106
37–	112	44	–12	130
38–	146	41	–17	125
39–	152	52	+6	133
40–	146	44	–14	156
41–	155	58	+12	102
42–	154	42	0	168
43–	147	46	–4	162
44–	126	49	–4	174
45–	116	45	–10	94
46–	153	43	+4	186
47–	142	46	–12	90
48–	136	44	+2	196
49–	121	44	–6	210
50–	147	44	–12	137

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
51–	148	46	0	175
52–	143	52	–2	238
53–	155	51	–14	197
54–	156	51	0	92
55–	144	51	+10	103
56–	142	42	–14	192
57–	159	51	+2	196
58–	154	42	–8	155
59–	128	70	–8	166
60–	137	46	–8	104
61–	144	43	–2	96
62–	129	72	–8	191
63–	148	43	–2	194
64–	152	64	+6	242
65–	98	52	+4	98
66–	145	55	–2	238
67–	147	80	–8	158
68–	146	59	–12	110
69–	137	55	–14	125
70–	136	42	–10	101
71–	127	43	–6	135
72–	154	42	–4	92
73–	131	54	+10	230
74–	127	42	–26	224
75–	129	60	–2	124

(vi) मुस्लिम शहरी महिलाओं की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक N = 75

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
1–	138	46	+2	238
2–	138	45	+4	156
3–	149	47	+20	242
4–	102	48	+18	232
5–	152	45	–10	230
6–	150	53	+6	176
7–	105	49	+8	228
8–	149	50	+6	102
9–	146	46	–8	242
10–	121	94	0	225
11–	120	93	+2	155
12–	138	47	–12	186
13–	153	79	–10	238
14–	135	45	+8	229
15–	163	45	+8	231
16–	138	54	+4	237
17–	139	45	0	240
18–	143	48	–16	196
19–	134	47	0	243
20–	136	60	+4	228
21–	164	49	–4	231
22–	130	45	–8	242
23–	158	47	–2	245
24–	165	64	–8	242
25–	157	66	–10	229

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
26–	160	49	+2	228
27–	147	47	–2	227
28–	161	51	+8	197
29–	124	51	–4	186
30–	126	73	–2	92
31–	128	58	–6	192
32–	146	42	+4	186
33–	146	42	0	202
34–	127	54	+6	225
35–	162	52	+6	196
36–	146	48	+4	186
37–	109	44	0	192
38–	118	60	0	96
39–	128	50	–6	134
40–	143	52	0	155
41–	145	48	+4	164
42–	134	44	0	226
43–	117	45	–6	231
44–	147	43	–4	105
45–	130	80	+4	178
46–	88	43	+2	188
47–	129	71	–10	192
48–	134	62	–2	196
49–	136	69	+6	92
50–	137	51	+2	242

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक-आर्थिक स्तर
51-	50	83	-12	205
52-	135	68	+10	202
53-	69	81	-8	241
54-	112	51	-8	201
55-	121	62	-10	86
56-	136	56	+6	92
57-	73	49	-2	196
58-	118	79	-14	98
59-	155	46	+8	240
60-	141	57	+10	103
61-	133	50	+8	150
62-	138	62	+6	176
63-	136	45	+2	188
64-	127	50	+4	228
65-	157	50	0	255
66-	157	41	-8	238
67-	30	78	+2	188
68-	152	43	+2	107
69-	139	70	-6	194
70-	149	81	+4	196
71-	149	70	+10	246
72-	139	50	+20	239
73-	121	71	+18	231
74-	144	84	+2	224
75-	131	56	+2	177

(vii)- **मुस्लिम ग्रामीण पुरूषों की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक N = 75**

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
1-	165	45	0	115
2-	130	85	0	75
3-	151	42	-6	120
4-	153	42	+2	59
5-	127	62	-4	56
6-	155	46	-16	58
7-	146	88	-6	58
8-	197	52	+6	85
9-	125	53	-16	59
10-	157	73	+2	56
11-	131	46	+2	106
12-	138	46	-2	118
13-	129	76	+8	121
14-	146	50	+4	102
15-	148	48	-2	58
16-	113	43	+2	96
17-	134	56	-17	82
18-	140	53	-14	59
19-	138	69	-8	80
20-	135	50	+4	75
21-	125	74	0	124
22-	149	63	+6	55
23-	143	80	-10	122
24-	137	46	-6	58
25-	160	64	-8	59

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
26–	94	43	−2	125
27–	124	42	+2	102
28–	134	47	+14	58
29–	160	46	+4	115
30–	106	76	+2	58
31–	139	46	−2	55
32–	150	49	−8	56
33–	112	57	−2	107
34–	151	50	0	96
35–	132	47	−10	98
36–	146	56	−12	118
37–	145	45	0	98
38–	88	43	+8	101
39–	137	83	−16	53
40–	128	47	+2	55
41–	146	55	+8	85
42–	143	47	−2	55
43–	142	51	−10	88
44–	160	45	+4	57
45–	147	72	−6	57
46–	148	46	0	96
47–	158	44	−6	115
48–	147	46	−14	102
49–	137	54	+2	58
50–	131	44	+2	103

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
51–	137	52	0	75
52–	154	44	−6	65
53–	141	42	−16	56
54–	150	42	+2	120
55–	149	48	+8	72
56–	158	47	−6	88
57–	153	49	−4	56
58–	130	46	−10	58
59–	136	43	+6	58
60–	131	43	−4	56
61–	149	42	+2	118
62–	133	84	−8	59
63–	133	101	+24	84
64–	128	45	−4	124
65–	87	44	−4	98
66–	137	48	−8	122
67–	92	66	−12	115
68–	116	79	−6	102
69–	134	71	−4	92
70–	138	94	−4	75
71–	146	62	−4	58
72–	143	44	−8	72
73–	124	47	+12	86
74–	137	60	+12	89
75–	139	55	−4	117

(viii)- मुस्लिम ग्रामीण महिलाओं की धार्मिकता अभिवृत्ति, अन्धविश्वास, व्यक्तित्व तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी से प्राप्त मूल प्राप्तांक N = 75

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
1-	135	42	+10	72
2-	148	44	+12	59
3-	145	75	0	68
4-	85	86	0	74
5-	133	45	+8	88
6-	151	66	+6	94
7-	143	81	-6	58
8-	117	52	-4	98
9-	126	49	+4	115
10-	113	46	0	56
11-	109	51	-6	58
12-	88	46	-6	56
13-	139	84	-10	102
14-	139	76	-10	82
15-	56	67	-8	58
16-	58	66	0	59
17-	143	49	-8	122
18-	143	60	+6	72
19-	105	73	-2	62
205	138	70	-12	118
21-	128	77	+2	75
22-	134	46	+6	82
23-	124	61	-12	96
24-	116	55	-8	103
25-	133	75	-10	65

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
26–	143	47	−8	64
27–	136	56	−4	57
28–	137	54	0	78
29–	142	52	+16	72
30–	124	54	−8	89
31–	120	59	+10	77
32–	121	48	−8	84
33–	131	57	+2	121
34–	134	47	−8	96
35–	142	46	0	58
36–	138	55	−17	58
37–	113	61	0	92
38–	123	50	−10	120
39–	110	55	−16	120
40–	137	70	+2	68
41–	139	48	−14	59
42–	103	47	−10	72
43–	144	76	+2	86
44–	150	78	+4	124
45–	141	46	+10	88
46–	137	79	−4	56
47–	124	49	−4	55
48–	125	52	+6	96
49–	103	52	−12	59
50–	138	88	−6	56

क्रमांक	धार्मिकता अभिवृत्ति	अन्धविश्वास	व्यक्तित्व	सामाजिक–आर्थिक स्तर
51–	139	50	+4	58
52–	113	47	+2	66
53–	138	66	−8	77
54–	100	67	+2	59
55–	140	48	+6	84
56–	118	78	−6	98
57–	135	44	+10	102
58–	117	44	−2	82
59–	137	56	−2	58
60–	131	46	−14	59
61–	85	57	0	56
62–	114	52	+4	58
63–	107	71	+6	58
64–	127	77	−6	84
65–	147	78	−4	88
66–	143	56	+6	75
57–	113	82	−2	122
68–	83	62	−8	72
69–	140	78	−4	88
70–	116	47	0	103
71–	117	57	+6	59
72–	158	44	+6	101
73–	137	47	−6	57
74–	146	56	+2	58
75–	108	82	+6	92

गोपनीय

6/RS

RELIGIOSITY SCALE

(Hindi Version)

Constructed and Standardized by

L. I. BHUSHAN

Reader

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

BHAGALPURU NIVERSITY

BHAGALPUR-7

Sl. No.____________

Score.____________

National Psychologica Corporation

Labh Chand Market, Raja Mandi, Agra—2

पेशा·····························शिक्षा·································
धर्म·····························जाति···································
पुरुष/स्त्री (किसी एक को काट दें) औसत माहवारी आय··········
आप शहर में रहते हैं या देहात में ?······························
शहर/देहात में कितने वर्षो से रहते हैं ?··························
तारीख ·························

निर्देशन

आगे के पृष्ठों पर जीवन के व्यवहार और दर्शन से सम्बन्धित कुछ कथन या वाक्य दिये गये हैं। प्रत्येक वाक्य के विचार से कुछ लोग सहमत या असहमत हो सकते हैं। आप ध्यान से हर वाक्य को पढ़ें और देखें कि आप उनसे सहमत हैं अथवा असहमत। आपकी सुविधा के लिये प्रत्येक वाक्य के सामने 5—'बिल्कुल सहमत', 4—'सहमत', 3—'कह नहीं सकता', 2—'असहमत' तथा 1—'बिल्कुल असहमत' ये पाँच उत्तर दिये हुये हैं। आपके विचार से इनमें से जो उत्तर सबसे अधिक उपयुक्त हो उसकी क्रम संख्या को घेर दें। मान लें वाक्य है —"ईश्वर सर्व शक्तिमान है।" यदि आप इससे बिल्कुल सहमत हैं तो वाक्य के सामने 'बिल्कुल सहमत', यानी (5) को घेर दें।

1

उत्तर

वाक्य (कथन)	बिल्कुल सहमत	सहमत	कह नहीं सकता	असहमत	बिल्कुल असहमत
1. आत्मा ईश्वर का एक अंश है।	5	4	3	2	1
2. ईश्वर ने हमें दूसरों की सेवा करने के लिए पैदा किया है।	5	4	3	2	1
3. जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब ईश्वर अवतार लेते हैं अथवा अपने दूतों को भेजते हैं।	5	4	3	2	1
4. परनारी का चिन्तन करना पाप है।	5	4	3	2	1
5. हमें उनकी प्रसंशा करनी चाहिये जो धर्म पर दृढ़ हैं।	5	4	3	2	1
6. इस गलत बात को सुनकर दुख होता है कि मनुष्य का भाग्य ईश्वर के हाथ में है।	5	4	3	2	1
7. विनम्र व्यक्ति ईश्वर का प्रिय पात्र होता है।	5	4	3	2	1
8. यह सोचना बेकार और कष्टदायक है कि मृत्यु के बाद भी आत्मा जीवित रहती है।	5	4	3	2	1
9. दुनिया का अस्तित्व शस्त्र-बल पर नहीं, सत्य और दया पर निर्भर है।	5	4	3	2	1
10. ईश्वर में वही विश्वास करते है जिनमें आत्म-विश्वास की कमी होती है।	5	4	3	2	1
11. दूसरों को क्षमा करने से मन बड़ा संतुष्ट रहता है।	5	4	2	3	1
12. हमें चाहिये कि अपना सर्वस्व ईश्वर को अर्पित कर दें।	5	4	3	2	1
13. ईश्वर-पूजा मात्र ढोंग है।	5	4	3	2	1
14. मानव मात्र की भलाई करने से व्यक्ति ईश्वर के निकट पहुँचता है।	5	4	3	2	1
15. धार्मिक स्थलों पर जाने से मन पवित्र हो जाता है।	5	4	3	2	1
16. स्वर्ग और नरक कहीं नहीं है।	5	4	3	2	1
17. इस संसार को चलाने वाला केवल एक मात्र ईश्वर है।	5	4	3	2	1
18. यदि कोई मनुष्य अपनी निन्दा सह लेता है तो यही समझना चाहिये कि उसने सारे जगत पर विजय प्राप्त कर ली है।	5	4	3	2	1

उत्तर

वाक्य (कथन)	बिल्कुल सहमत	सहमत	कह नहीं सकता	असहमत	बिल्कुल असहमत
19. वह कायर है जो पाप से डरता है।	5	4	3	2	1
20. ईश्वर की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता है।	5	4	3	2	1
21. मोक्ष के लिए सांसारिक सुख का त्याग करना मूर्खता है।	5	4	3	2	1
22. हर व्यक्ति मन को पवित्र कर ईश्वर को देख सकता है अथवा उसका अनुभव कर सकता है।	5	4	3	2	1
23. ईश्वर का विरोधी कभी मानव का सच्चा मित्र नहीं हुआ।	5	4	3	2	1
24. व्यक्ति की सुख समृद्धि ईश्वर की दया का ही फल है।	5	4	3	2	1
25. जो स्त्री परपुरुष से अनुरक्ति रखती है वह घोर कष्ट की भागिनी होती है।	5	4	3	2	1
26. सांसारिक कष्टों से मुक्ति का एक मात्र साधन है ईश्वर की उपासना।	5	4	3	2	1
27. ईश्वर सम्बन्धी सारे विचार मन की उपज हैं।	5	4	3	2	1
28. ऐसे व्यक्ति से मिलकर बड़ा दुख होता है जो अपने माता-पिता की इज्जत नहीं करता।	5	4	3	2	1
29. पुनर्जन्म एक कोरी कल्पना है।	5	4	3	2	1
30. जीव-हत्या महा पाप है।	5	4	3	2	1
31. इस क्षणभंगुर शारीरिक सौन्दर्य के सम्बन्ध में चिन्तन करना बेकार है।	5	4	3	2	1
32. प्राणी ईश्वर की प्रेरणा से ही प्रभावित होकर सभी कार्य करते हैं।	5	4	3	2	1
33. ईश्वर की उपासना में ही सच्चा आनन्द है।	5	4	3	2	1
34. प्रयास या प्रयत्न की तुलना में प्रार्थना बेकार है।	5	4	3	2	1
35. कोई व्यक्ति धर्म के बिना भी अच्छा खासा जीवन बिता सकता है।	5	4	3	2	1
36. यह संसार माया और भ्रम है केवल ईश्वर सत्य है।	5	4	3	2	1

S. S.

एल० एन० दुबे
एवम्
बी० एम० दीक्षित

निम्न वि[illegible]ण दीजिये :–

नाम..

आयु.................................. लिंग ....

शैक्षिक स्तर.......................... आय.............................

ग्रामीण/शहरी...

जाति.............................. धर्म.............................

निर्देश :—

आगे के पृष्ठों में प्रत्येक कथन के तीन सम्भावित उत्तर दिए गए हैं। आप जिस उत्तर से सहमत हों उसके अंक को गोले (O) से घेर दीजिए।

प्राप्तांक.................... श्रेणी....................

PSYCHOLOGICAL CORPORATION
4/230 KACHERI GHAT, AGRA - 282 004 (INDIA)

१—आप आवश्यक कार्य से कहीं बाहर जा रहे हैं, रास्ते में सामने से बिल्ली रास्ता काट जाये तो आप क्या करेंगे :—

(१) कुछ देर ठहर कर आगे जाऊँगा।
(२) उस मार्ग से फिर नहीं जाऊँगा।
(३) उसकी उपेक्षा कर आगे चला जाऊँगा। १ २ ३

२—आपकी हाथ की हथेली यदि खुजलाये तो आप इसका क्या अर्थ समझेंगे :—

(१) अनायास धन मिलने की आशा है।
(२) इससे कुछ नहीं होता।
(३) किसी मित्र के आने की सम्भावना है। १ २ ३

३—भूत का निवास कहे जाने वाले 'झाड़' के पास से यदि आपको रात्रि को निकलना पड़े तो आप क्या करेंगे :—

(१) ऐसे झाड़ के पास से रात्रि को नहीं निकलेंगे।
(२) कोई साथ में हो तो निकल जायेंगे।
(३) बिना किसी डर के निकल जायेंगे। १ २ ३

४—ऐसा कहा जाता है कि शुक्रवार की रात्रि को की गई कोई महत्वपूर्ण बात करने पर पूरी नहीं होती, यदि कोई आपसे शुक्रवार रात्रि को महत्वपूर्ण बात करना चाहे तो आप क्या करेंगे :—

(१) शुक्रवार की रात्रि को कोई महत्वपूर्ण बात नहीं करूंगा।
(२) इस बात पर विश्वास न कर महत्वपूर्ण बात करने से नहीं डरूंगा।
(३) बात निश्चित होने पर उसकी सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करूंगा।

५—सुबह-सुबह किसी आवश्यक कार्य से बाहर जाते समय यदि सामने से खाली घड़े लिए पनिहारिन दिखाई दे जाये तो क्या करेंगे :—

(१) वापस लौट जाऊंगा।
(२) मुड़कर रास्ता बदल लूंगा।
(३) किसी बात की परवाह न कर आगे चला जाऊंगा। १ २ ३

६—स्वप्न में यदि कोई साधु महात्मा आपको कोई निर्देश दे तो आप क्या करेंगे :—

(१) उन साधु महात्मा को ढूढूंगा।
(२) उनके निर्देशात्मक कार्य करूंगा।
(३) उनके निर्देश का पालन नहीं करूंगा। १ २ ३

७—आप कोई महत्वपूर्ण कार्य करना चाहते हैं तो कार्य प्रारम्भ करने के पहले क्या करेंगे :—
(१) कार्य प्रारम्भ करने के पहले मुहूर्त दिखवा लूंगा।
(२) बिना किसी मुहूर्त के पूछे ही कार्य प्रारम्भ कर दूंगा।
(३) जब तक मुहूर्त न आये तब तक कार्य प्रारम्भ नहीं करूंगा। १ २ ३

८—बाहर कहीं कार्यवश जाते समय यदि कोई एक बार छींक दे तो आप क्या करेंगे :-
(१) छींक की परवाह न कर अपने कार्य से बाहर चला जाऊंगा।
(२) थोड़ी देर रुककर जाऊंगा।
(३) उस दिन उस कार्य से बाहर नहीं जाऊंगा। १ २ ३

९—मामा और भान्जे एक ही नाव में नदी पार कर रहे हैं, यदि आपको भी नदी पार करना पड़े तो आप क्या करेंगे :—
(१) उस नाव से नदी पार नहीं करूंगा।
(२) उस नाव से नदी पार करने में नहीं डरूंगा।
(३) ईश्वर से मनोती बोलकर उस नाव में बैठूंगा। १ २ ३

१०—घर के छप्पर पर यदि कौआ बोले तो आप इसका क्या अर्थ निकालेंगे :—
(१) कोई मेहमान आने वाला है।
(२) कौए के बोलने का कोई अर्थ नहीं होता।
(३) कोई अशुभ समाचार मिलने की सम्भावना है। १ २ ३

११—रात्रि को यदि बिल्ली के रोने की आवाज सुनाई दे तो क्या होता है :—
(१) दूसरे दिन कोई अशुभ घटना होने की सम्भावना है।
(२) बिल्ली के रोने से कुछ नहीं होता।
(३) कोई दैवीय विपत्ति की अग्रिम सूचना है। १ २ ३

१२—मार्ग में यदि नीलकंठ के दर्शन हो जायें तो आप इसका क्या तात्पर्य समझेंगे :—
(१) कार्य अवश्य सफल होगा।
(२) मार्ग सरलता से कट जाएगा।
(३) कोई प्रभाव नहीं होगा।

१३—रात्रि के समय आकाश में कोई तारा टूटता हुआ दिखाई दे जाय तो आप इसका क्या अर्थ लगायेंगे :—
(१) कोई 'आत्मा' स्वर्ग को जा रही है।
(२) तारा टूटना एक प्राकृतिक घटना है।
(३) कोई अशुभ होने वाला है। १ २ ३

१४—सुबह-सुबह यदि कोई बन्दर का नाम ले ले तो इससे क्या होने की सम्भावना है :—
(१) दिन भर भोजन नहीं मिलेगा।
(२) भोजन देर से मिलेगा।
(३) इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। १ २ ३

१५—सुबह बाहर जाते समय यदि दही बेचने वाला दिखाई दे जाय तो इसका क्या परिणाम होगा :—
(१) कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी।
(२) दिन अच्छी तरह कट जायेगा।
(३) इसका कोई परिणाम नहीं होगा। १ २ ३

१६—रात्रि को यदि गाँव के पास उल्लू बोले तो इसका क्या परिणाम होगा :—
(१) गाँव पर विपत्ति आएगी।
(२) इसका कोई प्रभाव नहीं होगा।
(३) गाँव में कोई दुर्घटना होने की सम्भावना होगी। १ २ ३

१७—किसी कार्यवश बाहर जाते समय यदि रास्ते में घोड़ा जमीन पर लोटता दिखाई दे जाए तो आप इसका क्या अर्थ लेंगे :—
(१) कार्य अवश्य पूरा होगा।
(२) रास्ता अच्छी तरह कट जाएगा।
(३) इसका कार्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। १ २ ३

१८—आपको यदि सिर पर कौआ दिखाई दे जाए तो आप क्या करेंगे :—
(१) अपनी मृत्यु का झूठा समाचार अपने किसी सम्बन्धी को भेज देंगे।
(२) इसे अर्थहीन समझकर कुछ नहीं करेंगे।
(३) कोई अनिष्ट न हो इसके लिए उपवास करेंगे। १ २ ३

१९—आपके घर में रात्रि को यदि कोई सांपों के बारे में बातें करे तो आप क्या करेंगे :—
(१) उसे ऐसी बातें करने से मना कर देंगे ।
(२) किसी भी बात की चिन्ता नहीं करेंगे ।
(३) ऐसी बातें सुनने से मन में साँप आने का डर बना रहेगा । १ २ ३

२०—शनिवार के दिन यदि आपसे तेल लाने को कहा जाए तो आप क्या करेंगे :—
(१) तेल ले आवेंगे ।
(२) उस दिन तेल लेने नहीं जावेंगे ।
(३) जब तक बन सकेगा उसे टालने का प्रयास करेंगे । १ २ ३

२१—बाहर निकलते ही यदि आपको एक आँख वाला व्यक्ति दिखाई दे जाये तो आप क्या करेंगे :—
(१) वापिस लौट आवेंगे ।
(२) कोई अनिष्ट न होने की ईश्वर से प्रार्थना करेंगे ।
(३) किसी बात की परवाह किए बिना बाहर चले जायेंगे । १ २ ३

२२—रात्रि को यदि कुत्ते को रोने की आवाज सुनाई दे तो आप इसका क्या अर्थ मानेंगे :—
(१) इस बात पर कोई ध्यान नहीं देंगे ।
(२) निकट में ही किसी की मृत्यु की संभावना है ।
(३) कोई बुरी घटना होने का सूचक है ।

२३—किसी महत्वपूर्ण कार्यवश यदि आपको अन्य दो व्यक्तियों के साथ जाना पड़े तो आप क्या करेंगे :—
(१) तीन व्यक्तियों को एक साथ जाने में कोई हानि न समझ उनके साथ चले जायेंगे ।—
(२) दो व्यक्तियों को पहले भेज देंगे फिर पीछे जायेंगे ।
(३) किसी एक आदमी को साथ न चलने का आग्रह करेंगे । १ २ ३

२४—आपको यदि कोई हाथ पर नमक दे तो आप इसका क्या अर्थ निकालेंगे :—
(१) आपस में लड़ाई होने की सम्भावना है ।
(२) इसका कोई प्रभाव नहीं होता ।
(३) कोई अशुभ समाचार मिल सकता है । १ २ ३

x.

२५—पुरुष की दाहिनी आँख या दाहिना अंग और स्त्री की बायीं आँख या बायां अंग फड़कना किस बात का सूचक है :—

(१) कोई शुभ समाचार मिलने वाला है।
(२) किसी प्रिय के आने की सम्भावना है।
(३) इसका कोई प्रभाव नहीं होता।

२६—किसी लेटे हुए मनुष्य के ऊपर से निकल जाने का क्या फल होता है :—

(१) उसकी फिर ऊंचाई नहीं बढ़ती।
(२) उसका अनिष्ट होने की सम्भावना हो जाती है।
(३) ऊपर से निकलने से कुछ नहीं होता। १ २ ३

२७—बाहर किसी कार्य से जाते समय यदि पानी से भरा घड़ा लिए कोई दीख जाये तो इससे क्या होगा :—

(१) कार्य अवश्य पूरा हो जावेगा।
(२) इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
(३) कोई मित्र मिलेगा। १ २ ३

२८—यदि कोई एक चप्पल उल्टी हो जाए, तो इसका क्या परिणाम होगा :—

(१) आपस में झगड़ा होने की सम्भावना है।
(२) इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
(३) चप्पल गुमने का डर हो जाएगा। १ २ ३

२९—ऐसा कहा जाता है कि सोमवार को नए कपड़े पहिनने से वे जल्दी फट जाते हैं। संयोग वश यदि आपको सोमवार को नए कपड़े पहिनना पड़े तो आप क्या करेंगे :—

(१) फटने के डर से उस दिन नए कपड़े नहीं पहिनेंगे।
(२) जहाँ तक बनेगा नए कपड़े पहिनना टालेंगे।
(३) बिना किसी भय के नए कपड़े पहिन लेंगे। १ २ ३

३०—घर में अचानक यदि आइना फूट जाए तो आप इसे किस बात का द्योतक मानेंगे :—

(१) यह कोई बुरी घटना होने की पूर्व सूचना है।
(२) एक सामान्य घटना है।
(३) कोई अशुभ समाचार मिलने की सम्भावना है। १ २ ३

३१—शाम को लोग अपने घर के दरवाजे बन्द करके क्यों नहीं रखते :—
(१) दरवाजा बन्द रखने से लक्ष्मी जी लौट जाती हैं।
(२) इस समय दरवाजा बन्द रखना अशुभ होता है।
(३) दूसरे लोगों को देखकर ही कुछ लोग दरवाजा बन्द नहीं रखते। १ २ ३

३२—नए बन रहे मकान पर काली झण्डी (नजरबट्टू) लगा देने से क्या होता है :—
(१) इससे मकान को नजर नहीं लगती।
(२) इससे कुछ नहीं होता।
(३) इससे मकान बिना विघ्न बाधा के पूरा बन जाता है। १ २ ३

३३—घर पर यदि कोई कैंची बजा रहा हो तो इसका क्या परिणाम होता है :—
(१) इससे कुछ नहीं होता।
(२) कैंची गुमने का डर होता है।
(३) आपस में किसी में झगड़ा होने की सम्भावना है। १ २ ३

३४—शरीर के किसी भाग पर यदि छिपकली गिर जाए तो आप क्या करेंगे :—
(१) कोई अनिष्ट न हो इसलिए शीघ्र नहा लेंगे।
(२) किसी प्रकार का कोई डर नहीं मानेंगे।
(३) कपड़े बदल लेंगे। १ २ ३

३५—अचानक यदि दिया बुझ जाए तो इसका क्या परिणाम होता।
(१) दिया बुझने से कुछ नहीं होता।
(२) किसी निकट सम्बन्धी के अनिष्ट होने का सूचक है।
(३) कोई बुरी खबर मिलने की सम्भावना है। १ २ ३

३६—रोटी बेलते समय यदि स्त्री के हाथ से बेलन छूट जाता है तो यह किस बात का सूचक है :—
(१) कोई मेहमान आने वाला है।
(२) इससे कुछ नहीं होता।
(३) कोई शुभ समाचार मिलने की सम्भावना है।

३७—आपको यदि तेरह नम्बर की सीट मिले तो आप क्या करेंगे :—

(१) उस सीट पर नहीं बैठेंगे।

(२) बिना किसी डर के उस सीट पर बैठ जायेंगे।

(३) इस नम्बर की सीट को बदलने की कोशिश करेंगे। १ २ ३

३८—किसी कार्य वश बाहर जाते समय यदि नेवला रास्ता काट जाए तो आप क्या समझेंगे :—

(१) कार्य अवश्य पूरा होगा।

(२) इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

(३) शुभ माना जाता है। १ २ ३

३९—बाहर जाते समय बछड़े को दूध पिलाती गाय दिखायी दे जाय तो आप क्या समझेंगे :—

(१) कोई शुभ काम होने वाला है।

(२) इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

(३) जिस काम से जा रहे हैं वह अवश्य सफल होगा।

४०—सूर्य और चन्द्र ग्रहण के दिन अधिकांश मनुष्य क्यों नहाते हैं :—

(१) नहाने से सूर्य और चन्द्र ग्रहण की विपत्ति दूर हो जाती है।

(२) इससे अपनी हानि होने से बचाव हो जाता है।

(३) दूसरे लोगों को नहाते देख अन्य लोग भी नहा लेते हैं। १ २ ३

THE NEYMAN-KOHILSTEDT DIAGNOSTIC TEST

For

INTROVERSION-EXTROVERSION

(अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी परीक्षण)

दिनांक..............................

नाम..आयु..............................

शिक्षा... लिंग..............................

पिता/संरक्षक का नाम..

व्यवसाय...आयु..............................

विद्यालय या कॉलेज का नाम..

पता..

....

Indian Adaptation by :
Dr. Jai Prakash, M. A. Ph. D.
Reader, Psychology Department :
University of Saugar, Saugar (M.P.)

Published by :
AGRA PSYCHOLOGICAL RESEARCH CELL
Tiwari Kothi, Belanganj, Agra-282004
[Phone : 64965]

APRC 83/5/20.2

निर्देश :

"इस परीक्षण में 50 वक्तव्य दिये हुये है। प्रत्येक वक्तव्य के सामने 'हाँ' और नहीं लिखा हुआ है। कोई भी वक्तव्य अपने आप में सही या गलत नहीं है। पहला वक्तव्य पढ़िये और सोचिये कि वह आपके विषय में ठीक है या नहीं। उदाहरणार्थ पहला वक्तव्य है बहुत अधिक आत्मरत (अपने में लीन) रहते हैं" आप सोचिये कि आप बहुत अधिक आत्मरत रहते है या नहीं। यदि यह वक्तव्य आपके सम्बन्ध में ठीक है अर्थात् आप अत्यधिक आत्मरत रहते है तो 'हाँ के स्थान में (—) का चिन्ह बना दीजिये और यदि आप समझते है कि वक्तव्य आपके सम्बन्ध में ठीक नहीं है अर्थात् आप अधिक आत्मरत नहीं रहते है तो "नहीं" के स्थान में (—) चिन्ह लगा दीजिये। बस इसी प्रकार एक-एक वक्तव्य को पढ़ते जाइये और अपने सम्बन्ध में उनकी सत्यता का विचार करते हुए 'हाँ' या 'नहीं' पर चिन्ह लगाते जाईये"

1

1.	बहुत अधिक आत्मरत (अपने में डूबे) रहते हैं।	हाँ	नहीं
2.	जीवन को आनन्दमय मानते हैं।	हाँ	नहीं
3.	सदैव शान्त एवं सुस्थिर रहते हैं।	हाँ	नहीं
4.	दूसरों में भरपूर विश्वास रखते हैं।	हाँ	नहीं
5.	अब से पाँच वर्ष आगे की बात सोचते या स्वप्न देखते हैं।	हाँ	नहीं
6.	सामाजिक मेल-मिलाप के अवसरों पर प्रायः घर में ही रह जाते हैं।	हाँ	नहीं
7.	आसपास के व्यक्तियों के साथ मिलकर काम करते हैं।	हाँ	नहीं
8.	हर समय एक ही प्रकार का काम करना चाहते हैं।	हाँ	नहीं
9.	सामाजिक सम्मेलनों में लोगों से मिलने के लिए भाग लेते हैं।	हाँ	नहीं
10.	कोई निर्णय लेने से पूर्व बहुत सोचते हैं।	हाँ	नहीं
11.	स्वयं निश्चय करने की अपेक्षा दूसरों के सुझाव पर अधिक कार्य करते हैं।	हाँ	नहीं
12.	उत्तेजक मनोरंजन की अपेक्षा शान्तिमय मनोरंजन पसन्द करते हैं।	हाँ	नहीं
13.	दूसरों के द्वारा अपने कार्य का देखा जाना पसन्द नहीं करते।	हाँ	नहीं
14.	थकान वाले कार्यों को छोड़ देते हैं।	हाँ	नहीं
15.	धन को व्यय करने की अपेक्षा बचाते हैं।	हाँ	नहीं
16.	अपने विचारों तथा प्रेरकों का कदाचित (कभी-कभी ही) विश्लेषण करते हैं।	हाँ	नहीं
17.	कल्पना या दिवा-स्वप्नों में लीन रहते हैं।	हाँ	नहीं
18.	जिन कार्यों को आप सुचारु रूप से करते हों उन्हें दूसरों द्वारा देखा जाना पसन्द करते हैं।	हाँ	नहीं
19.	क्रोध आने पर अपना काबू खो बैठते हैं।	हाँ	नहीं
20.	दूसरों द्वारा प्रशंसित होने पर अधिक कार्य करते हैं।	हाँ	नहीं
21.	आसानी से उत्तेजित हो जाते हैं।	हाँ	नहीं
22.	अपने सम्बन्ध में अक्सर सोचते और विचारते हैं।	हाँ	नहीं
23.	सामाजिक कार्यों का नेतृत्व करते हैं।	हाँ	नहीं
24.	जनता में भाषण देते हैं।	हाँ	नहीं
25.	उन कार्यों को करते हैं, जिनके सम्बन्ध में दिवा-स्वप्न देखते हैं।	हाँ	नहीं

+

26. पत्र को भेजने से पहले बार-बार दुहराते या लिखते हैं।	हाँ	नहीं
27. मन्द, किन्तु निश्चयात्मक गति से कार्य करने की अपेक्षा शीघ्र काम करते हैं।	हाँ	नहीं
28. बहुत अधिक सोच-विचार करते हैं।	हाँ	नहीं
29. अपनी तीव्र भावनाओं (आनन्द, शोक, क्रोध आदि) को सफलता-पूर्वक व्यक्त करते हैं।	हाँ	नहीं
30. विस्तृत विवरणों पर बहुत कम ध्यान देते है।	हाँ	नहीं
31. लोगों के मिलने में अधिक सावधान रहते हैं।	हाँ	नहीं
32. अपने विरोधियों से भी बिना झिझक के मिलते हैं।	हाँ	नहीं
33. पेचीदी गुत्थियों को हल करने में आनन्द आता है।	हाँ	नहीं
34. सुझावों पर सोचने विचारने की अपेक्षा उन पर तत्काल अमल करते हैं।	हाँ	नहीं
35. किस कार्य को करने के बजाय उसके विषय को पढ़ते हैं।	हाँ	नहीं
36. कहानी की शैली की अपेक्षा कहानी को अधिक पसन्द करते हैं।	हाँ	नहीं
37. व्यक्तिगत डायरी लिखते हैं।	हाँ	नहीं
38. साथियों के बीच चुप रहते हैं।	हाँ	नहीं
39. तत्क्षण (एकदम उसी समय अथवा एकाएक) कार्य कर बैठते हैं।	हाँ	नहीं
40. अपने सम्बन्ध में सोचना अच्छा नहीं लगता।	हाँ	नहीं
41. किसी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उसकी योजना बना लेते हैं।	हाँ	नहीं
42. बार-बार एक तरह के कार्य को बदल कर दूसरे तरह के कार्य करते हैं।	हाँ	नहीं
43. संकट का सामना करने के बजाय बचते हैं।	हाँ	नहीं
44. अफवाहों को महत्वपूर्ण मानते हैं।	हाँ	नहीं
45. दूसरों पर भरपूर विश्वास करते हैं।	हाँ	नहीं
46. जब तक भली-भाँति जान न जायें अपरिचितों के प्रति अविश्वास रखते हैं।	हाँ	नहीं
47. अपने बजाय दूसरों का अध्ययन करते हैं।	हाँ	नहीं
48. अपनी छुट्टियाँ चहल-पहल वाले स्थान के बदले शान्त स्थान पर बिताते हैं।	हाँ	नहीं
49. अपनी राय बना लेने पर भी सरलता से बदल देते हैं।	हाँ	नहीं
50. अपने आसपास चलने वाले वार्त्तालापों में सक्रिय भाग लेते हैं।	हाँ	नहीं

+

गोपनीय

11/SESS

xvii.

सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची (शहरी)

(Socio-economic Status Scale

(Urban—Form A)

BY

S. P. Kulshrestha
Department of Education
D. A. V. College Dehradun

कृपया इन्हें भरिये –

नाम.... ....आयु .... जन्म तिथि.... ....

कक्षा व वर्ग.... ....रोल नं०.... ....तारीख.... ....

विद्यालय.... ....

घर का पूरा पता.... ....

निर्देश

इस सूची का उद्देश्य तुम्हारे परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर का निर्धारण करना है। अतः तुम अपने माता/पिता, भाई/बहिन के बारे में सही-सही सूचनायें भरो। विश्वास रखो, तुम्हारे द्वारा दी गयी सूचनायें गुप्त रखी जावेंगी और किसी को भी नहीं बताई जायेंगी। इस परिसूची में प्रत्येक प्रश्न के कई सम्भावित उत्तर दिये गये हैं—तुम इनमें से अपने परिवार के ऊपर लागू होने वाले उत्तरों को चुनो और उनके सामने बने गोलों में सही (✓) का निशान लगा दो।

National Psychological Corporation

Labh Chand Market, Raja Mandi, AGRA-2

xviii.

	संरक्षक पिता	माता	सबसे बड़ा भाई	सबसे बड़ी बहिन
१. तुम्हारे पिता/संरक्षक/माँ/भाई/बहिन किस प्रकार के व्यवसाय में कार्य करते हैं ?				
(क) ऐसे व्यवसाय जिनमें उच्च शिक्षा की उपाधि की आवश्यकता पड़ती है। जैसे—वकील, एडवोकेट, प्रोफेसर, डाक्टर व इन्जीनियर आदि।	☐	☐	☐	☐
(ख) उच्च स्तरीय प्रशासनात्मक कार्यकर्त्ता या किसी बड़े व्यावसायिक संस्थान के मालिक/प्रबन्धक आदि।	☐	☐	☐	☐
(ग) ऐसे व्यवसाय जिनमें कम से कम स्नातक शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। जैसे हाईस्कूल या इन्टर कालेज के शिक्षक, मैडीकल रिप्रेजैन्टेटिव आदि।	☐	☐	☐	☐
(घ) मध्यम वर्गीय व्यावसायिक कार्यों के मालिक/प्रबन्धक या पार्टनर तथा सेना के कमीशन्ड आफीसर।	☐	☐	☐	☐
(य) सामान्य व्यावसायिक या तकनीकी कार्य जैसे प्राइमरी या नर्सरी स्कूल शिक्षक, दुकानदार या सचिव आदि।	☐	☐	☐	☐
(र) कौशल युक्त व्यवसाय जैसे कारपेन्टर, लुहार, बढ़ई तथा बिजली वाला आदि।	☐	☐	☐	☐
(ल) सेवा व्यवसाय (Service worker) जैसे क्लर्क, टाइपिस्ट स्टेनो, पुलिसमैन, फायरमैन तथा सेना में नॉन कमीशन्ड अफसर।	☐	☐	☐	☐
(व) मध्यम श्रेणी के कौशल युक्त व्यवसाय। जैसे मशीन-आपरेटर आदि। (Semi-skilled Jobs)	☐	☐	☐	☐
(स) बहुत मामूली कार्य (Unskilled Jobs)। जैसे सेवक, चपरासी, मजदूर, कृषक आदि।	☐	☐	☐	☐
२. तुम्हारे परिवार के सदस्यों की सबसे अधिक शिक्षा कहाँ तक हुई है ?				
(क) कालेज शिक्षा के बाद कोई उच्चस्तरीय उपाधि जैसे Ph. D. या D. Litt. आदि।	☐	☐	☐	☐
(ख) स्नातकोत्तरीय शिक्षा (M. A., M. Sc., M. Com., M. Sc. (Ag.) आदि।)	☐	☐	☐	☐
(ग) स्नातकीय शिक्षा (B. A., B. Sc., B. Com., B Sc. (Ag) आदि।)	☐	☐	☐	☐
(घ) हायर सैकन्डरी/इन्टरमीडियट	☐	☐	☐	☐
(य) हाईस्कूल	☐	☐	☐	☐
(र) मिडिल स्कूल	☐	☐	☐	☐
(ल) प्राइमरी स्कूल	☐	☐	☐	☐
(व) अनपढ़	☐	☐	☐	☐
३. तुम्हारे परिवार के विभिन्न सदस्यों के पास कौन सी सबसे ऊंची व्यावसायिक उपाधियाँ हैं ?				
(क) स्नातकोत्तरीय शिक्षा के बाद की व्यावसायिक उपाधि। (जैसे D. E. V. G. या D. M S. P., D. P. R आदि।)	☐	☐	☐	☐
(ख) स्नातक शिक्षा के बाद की व्यावसायिक उपाधि या डिप्लोमा। (जैसे B. Ed.)	☐	☐	☐	☐
(ग) हायर सैकन्डरी/इन्टर के बाद का व्यावसायिक डिप्लोमा। (जैसे शिक्षक का डिप्लोमा, इन्जीनियरिंग का डिप्लोमा आदि)	☐	☐	☐	☐
(घ) हाईस्कूल की शिक्षा के बाद प्राप्त प्रशिक्षण उपाधि।	☐	☐	☐	☐
(य) मिडिल स्कूल के बाद की प्रशिक्षण उपाधि।	☐	☐	☐	☐
(र) सामान्य प्रशिक्षण उपाधि।	☐	☐	☐	☐
(ल) कोई भी प्रशिक्षण या व्यावसायिक उपाधि नहीं है।	☐	☐	☐	☐

४. आपके परिवार की कुल मासिक आय कितनी है ?

- (क) २००० से अधिक ☐
- (ख) १५०१ रुपये से २००० तक ☐
- (ग) १००१ रुपये से १५०० तक ☐
- (घ) ५०१ रुपये से १००० तक ☐
- (य) २०१ रुपये से ५०० तक ☐
- (र) १०१ रुपये से २०० तक ☐
- (ल) ५० रुपये से १०० तक ☐
- (व) ५० रुपये से कम ☐

५. आपके परिवार पर कितना रुपया उधार है और कितना रुपया जमा है ?

रुपया	बैंक में जमा	पोस्ट आफिस में जमा	उधार	एक दम जरूरत पड़ने पर कितना धन इकट्ठा कर सकते हैं।
(क) २००० से अधिक	□	□	□	□
(ख) १५०१ से २००० तक	□	□	□	□
(ग) १००१ से १५०० तक	□	□	□	□
(घ) ५०१ से १००० तक	□	□	□	□
(य) २०१ से ५०० तक	□	□	□	□
(र) १०१ से २०० तक	□	□	□	□
(ल) ५० से १०० तक	□	□	□	□
(व) ५० से कम	□	□	□	□
(स) बिलकुल नहीं	□	□	□	□

६. आपका मकान—

(क) स्वयं का है। □

(ख) स्वयं किराये पर हैं पर घर का मकान किराये पर उठा है। □

(ग) अपने मकान का एक भाग किराये पर उठा रखा है। □

(घ) अपना मकान नहीं है, किराये पर रहते हैं। □

७. आपका मकान किस प्रकार का है ?

(क) कई मंजिल वाला या बड़ा बंगला। □

(ख) छोटा बंगला □

(ग) पक्का मकान □

(घ) साधारण मकान □

८. स्कूल में—

(क) तुम्हारी फीस माफ है। □

(ख) तुम्हारे भाई-बहिनों की फीस माफ है। □

(ग) फीस माफ कराने की जरूरत नहीं है। □

९. तुम तथा तुम्हारे भाई/बहिन किस प्रकार के स्कूल में पढ़ते हैं ?

(क) कन्वेन्ट स्कूल या अन्य अँग्रेजी माध्यम का स्कूल □

(ख) राजकीय स्कूल □

(ग) राजकीय सहायता प्राप्त स्कूल □

(घ) प्राईवेट स्कूल □

१०. तुम्हारे घर में कौन-कौन से नौकर कार्य करते हैं ?

(क) आफिस में कार्य करने वाले चपरासी □

(ख) रसोइया □

(ग) आया □

(घ) माली □

(र) बर्तन मांजने वाला □

(ल) सामान्य घरेलू नौकर □

(व) कोई नौकर नहीं है। □

११. तुम्हारे पास कितने जोड़े—

	दो से कम	३-५ तक	५ से अधिक
(क) कपड़े हैं—	□	□	□
(ख) जूते हैं—	□	□	□

१२. तुम्हारे घर में नीचे लिखी चीजों में से जो चीजें मौजूद हों उनके सामने दिये गये गोलों में (√) सही का निशान लगाइये।

(क) कार □, मोटर साइकिल या स्कूटर □, रिक्शा □, साइकिल □

(ख) टेलीविजन □, रिकार्डप्लेयर □, रेडियो/ट्रांजिस्टर □, ग्रामोफोन □

(ग) रैफरीजरेटर □, सेफ □, स्टील अलमारी □

(घ) सोफासैट □, डाईनिंग टेबिल □, ड्रेसिंग टेबिल □

(य) उत्तम कुर्सी-मेज □, साधारण कुर्सी-मेज □

(र) बिजली का स्टोव □, वाटर बोइलर □, गैस का चूल्हा □, प्रेशर कुकर □,

xx.

(ल) दीवार घड़ी □, मेजघड़ी □, हाथ घड़ी □,

(व) वैक्यूम क्लीनर □, कॉफी परक्युलर □, बिजली का आटोमैटिक प्रैस □, साधारण प्रैस □

(स) बिजली का पंखा □, मिक्सर (mixer) □, ग्राइन्डर □, सिलाई की मशीन □

(श) कैमरा □, टैलिस्कोप □, डिनर सैट □, टी सैट □, लैमन सैट □, पिकनिक सैट □,

(ह) डाईनिंग रूम □, ड्राइंग रूम □, अध्ययन कक्ष □, शयन कक्ष □, स्नानगृह □, शौचालय □,

१३. तुम्हारे घर में किस प्रकार के समाचार पत्र/पत्रिका आती हैं ?

(क) दैनिक □
(ख) साप्ताहिक □
(ग) मासिक □
(घ) त्रैमासिक □
(य) अर्धवार्षिक □
(र) वार्षिक □
(ल) कभी-कभी आती है ? □
(व) कभी नहीं □

१४. तुम्हारे मोहल्ले या नगर में उत्सव होने पर तुम्हें या तुम्हारे परिवार के सदस्य को बुलाया जाता है ?

(क) अक्सर बुलाया जाता है। □
(ख) कभी-कभी बुलाया जाता है। □
(ग) कभी नहीं बुलाया जाता है। □

१५. तुम/तुम्हारे माता/पिता आदि किसके सदस्य/पदाधिकारी हैं ?

(क) सामाजिक संस्थायें □
(ख) व्यावसायिक संस्थायें □
(ग) अन्य संस्थायें □
(घ) किसी संस्था के नहीं □

१६. तुम जिस मोहल्ले में रहते हो उसमें अधिकतर—

(क) बड़े-बड़े लोग रहते हैं। □
(ख) मध्यम वर्गीय लोग रहते हैं। □
(ग) क्लार्क या दुकान-सहायक जैसे लोग रहते हैं। □
(घ) साधारण वर्ग के लोग रहते हैं। □
(य) निम्न स्तरीय लोग रहते हैं। □

१७. तुम्हारे बारे में अधिकतर लोग क्या सोचते हैं कि तुम

(क) अत्यधिक प्रतिष्ठित परिवार के हो। □
(ख) कुछ अधिक प्रतिष्ठित परिवार के हो। □
(ग) मध्यम वर्गीय परिवार के हो। □
(घ) साधारण परिवार के हो। □
(य) निम्न स्तरीय परिवार के हो। □

१८. क्या तुम्हारा परिवार जाति प्रथा में विश्वास रखता है ?

(क) हाँ □ (ग) नहीं □ (ग) अनिश्चित □

१९. यदि तुम्हें घर से बहुत दूर पढ़ने या नौकरी करने जाना पड़े तो क्या तुम्हारे माता पिता तुम्हें भेजना पसन्द करेंगे ?

(क) हाँ □ (ख) नहीं □ (ग) अनिश्चित □

२०. क्या तुम नयी चीजों को/नवीन विधियों को एक-दम स्वीकार कर सकते हो ?

(क) हाँ □ (ग) नहीं □ (ग) अनिश्चित □

Total Score = [ ] Category [ ]

SESS

FORM B. (Rural)

गोपनीय

डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ

कृपया इन्हें भरिये—

नाम .... आयु ....

ग्राम .... तहसील ....

जिला .... तारीख ....

पूरा पता ....

निर्देश

इस परिसूची में तुम्हारे परिवार के बारे में कुछ सूचनायें मांगी गयी हैं अतः तुम अपने माता/पिता, सबसे बड़े भाई/सबसे बड़ी बहिन के बारे में सही सूचनायें भरो। विश्वास रखो, कि तुम्हारे द्वारा दी गयी सूचनायें गुप्त रखी जायेंगी और किसी भी हालत में किसी को भी नहीं बताई जायेंगी। इस परिसूची में प्रत्येक प्रश्न के कई सम्भावित उत्तर दिये गए हैं— तुम इनमें से अपने परिवार के ऊपर लागू होने वाले उत्तरों को चुनो और उनके सामने बने गोलों में सही का (✓) का निशान लगा दो।

नेशनल साइकलॉजिकल कारपोरेशन

४/२३० कचहरी घाट, आगरा-२८२००४

१—आप क्या काम करते हैं ?

	माता	पिता	सबसे बड़ा भाई	सबसे बड़ी बहिन
(क) कोई काम नहीं करते	☐	☐	☐	☐
(ख) कृषि-मजदूर	☐	☐	☐	☐
(ग) पशुपालन, वन, मछली, शिकार व पौध लगाना आदि ।	☐	☐	☐	☐
(घ) छोटे-छोटे घरेलू काम	☐	☐	☐	☐
(य) घरेलू काम के अलावा अन्य प्रकार का सामान तैयार करना	☐	☐	☐	☐
(र) निर्माण	☐	☐	☐	☐
(ल) व्यापार एवं दुकानदारी	☐	☐	☐	☐
(व) यातायात, संग्रहण तथा संचार	☐	☐	☐	☐
(स) अन्य प्रकार के कार्य	☐	☐	☐	☐
(इ) खेती	☐	☐	☐	☐

२—आप किस जाति के हैं ? ☐ ☐ ☐ ☐

शूद्र ☐, वैश्य ☐ क्षत्री ☐, ब्राह्मण ☐

३—आप कितने पढ़े लिखे हैं ?

(क) बिल्कुल नहीं पढ़े	☐	☐	☐	☐
(ख) केवल पढ़ सकते हैं	☐	☐	☐	☐
(ग) पढ़ व लिख सकते हैं	☐	☐	☐	☐
(घ) प्राइमरी	☐	☐	☐	☐
(य) मिडिल	☐	☐	☐	☐
(र) हाईस्कूल	☐	☐	☐	☐
(ल) स्नातक	☐	☐	☐	☐
(व) स्नातकोत्तर	☐	☐	☐	☐

४—आप कितनी संस्थाओं के (राजनीतिक, सामाजिक, ग्रामीण, व सांस्कृतिक आदि) सदस्य हैं ?

(क) किसी के नहीं ☐
(ख) एक संस्था के ☐
(ग) एक से अधिक संस्था ☐
(घ) पदाधिकारी ☐
(य) बड़े सार्वजनिक नेता ☐

५—आपका कैसा घर है ?

(क) अपना घर नहीं है ☐
(ख) झोपड़ी ☐
(ग) कच्चा ☐
(घ) कच्चा-पक्का ☐
(य) पक्का ☐
(र) पक्का बड़ा ☐

६—आपके घर में क्या-क्या चीजें हैं ?

कैमरा ☐, घड़ी ☐, अलमारी ☐, साईकिल ☐, दीवार ☐, रेडियो ☐, कुर्सी मेज ☐, सिलाई मशीन ☐, स्टोव ☐, मोटर-साइकिल ☐, उन्नतशील कृषि यन्त्र ☐, बैलगाड़ी ☐, अन्य ☐, हाथी ☐, घोड़ा ☐, ऊँट ☐

७—आपके परिवार की औसत मासिक आमदनी कितनी है ?

(क) ५० रुपये से कम ☐
(ख) ५० से १०० रुपये के बीच ☐
(ग) १०१ व २०० रुपये के बीच ☐
(घ) २०१ व ३०० रुपये के बीच ☐
(य) ३०१ व ४०० के बीच ☐
(र) ४०१ व ५०० के बीच ☐
(ल) ५०१ व ७०० के बीच ☐
(व) ७०१ व १००० के बीच ☐
(स) १००० रुपये से ऊपर ☐

८—आपके पास कितनी जमीन है ?

(क) नहीं है ☐
(ख) १ बीघा से कम ☐
(ग) १ व ५ बीघा के बीच ☐
(घ) ६ व २० बीघा के बीच ☐
(य) २१ व ५० बीघा के बीच ☐
(र) ५१ व ७५ बीघा के बीच ☐
(ल) ७५ व १०० बीघा के बीच ☐
(व) १०० बीघा से ऊपर ☐

९—आपका परिवार कैसा है ?

(क) एकाकी ☐
(ख) संयुक्त ☐

१०—आपके परिवार के कितने सदस्य हैं ? ☐

(क) ३ या ३ से कम ☐
(ख) ३ व ५ के बीच ☐
(ग) ५ से ऊपर ☐

११—आपके पास कितने बच्चे हैं ?

(क) नहीं हैं ☐
(ख) केवल लड़कियाँ हैं ☐
(ग) लड़के व लड़कियाँ दोनों हैं ☐
(घ) केवल लड़के हैं ☐

१२—आपके घर में कितने जानवर हैं

(क) नहीं है ☐
(ख) २ से कम हैं ☐
(ग) ३ व ५ के बीच ☐
(घ) ५ से अधिक ☐

१३—आपके घर पर दूध देने वाले जानवर कितने हैं ?

	भैंस	गाय	बकरी
(क) नहीं है	☐	☐	☐
(ख) २ से कम	☐	☐	☐
(ग) २ व ३ के बीच	☐	☐	☐
(घ) ३ से अधिक	☐	☐	☐

१४—क्या आप—

(क) खुद खेती करते हैं। ☐
(ख) दूसरों से कराते हैं। ☐

१५—क्या आपको परिवार नियोजन में विश्वास है ?
हाँ □, नहीं □, अनिश्चित □

१६—क्या आपके घर पत्र-पत्रिकायें आती हैं ?
हाँ □, कभी-कभी □, नहीं □

१७—गाँव में कोई विशेष बात या घटना होने पर आपकी राय ली जाती है ।
नहीं □, कभी-कभी □ बहुधा □

१८—क्या आपके घर नौकर रहता है ?
हाँ □ नहीं □

१९—क्या आप कृषि के नये ढंगों, फसल की नई किस्मों आदि को एकदम स्वीकार कर लेते हैं ?

(क) हाँ □
(ख) अनिश्चित □
(ग) नहीं □

२०—आपके परिवार का कितना रुपया जमा है, उधार है या जरूरत पड़ने पर एकदम इकट्ठा कर सकते हैं ।

धन	जमा	उधार	एकदम जरूरत पड़ने कर इकट्ठा कर सकना
(क) ५० रु० से कम	□	□	□
(ख) ५० व १०० रु० के बीच	□	□	□
(ग) १०१ व २०० रु० के बीच	□	□	□
(घ) २०१ व ३०० रु० के बीच	□	□	□
(य) ३०१ व ४०० रु० के बीच	□	□	□
(र) ४०१ व ५०० रु० के बीच	□	□	□
(ल) ५०१ व ७०० रु० के बीच	□	□	□
(व) ७०१ व १००० रु० के बीच	□	□	□
(स) १००० रुपये से अधिक	□	□	□

Total Score = [ ] Category [ ]